जीवन-संघर्ष

जीवन-संघर्ष

जगदीश प्रसाद मंडल

ISBN : 978-93-80538-27-3

मूल्य: भा. रु. 50/-
पहिल संस्करण : 2010

श्रुति प्रकाशन रजिस्टर्ड ऑफिस: ८/२१, भूतल, न्यू राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली-११०००८.दूरभाष-(०११) २५८८९६५६-५८ फैक्स- (०११)२५८८९६५७
Website:http://www.shruti-publication.com
e-mail: shruti.publication@shruti-publication.com

Printed at: Ajay Arts, Delhi-11...2
टाइप सेट-उमेश मंडल
Distributor : Pallavi Distributors, Ward no- 6, Nirmali (Supaul),
मो.- 957245.4.5, 9931654742
Jeevan Sangharsh: A Maithili novel by sh. Jagdish Prasad Mandal

१

कातिकक अनहरिया। रौदियाह समए भेने जेठेक रौद जकाँ रौदो कड़गर होइत। तइपर सँ जनमारा उम्मस। जहिना छींच स्नानसँ देहपर पानिक टघार होइत तहिना पसेनासँ होइत। दस बजेक बाद बाध-बोन दिस आँखि नै उठाओल जाइत, तते झड़क। मुदा घरोमे चैन कहाँ? माथक पसेना नाकपर होइत टप-टप खसैत। देहक वस्त्रसँ गंध अबैत। औल-बौल करैत सबहक मन। आठमे दिन दियारी छी तहूमे काली-पूजा करैक विचार सेहो सौंसे गौआँ मिल कऽ लेलनि। दुनू अमबसिये दिन हएत। ओना अदौसँ दिवाली एक दिने पावनि होइत आएल अछि मुदा काली-पूजा धूम-धामसँ मनबैक विचार भेने, पाँचो दिन सभ अपन-अपन अंगनोमे दीप जरबैक विचार कए लेलनि। आठमे दिन पावनिक दिन तँए सात-दिनक पेसतरे घर-अंगनाक टाट-फड़क सरियौनाइ, छाउर-गोबरक ढेरी हटौनाइ, दुआर-दरबज्जासँ लऽ कऽ अपन-अपन घर लगक बाटकेँ छिलनाइ-बनौनाइ, कनिये काज अछि। तइपर सँ आन-आन गामसँ अबैत सड़को सभकेँ तँ अपना सीमान धरि मरम्मत करै पड़त किने। मुदा गुण अछि जे रौदी भेने खेत-पथारमे काज नै अिछ। जँ रहितै तँ सबहक लटैक जैतै। काली-पूजाक पैघ आयोजनक विचार अछि तँए काजोक भरमार अछिये। लोकक उत्साहे तेहन अछि जे कोढ़िलो बोझसँ हल्लुक बुझि रहल अछि। मालो-जालक भार सभ स्त्रीगणेपर छोड़ि देलनि। सभ किछु होइतो आ रहितो मुँहक चुहचुहीमे सेब-तड़क छन्हि। कारण धानक खेतीमे गामक किसान बँटा गेल छथि। ओना खेतक बुनाबटि सेहो तेहन अछि जे बँटाएब स्वाभाविके अछि। अधिक ऊँच, मध्यम ऊँच, नीच आ अधिक नीच रूपमे गामक खेत अछि। जइसँ पानि आ रौदक एक रंग असर नै होइत अछि। जेकर सद्य: प्रभाव उपजापर पड़िते अछि। गामक किसानो बटा गेल छथि। जनिका मध्यम आ ऊँच खेत छन्हि हुनका लेल गरमा धानक खेती उपयोगी छन्हि। मुदा जिनकर खेत नीच अधिक नीच छन्हि, जइमे शुरू बर्खासँ अगहन-पूस धरि

पानि जमल रहैत अछि ओइ खेतक लेल अगहनिये धानक खेती उपयोगी अछि। ओना वैचारिक भेद सेहो अछि। अखनो गरमा धानकेँ अशुद्ध बुझल जाइत अछि। जइसँ किछु गोटे विरोध स्वरूप कम उपजा खुशीसँ पबैत छथि।

आइ धरि बँसपुरामे ने कहियो कोनो होम-यज्ञ भेल आ ने कोनो तेहन दसगरदा उत्सवे। जइसँ परोपट्टाक लोक बँसपुराबलाकेँ अधरमी सेहो बुझै अछि। ओना गाम मेहनती किसान-बोनिहारक छी। गाममे एक्कोटा कम्पनीक एजेंट, चोर-डकैत, ठक-फुसियाह नै अछि। मुदा तँए की बँसपुराबला धर्मक काज नै करै छथि, वखूबी करै छथि। साले-साले महावीरजी स्थानमे अष्टयामक संग रामनवमी मनैबते छथि। समए नीक होउ आिक अधला मुदा उत्सवमे बाधा नै होइत, भलहिं नै पान तँ पानक डंटियोसँ काज चलिते अछि। तेकर अतिरिक्तो बेकता-बेकती भनडारा, अगहनमे जनार, आसीनमे सलहेसक पूजा इत्यादि करिते अछि।

रौदी सबहक मनकेँ हौंड़ रहल छन्हि। मुदा तैयो मनमे नव उत्साह जगले छन्हि। भिनसरसँ लऽ कऽ खाइ-पीबै राति धरि सभ पूजेक (काली पूजा) कोनो नै कोनो काजो करैत, नै तँ पूजेक जुति-भाँतिक विचारमे लागल रहै छथि। डिहवारो स्थानक चलती आिब गेल। स्थानक सौंसे आंगनकेँ चिक्कनि माटिसँ दुनू साँझ नीपलो जाइत अछि जे जनीजाति माने गामक पुतोहू आ ढेरबा बेटी-जाति सभ कमसँ कम पाँचटा उचिती-विनती सुनैबते छन्हि। कुमारि भोजन तँ पावनि दिन हएत। मुदा अनेको तरहक सुगंध अगरबतीक माध्यमसँ लगिते छन्हि। केना नै लगतनि? पहिले-पहिल गाममे पाँच दिनक मेला देलनि अिछ। रंग-विरंगक दोकानमे रंग-विरंगक वस्तुक बिकरी गाममे हएत। सभ अपन-अपन जिनगीक अनुरूप कीनबो करत। मेलाक प्रति लोकक मन एते उड़ि गेल अिछ जे ने आन काज आ ने आन गप करैत नीक लगै। घरक सोलहन्नी भार स्त्रीगणेपर पड़ि गेलनि। मुदा तरे-तर रोगक एकटा कीड़ी फड़ि

गेल। ओ कीड़ी ई जे खिस्सकरक चलती आबि गेल। सुनिनिहारक कमिये नै। बूढ़ि-बुढ़ानुससँ लऽ कऽ धिया-पूजा धरि। खिस्सकरो रंग-विरंगक, कियो कालीकेँ समैक गति बुझि बजैत तँ कियो महादेवक छातीपर पाएर देब कहैत। जहिना अपन खेत छोड़ि किसान वसंत पंचमी दिन एक्के परतीकेँ बेरा-बेरी जोतैत तहिना कालियोक चर्च करैत।

अदौसँ दिवाली एक दिना पावनि होइत आएल अिछ। मुदा एक लाटेमे गोधन पूजा, भरदुतिया, दवातक पूजा सेहो होइत आएल अछि। तइपर सँ पाँच दिनक काली पूजाक मेला सेहो हएत। गाममे गहगट मचि जाएत। बिना ब्लीचिंग पाउडर छिटने पेशावक गंध मेटाएत। दोहरी पूजा भेने जेहने सबहक मनमे खुशी होइत तेहने काजक तबाही सेहो। एक लखाइत दस-बारह दिन खटब असान नै। के बीमार पड़त, ककरा रद-दस्त हेतै तकर कोन ठेकान। तहूमे धिया-पूता अकड़-धकड़ खेबे करत। रोकने थोड़े मानत। तइपर सँ भरि राति नाचो-तमाशा देखबे करत। सोचिनिहार सभकेँ तरे-तर सोगो होइत। ततबे नै आरो सोग सभ एकाएकी मनमे अबैत जाइत। एक तँ ओहिना दिल्ली-कलकत्ता दुआरे भाए-वहिनक पावनि- भरदुतिया' रोगा गेल अछि तइपर सँ गामक मेला। जँ पूजाक हकारो देल जाएत तँ के एहेन अभागल हएत जे लक्ष्मी पूजा छोड़ि आओत। भलहिं उक पुरूखे फेड़त मुदा तम्मा तरमे दूबि-पाइ सिरा आगू तँ जनीजातिये रखै छथि। ओ पुरूख केना करताह। एहेन पावनि छोड़ब कते उचित हएत। मुदा गामक मेला सबहक मनकेँ बिरड़ोक झोंक जकाँ उड़बैत। तँए नीक-अधलापर नजरि ककरो टिकहि ने दैत। कातिकक जरैया बोखार आ पेट-झरीपर नजरि ककरो जेबे नै करैत। सभ उन्मत। सभ बेहाल। जहिना फगुआ दिन भाँग पीब गाममे नचैत अछि तहिना सभ घरसँ गाम-धरिक काजक पाछू नचैत। जहिना घरक ओलतीक पानि टधरि कऽ अंगनासँ निकलैत-निकलैत पानिक बेग बनि पोखरि पहुँच जाइत तहिना व्यक्ति ससरि कऽ समाजमे मिल रहल अछि।

गाममे काली-पूजा किएक हएत? जे एते दिन नै भेल ओ ऐ सालसँ किएक हएत? अनेरे खर्चाक उतड़ी गौआँ गरदनिमे पहिरए लेल किएक तैयार भऽ गेल? तेकर कारण ई अछि जे बँसपुरासँ कोसभरि सटले सिसौनीमे पच्चीसो बर्ख उपरेसँ दुर्गा-पूजा होइत अबैत अछि। चरि कोसीक लोक दुर्गा-पूजा देखए सिसौनी अबै छथि। गामेक नै आनो-आनो गामक स्त्रीगण दुर्गा-स्थानमे साँझो दियए अबै छथि। कुमारि भोजन सेहो करबै छथि। कबुलाक छागर सेहो चढ़बै छथि। बलि-प्रदानमे सिसौनीक जोड़ा जिलामे नै अछि। दुर्गा-पूजा होइसँ एक महीना पहिनेसँ बकरी पोसिनिहारक चलती आिब जाइत। तहूमे एकरंगापर तँ डाक-डकौबलि भऽ जाइत। ततबे नै, पाठ केनिहार सभ सेहो अभ्यास करए लगैत। गाममे दुर्गा-पूजाक समए परीक्षाक समए बनि जाइत। जे बेसीठाम सम्पूट पाठ केलनि ओ डिस्टिंग्सनक संग फस्ट डिवीजन घोषित होइत छथि। आमदनियो नीक आ डिपलोमो नमहर। केतबो कियो अभ्यास करथि मुदा छन्ठे पंडीजी फस्ट करताह, ई सबहक मन बीस सालक अनुभवसँ मानैत आएल छन्हि। हद छथि ओहो। एक तँ ओहिना तेज बोली छन्हि तइपर सँ तते स्पीडमे धड़ै छथि जे चौपाइक पहिल शब्द आ अंतिमो शब्द सुनि पाएब कि नै? ओना किछु होउ मुदा कीनुआ सर्टिफिकेट नै रखने छथि। मेहनत कऽ कऽ अनने छथि।

ऐ बेर सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे एकटा घटना घटल। घटना ई भेल जे बँसपुराक एकटा अट्ठारह-बीस बर्खक लड़की, जेकर पैछले साल वियाह भेल छलै आ तीनिये मास सासुर बसल छलि, कें पूजा कमिटीक तीन गोटे फुसला कऽ भंडार घर लऽ गेल। मेला-गनगनाइत। नाच-तमाशाक लाउड-स्पीकर चरि कोसीक नीन उड़ौने। तीनू गोटे ओइ लड़कीक संग दुरबेबहार केलक। बेबस भऽ ओ लड़की सभ किछु बरदास केलक। चारि बजे भोरमे ओकरा सभ छोड़ि देलक। मेला भरि ओ किछु नै बाजलि। मुँह-कान झाँपि मेलासँ निकलि सोझे गामक रास्ता धेलक। गामक सीमापर पहुँचते छाती चहकि गेलै। छाती चहकिते हबो-ढकार भऽ कानए लागलि। भिनसुरका कानब सुनि एक्के-दुइये

गामक लोक घर-आंगनसँ निकलि रास्तापर अिाब-अिाब देखए लगल। टोल प्रवेश करिते एका-एकी लोक पूछए लगलै। कानि-कानि अपन बीतल घटना सुनबए लागलि। बिना किछु पुछनै माए, बेटीकेँ कनैत देख, छाती पीट-पीट कनबो करै आ दुनू हाथे पँजिया कऽ पुछलक- ‘‘की भेलौ, हम माए छियौ, हमरा नै कहमे ते केकरा कहबीही।’’
जेना-जेना माए बेटीक मुँहक बात सुनैत तेना-तेना देहमे अिाग सुनगए लगलै। सुनैत-सुनैत बमकि कऽ पतिकेँ कहलक- ‘‘जहिना हमर बेटीक इज्जत सिसौनीबला लुटलक तहिना सिसौनीक दुर्गास्थानमे मनुक्खक बलि पड़त।’’
कहि घरमे राखल झोलाएल फौरसा निकालि, साड़ी समेट कऽ बान्हि सिसौनीबला सभकेँ गरियबैत विदा भेलि। काली रूप पत्नीकेँ सिसौनी दिस बढ़ैत देख पति तौनीक मुरेठा बान्हि हरोथिया लाठी नेने गारि पढ़ैत सेहो बढ़ल। बताहि जकाँ माए चिकड़ि-चिकड़ि गरियेबो करैत आ देवी-दुर्गा लगा-लगा सरापबो करए। जते डेग आगू मुँहे बढ़ै तते तामसो उपरे मुँहे चढ़ल जाइ। एम्हर भूमहुरक अिाग जकाँ तरे-तर गौआेंक करेजमे अिाग लहरि गेल। सभसँ पहिने सातो दियादी परिवारक पुरूष, स्त्रीगण सहित धियो-पूतो, जेकरा जएह सोझमे भेटलै, से सएह लऽ कऽ सिसौनीक रास्ता धेलक। दियाद-वादकेँ आगू बढ़ैत देख टोलोक आ जातियोक सभ विदा भेल। गाम दलमलित हुअए लगल। जेकरा जएह मनमे उठै से सएह जोर-जोरसँ बजैत सिसौनी दिसक रास्ता धेलक। बुद्धियार लोक सबहक मन दड़कए लगल जे दुनू गामक बीच खून-खराबी हेबे करत। एकरा कियो नै रोकि सकैत अछि। मुदा तैयो आगिमे जरैसँ रोकैक प्रयास करै दुआरे दौड़-दौड़ आगू बढ़ि रास्ता रोकलक। कियो बात मानैले तैयारे नै। दुनू परानी कुसुमलालकेँ माने लड़की माए-बापकेँ चारि-चारि गोटे पकिड़ कऽ रोकलक। कुसुमलाल तँ ठमकि गेल मुदा पवित्री मानैले तैयारे नै। चरि-चरि हाथ कुदि चारू गोटेक हाथ छोड़ा-छोड़ा आगू बढ़ि बजै- ‘‘सब दिनसँ पुरूख स्त्रीगणपर अतियाचार करैत आएल अछि आ अखनो करैत अछि। ऐ अतियाचारकेँ के रोकत? पुरूष-पुरूष सभ एक छी। जहिना गाएसँ गाए नै पाल खाइत तहिना पुरूख बुते पपियाह पुरूखकेँ सिखाओल नै हेतै।’’

जहिना भादबक बादलमे बिजलोको छिटकैत आ चारू भर अवाजो होइत तहिना हंसेरीक बीच रंग-विरंगक बात अकासमे उड़ए लगल-
“सिसौनीमे आिग लगा लंका जकाँ जरा देब।”
“इज्जत-आबरू लुटि, गाममे आिग लगा देब।”
“चौराहापर अपराधीकेँ आनि मुँहपर थूक फेक देहमे आिग लगा देब।”
“सिसौनीक बहू-बेटीकेँ पकड़ि लऽ आएब।”
क्रोधक चिनगारी उिड़-उड़ि फुलझाड़ी जकाँ अकासमे चमकए लगल। मुदा ई सभ विचार बेकता-बेकती होइत सामूहिक नै। ने कियो ककरो बात सुनैले तैयार आ ने अपन मुँह रोकै लेल। मुदा तैयो बुिद्धयार सभ रास्ता छोड़लनि नै। घरमे लागल आिग मिझबैमे हाथ-पाएर झड़ैकते छै।

गाममे सभसँ बेसी उमेरक मनधन बाबा। नब्बे माघक जाड़ कटने छथि। तै बीच अनेको झाँट, पाथर, शीतलहरी, बिहाड़ि, भूमकम देख-भोगि चुकल छथि। गामक लोककेँ एकमुहरी देख बाँसक फराठी नेने टुघरल-टुघरल सेहो पहुँचलाह। पाछुएसँ देखलखिन तँ मन मानि गेलनि जे सिसौनी आ बँसपुराक बीच मारि हेबे करत। ब्रह्माक बापो नै बँचा सकै छथि। केमहर के मरत, कतेक हाँड़-पाँजर टुटत तेकर कोनो ठेकान नै रहत। विचारैत-विचारैत दुनू आँखिसँ नोरक टघार चलए लगलनि। छहोंं-छीत छाती भऽ गेलनि। बुकौर लागि गेलनि। देहक हूबा टुटि गेलनि। बोम फाड़ि कनए लगलाह। गंगोत्रीक गंगा जकाँ दुनू आँखिसँ अनघोल करैत अश्रु अरड़ाहटि मारैत मुँहक बोल आ थर-थर कँपैत छातीसँ बेकाबू मनधन बाबा भऽ गेलाह। जहिना कोसीक धारक बीच मोइनमे पाछुक पानिक धारा आबि घुमए लगैत तहिना मनधनक विचार घुमए लगलनि। हूबा कए कऽ उठि आगू मुँहे ससरए लगलाह। आगू पहुँच रस्तापर फराठीसँ चेन्ह दैत पड़ि रहला। मन थिरे नै होइत। कखनो आँखिक सोझमे दू गामकेँ नष्ट होइत देखथि तँ कखनो पुस्त-पुस्ताइनकेँ दुश्मनी होइत देखथि। मन पड़लनि जूरशीतल पावनिक घटना। एकटा नढ़ियाक खातीर बेला

आ मैनही गामक शिकार खेलिनिहारक बीच मारि भेल। धमगज्जरि मारि। परिस्थितियो अनुकूले पड़लैक। पावनि मनबए सभ लाठी, सहत, तीर-धनुष लऽ लऽ शिकार खेलए गेले रहए। ने लोकक कमी आ ने मारि करैक वस्तुक। मुद्दो तेहने भारी, एकटा मुइल नढ़िया। मुदा प्रतिष्ठाक प्रश्न तँ गामक रहबे करै। अही प्रतिष्ठा लऽ कऽ कतेक लोकक कपार फुटल, कतेक हाथ-पाएर टूटल आ दुनू दिस एक-एकटा खूनो भेल। केयो ककरो देखैबला नै रहल। जे जत्ते से तत्ते कुहरैत। केकरा के उठा कऽ लऽ जाइत आ इलाज करबैत। हो न हो तहिना कहीं आइयो ने हुअए। मनमे उठलनि जे सभकेँ मनाही करी मुदा सुनत के। विचित्र स्थितमे मन ओनाए लगलनि। आँखि उठबथि तँ देखथिन जे जे स्त्रीगण सभ दिन सोझ मूड़ी खसबैत अिछ आइ ओहो सभ बताहि जकाँ साड़ीक भरकौंच बन्हने लाठी फड़का रहल अछि। सबहक मन मारियेपर टँगल अछि। केना उतड़त? मुदा तरे-तर खुशियो होइत रहनि जे नीक वस्तुक कीमतो बेसी होइत अछि। गुन-धुनमे फँसल मनधन बाबाक मन अपन दायित्वपर पड़लनि। मुदा ऐ हंसेरीक बोनमे दायित्वक मोजर के देत। मुदा तैयो एक भाग फराठीकेँ पकड़ि दोसर भाग उठा इशारासँ सभकेँ शान्त होइले कहलखिन। मुदा सभ अपने ताले, बेताल। गामक जत्ते कुकूड जतए रहै ओ बान्हक निच्चाँ खेते-खेत भूकैत आगू पहुँच गेल। छह मसिया बच्चा सभ चारि बेर भूकै आ कनी-काल सुसता लियए। मनधन बाबाक मनमे उठलनि जे बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेबहार सिसौनीबला लुच्चा सभ केलक ओ गामक इज्जतक संग जुड़ल सवाल अछि। इज्जतक लेल जान देब पुरूखक काज छी। एकरा अधलाह के कहत। सभकेँ अप्पन-अप्पन इज्जत-आबरू बनबैक लेल, बना कऽ निमाहैक लेल कटए-मरए पड़तैक। से जँ नै रहत तँ कखन केकर इज्जत के लुटि लेत तेकर कोन ठेकान अछि। भदबरिया बेंङ जकाँ साले-साल तत्ते लुच्चा-लम्पटक जन्म भऽ रहल अछि जे गामे-गाम सोहरल जाइत अछि। मुदा गामक भीतर तँ एहेन-एहेन किरदानी सदति काल होइते रहैत अछि। तहन कहाँ कियो किछु बजैत अछि। तै काल साला सभ कहत जे धु: छौड़ा-छौड़ीक खेल छी। दुनू बात

मनमे उठिते मुँहसँ हँसी निकललनि। मुदा गामक लोकक रूखि हँसीकेँ दाबि देलकनि। सोचए लगलाह जे एक्के रंगक काज लेल एकठाम लोक कटए-मरए चाहैत अछि आ दोसर ठाम धिया-पूताक माने छौड़ा-छौड़ीक खेल बना उड़बैत अछि। अजीब अछि लोकोक बुद्धि-विचार। जहिना सदति काल एक पुरूष दोसर महिलापर नजरि उठबैत रहैत अछि मुदा अपन पत्नीकेँ दोसरक संग बजैत देख आिग-बबूला भऽ किछुसँ किछु करैक लेल तैयार भऽ जाइत अछि तहिना ने अखनो भऽ रहल अछि। जै घटनाकेँ सामूहिक रूपे इज्जत बुझल जाइत अछि ओइ इज्जतिक रकछो तँ समूहेकेँ करए पड़तैक। जँ खेल बुझत तँ खेल जकाँ बुझऽ नै जँ इज्जत बुझत तँ इज्जत जकाँ सुरक्षित राखह। नै जँ गुल-गुल बुझि दुनू करत तँ इज्जत-आबरूक बात करब छोड़ि दिअ। मन सक्कत हुअए लगलनि। रस्तापर फराठी नोकसँ डाँढ़ि दैत कहलखिन- ‘‘ऐ डाँढ़िसँ जँ कियो एक्को डेग पाएर बढ़ेबऽ तँ एतै परान गमा देब। नै तँ अखन सभ शान्त भऽ जाह। नहाइयो-खाइ बेर भेल जाइत अछि। भानसो-भात सबहक बन्ने छह। तँए अखन जाइ जाह। खा-पी कऽ चारि बजे ब्रह्मस्थानक आगूमे बैस आगूक रास्ता बना लिहह।’’

मनधन बाबाक विचार सभ मानि घरमुँहा भेल। तत्खनात झंझट ठमकि गेल। मुदा मनक धधड़ा नै मिझाएल। जहिना चेराक धधकैत आगिमे पानि ढारलासँ धधड़ा पझा जाइत मुदा ताव रहबे करैत अछि तहिना लोकोक मनक आिगमे भेल। छोट-छोट टुकड़ी बनि सभ विदा भेल। मुदा रस्तामे सभ क्रोध बोकरिते रहए। सभकेँ डोरियाइत घर दिस जाइत देख मनधन बाबाक मन थीर भेलनि। घर दिस घुमिते मनमे उठलनि जे जखन गामक लोकमे एते आिग लगल अछि तखन दुनू परानी कुसुमलालकेँ कते लगल हेतै। से नै तँ ओकरा ऐठाम जा बोल-भरोस दऽ अबिऐक। अपन अंगनाक रास्ता छोड़ि मनधन बाबा कुसुमलालक ऐठाम पहुँचलाह। दुनू परानी कुसुमलाल दुखक अथाह समुद्रमे उगि-डूबि रहल अछि। दुनू निराश। आशाक कतौ दरस नै। दुनूक चेहराक रंग फिक्का। मनमे बेर-बेर उठैत जे बिनु इज्जतक जिनगी जीब नै जीब दुनू

बरावरि। दुनू बेकतीकेँ देख मनधन बाबा चुपचाप मेह जकाँ डेढ़ियापर ठाढ़। ने कुसुमलाल किछु बजैत आ ने बाबा। मनमे होनि जे कुसुमलाल हमरे सोलहन्नी दोखी बुझैत हएत। जहिना प्रेमक अंतिम सीढ़ी वियाह छी तहिना तँ क्रोधक खूनो छी। हो न हो कोनो उझट बात कहि दियए। फेर मनमे एलनि जे अएले तँ छी बोले-भरोस दइले। जीबठ बान्हि कहलखिन- ‘‘बौआ कुसुम, हमरा आगू तूँ बच्चा छह। तोरासँ बहुत बेसी ऐ दुनियाँकेँ चक्कर-भक्कर देखने छी। मनकेँ थीर करह। जे भऽ गेल ओ तँ नै घुमत। मुदा तइले की करी, कते करी, ई सभ बुझए पड़तह। एहेन तँ नै ने जे सभ कियो ओही लागल परान गमा देब। तूँ दुनू गोटे तँ बापे-माए छहुन। दुखी भेनाइ उचिते छह। मुदा आइ की देखलहक? देखलहक किने जे सगरे गामक लोककेँ असीम दुख भेल छै ई विचार मनसँ हटावह जे हम्मर इज्जत चलि गेल। गरीब लोकक सभसँ पैघ दुश्मन ओकर गरीबी छिऐ। गरीबी केबल अन्ने-पानि धरि नै होइत अछि जिनगीक सभ पहलुक लेल होइत अछि। गरीबीक बान्ह ओइ रूपे बन्हने अछि जइमे गारि-फज्झतिसँ लऽ कऽ धन-सम्पत्ति, माए-वहिनक इज्जत लुटै धरि अछि। तहन जँ कियो हँसी-खुशीसँ जीविये लैत अछि वएह एक लाख। गरीबीक ताला लोहोक तालासँ नमहर आ सक्कत अछि। लोहाक तालामे एक्केटा मुँह आ दाँत होइ छै जइमे कुन्जी घुमौलासँ भक दऽ खुजि जाइत अछि। मुदा गरीबीक जे ताला अछि ओइमे अनेको मुँह आ दाँत अछि। एकटा खोलबह दोसर लगि जेतह। सोझे लगबे टा नै करतह, पहिलुकासँ कते गुना कस-कसा कऽ लगि जेतह। तँए, जहिना कोनो आमक गाछ साले-साल रौद, बरखा, पानि-पाथर, बिहाड़ि जाड़ सहि नमहर भऽ फड़ैत अछि आ ओ फड़ मनुक्खसँ लऽ कऽ अनेको जीव-जन्तु धरि बिलहैत अछि तहिना मनुक्खोक जिनगी छी। जखने गरीब घरमे जन्म लेलह तखने बुझि जाहक जे आँखि देखैले नै कनैले अछि गारि सुनैले कान अछि आ मारि खाइले देह अछि। गरीबक आँखिमे जते इजोत बढ़ैत अछि तते नोरक समुद्र दिस जाइत अछि जत्ते समुद्रक लग पहुँचैत अछि ततै नोरक टघार अनवरतताक रूपमे बदलैत अछि जइसँ अनवरत टघरैत रहैत अछि तोहर दुख समाजक दुख बनि गेल

अछि समाज ओहन कारखाना छी जइमे देवतासँ लऽ कऽ छुतहर धरि बनैत अछि तँए, ने ककरो कहने ककरो इज्जत अबैत अछि आ ने जाइत अछि। लोककेँ अपने केने होइत अछि आ गमौने जाइत अछि''

मनधनबाबाक बात सुनैत-सुनैत पवित्री बोम फाड़ि कानए लगलीह हिचुकि-हिचुकि बजलीह- ''बाबा, ई तँ गामक मेह छथिन तँए हिनकर बात मानि लेलियनि। नै ते आइ सिसौनीमे आिग लगौने बिना नै छोड़ितिऐ। जखैनसँ बेटी आएल तखैनसँ एक्को बेर मुँह उठा नै तकैए। कनैत-कनैत दुनू आँखि डोका जकाँ भऽ गेलै। सदिखन एक्केटा रट लगेने अछि जे जीवियै कऽ की हएत? जखन इज्जत चलिये गेल तखैन कोन मुँह समाजकेँ देखाएब।''

पवित्रीक बात सुनि मनधन बाबाक हृदए छँहोछीत भऽ गेलनि। आँखिमे नोर ढबढ़बा गेलनि। दुनू हाथसँ आँखि पोछि बजलाह- ''कनियाँ, जकरा अहाँ इज्जत जाएब बुझै छिऐ ओ जाएब नै छी। जोर-जबरदस्ती छिऐ। जोर-जबरदस्ती मुँहक कहलासँ नै मेटाइ छै। ओकरा शक्तिसँ रोकल जाय पड़ैत छै। गरीबक बीच ओहन शक्ति अखन नै भेल अछि जखन हएत स्वत: रूकि जाएत। अखन जोर-जबरदस्ती केनिहार बलगर अछि तँए सुझि-बुझिसँ चलए पड़त। इलाकामे कोन गाम एहेन अछि जै गाममे एहेन-एहेन किरदानी नै होइत छै। सभसँ पहिने गरीबकेँ अपना पाएरपर ठाढ़ हुअ पड़तै। जखन ओ ठाढ़ भऽ संगठित हएत तखन शोषकक माने जबरदस्ती केनिहारक संग संघर्ष होएत। संघर्षोसँ समाज बदलैत अछि समाज बदलने सभ किछु बदलि जाइत अछि तँए कानू-खीजू नै। समाजक संग पाएरमे पाएर मिला कऽ चलू।''
कहि विदा भऽ गेलाह। घर दिसक वाट तँ मनधन बाबा धए लेलनि मुदा डेग उठबे ने करनि। तैयो बलजोरी बढ़लाह। फराठी हाथे कहुना-कहुना कऽ आिब गेलाह मुदा देहमे आिग लगल रहनि। जइसँ विचार ओझरा गेलनि। धरती-पहाड़क दूरी देख सोचथि जे कोनो आंगुर कटने अपने घाव हएत। भलहिं अखन ई घटना छौड़ा-छौड़ीक खेल बुझल जाइत छल आइ सही रास्तापर

अबए चाहैत अछि। तँए घटनाकेँ रोकब उचित नै हएत। पुन: मनमे उठलनि जे दू गामक बीचक घटना छी। एक गामक रहैत तँ कने हल्लुको रहैत मुदा दू गामक बीच एहेन घटनाकेँ कते नमहर मानल जाए। मुदा छोड़'बो तँ उचित नै। अदौसँ पहाड़ी धार जकाँ निच्चाँ मुँहे बहैत आएल अछि, जेकरा रोक'बो जरूरी अछि। जँ से नै हएत तँ वैश्वीकरणक बिरड़ोमे उड़ि कऽ अकास ठेक जाएत। मुदा जै रूपे घटनाक जबाब बढ़ए चाहैत अछि ओ तँ आरो बिनाशक अछि। जहिना ऐ गामक लोक सामाजिक प्रतिष्ठा बना कटै-मरैले तैयार अछि तहिना जँ कहीं ओहो (सिसौनीबला) सभ गामक प्रतिष्ठा बुझि ठाढ़ भऽ जाए, तहन की हएत? ठाढ़ो होइक कते कारण भऽ सकैत अछि। ओना सार्वजनिक स्थानक घटना होइतो गाम अिब लड़की बाजलि। जेकरा गौआँ मानि रहल अछि। मुदा सही घटना रहितो सिसौनीबला मानिये लेत सेहो जरूरी नै अछि। एक गाम दोसर गामपर बलजोरी कते काल कऽ सकैत अछि? कोनो बाटे नै सुझनि। दू गामक बीच तँ विचारेसँ रोकल जा सकैत अछि। मुदा जँ एहेन घटना रोकल नै जाएत तँ सार्वजनिक स्थानक महत्वे कते दिन टिकत। भुँइयेँमे दलानक ओसारपर कर बदलिते मनमे एलनि जे एहेन घटना सामाजिक स्तरपर रोकब नीक हएत। मन असथिर भेलनि। बेरूका बैसारमे जाइ कि नै? मुदा बाजल तँ हमहीं छी। फेर मनमे एलनि जे चारि बजे सौंसे गौआँकेँ बैस कऽ विचार करैले कहलिऐ आिक ई कहलिऐ जे तोरा सभकेँ विचार सुना देबह। दस मिल करी काज, हारने-जीतने कोनो ने लाज। पाकल आम भेलौं, कखन छी कखन नै छी। इहो कोनो जरूरी नै अछि जे हम्मर विचार सभकेँ सोहेबे करै। जँ नै सोहेतै तहन तँ ओरो मनमे दुख हएत। तहूमे मूलत: ई घटना महिलाक छी। जे पुरूष हजारो बर्खसँ एहेन अपराध करैत आएल अछि ओ सुहरदे मुँहे मानि लेत। आन गामक घटना कहीं गामे दिस ने चलि अबए। अखनो धरि समाजमे एहेन किरदानीकेँ लोक हँसिये-चौल बुझैत अछि। फेर मनमे उठलनि, अपनो तँ आब बलजोरिये जीब रहल छी नै तँ अपन बतारी काएटा गाममे अछि। तँए की समाजसँ हटि जाइ? हटब तँ मुइलाक बाद, डाहैले के आओत? से देखबो करैले तँ नै आएब। अपनो परिवारमे देखै छी

जे सिनेमा कलाकार आ खेलाड़ी सबहक कुल-खुटक नाओं जनैत अछि आ अपना कुल-खुटक जनिते ने अछि। एहेन तँ गड़िबहू गाम अछि। ककरा कहबै, स्त्रीगणो सभ तेहन-तेहन आिब गेल अछि जे पुरूख सभकेँ गारि पढ़ि-पढ़ि कहैत अछि जेहने छुतहर कुल-खुट रहतह तेहने ने चालि रहतह। आब कहू जे कुल-खुटक केना दोख छै। नान्हि-नान्हिटा छौड़ा शिखर-पराग खाए लगल अछि, ऐमे ककर दोख। जीवैमे एहेन-एहेन लीला देखै छी आ परोछ भेलापर हीरा सजाओल मंदिर बना देत। तै बीच पोती आिब कऽ कहलकनि- ''खाइले चलू ने बाबा? नहेबै नै?''
केचुआएल साँप जकाँ बाबा कहलखिन- ''चलै-फीड़ैक होश नै अछि अहीठाम नेने आबह। पहिने एक लोटा पानि नेने आबह। कने मुँह-हाथ धोइ लेब।''

जहिना गदगरल मन रहने खाइक इच्छा नै होइत तहिना मनधनोकेँ बुझि पड़नि। मुदा तैयो जी-जाँति कऽ खाए लगलाह। लाभर-जीभर चारि कौर खाऽ लोटो भरि पानि पीब बजलाह- ''अन्न नै धसैत अछि। लऽ जाह।''
हाथ मुँह धोइ चौकीपर ओंधरा गेला। मुदा जहिना ज्वर-एलासँ कछमछी अबैत अछि तहिना चौकीपर एक करसँ दोसर कर घुमथि। बेर टगल देख उठि कऽ फराठी हाथे ब्रहमस्थान दिस बिदा भेलाह।

तीनिये बजेसँ एका-एकी लोक ब्रह्मस्थान पहुँचए लगल। चारि बजेसँ पहिनहि गामक लोक एकत्रित भऽ गेल। मुदा एकटा नव घटना सेहो भेल। ओ ई भेल जे जै गाममे आइ धरि कोनो पनचैती वा सार्वजनिक काजमे महिला भाग नै लैत अबै छलि ओ घरा-घरी सभ पहुँच गेलीह। ओना आइ धरि हुनका सभकेँ कहलो नै जाइत छलनि। मुदा जखन सबहक बीच माने पुरूष-महिलाक बीच समए निर्धारित भेल तखन हुनको माने महलो सभकेँ हौसला जगलनि। हौसला जगिते टाट-फड़कक परदा तोड़ि घरसँ निकलि तीत-मीठक सुआद लैले निकललीह। अखन धरि जे बुद्धि-विचारक गाछ माटिक तर बीज रूपमे पड़ल छलनि ओ एकाएक अकुर गेलनि। नजिर नचलनि तँ देखलनि जे अदौसँ आइ

धरि महिला पुरूखक चारागाह छोड़ि आरो किछु नै रहलीह। जबकि बुद्धि-विवेक आ हाथ-पाएर तँ सभकेँ छन्हि। केवल नीन तोडि जगैक जरूरत अछि। चरैत-चरैत पुरूख महिलाक सम्पूर्ण जिनगीकेँ, पाण्डु रोगी जकाँ निरस बना देने छथि। वियाहसँ पूर्व शिक्षा-विहीन बच्चा जिनगी आ वियाहक पाँचे दिन उपरान्त समाजक कलंकित विधवाक जिनगी। जहिना सामूहिक हत्याराकेँ जहलमे यातना भेटैत तहिना महिलाक संग भेल अछि। मुदा आइ बँसपुरामे नव सूर्यक उदय भेल।

बैसारमे पुरूख-नारी तँ पहुँचलीह मुदा एक संग नै बैस फुट-फुट बैसलीह। एक भाग पुरूष आ दोसर भाग महिला। बिना अनुशासक बैसार तँए दुनू बैसारमे सभ अपन-अपन पेटक बात बोकरए लगल जइसँ दुनू दिस अनधोल हुअ लगल। कियो ककरो बात सुनैले तैयार नै। सभ अपने बजैमे बेहाल। मुदा पेटक बात सठिते सभ पोखरिक पानि जकाँ शान्त भऽ गेल। कातमे बैसल मनधन बाबा समाजक रूखि चुपचाप भऽ अँकैत रहथि। सभकेँ चानिपर पसेनाक टघार देखथि। जइसँ बुझि पड़लनि जे भीतरक गरमी निकलि रहल छन्हि। समस्याकेँ दू ढंगसँ समाधान करब सोचि उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलखिन- ‘‘अनकर घेघ देखैसँ पहिने अपन देखू। जँ से नै देखब तँ ओहन दशा हएत जेहन हँसि कऽ बजलासँ गंभीर विचारकेँ होएत। सभसँ जरूरी अछि गामक बीच जे एहेन-एहेन कुचालि सभ चलि रहल अछि ओकरा बन्न करए पड़त। जँ से नै करब तँ आइ ओहन लकड़ीमे आिग धऽ लेलक जे एक गामक कोन बात जे सइयो गामकेँ जराओत। औझका सूमा जे देख रहल छी ओ पुरूखसँ कम महिलामे नै अछि। तँए दू बैसारकेँ एक बनाउ।’’

एक बैसार सुनि दुनू दिस गल्ल-गुल्ल शुरू भेल। दू तरहक विचार दुनू दिस टकराए लगल। टकराहटि देख कते पुरूख उठि कऽ विदा हुअ लगलथि। मुदा बाबाक बात महिला सभ मानि अपन बैसार उसारि पुरूखेक बैसारमे बैस

चिकड़ि-चिकड़ि बाजए लगलीह- ‘‘अहाँक पीठपर हम सभ तैयार छी बाबा, उठि कऽ नर्णए दियौ।’’

महिलाक आवाज सुनि बाबाकेँ भेलनि जे ई आवाज शरीरक नै शरीरीक (आत्मा) छी। हृदेसँ एकरा सभ कल्याण चाहि रहल छथि। एकरा रोकब तँ असंभव अछि मुदा मोड़ल जा सकैत अछि। एक तँ बुढाढी दोसर मनमे आिग लगल, मनधन बाबा थर-थर कपैत फराठी बले उठि कऽ ठाढ़ होइत कहलखिन- ‘‘बाउ, हमरा आगू सभ बच्चे छह। जहन बच्चा बौआ आ बुच्ची बनैत तहियेसँ दूजा-भाव शुरू भऽ जाइत अछि। मुदा हम सभकेँ बच्चे बुझै छिअ तँए कहै छिअ जे अपन कल्याणक बाट सभ पकड़ि चलह। अखन जै घटना माने समस्या दुआरे सभ एकत्रिक भेल छी ओ दू गोटेक बीचक नै दू समाजक बीचक छी। दू गोटेक बीचक जँ रहैत तँ ओकरा छोट मानल जाइत मुदा दू गामक समस्याकेँ छोट मानब गलत आँकव होएत। ई ओहन अछि जे एकसँ अनेक रूपमे पसरि जाएत। जहिना तूँ सभ कहै छहक जे सिसौनीमे आिग लगादेब-मारब-बेइज्जत करब तहिना तँ ओहो सभ करतह। तहूँ सभ मारबहक ओहो सभ मारतह। तहूँ कपार फोड़बहक ओहो सभ फोड़तह। अखैन ने बुझि पड़ै छह जे सोलहन्नी हमहीं सभ मारबै आ ओ सभ मारि खाएत। मुदा से कतौ देखलहकहेँ। दुनू दिसक लोक मारबो करैए आ मारियो खाइए।’’

मनधन बाबाक विचार सुनि सभ मूड़ी डोला-डोला सोचए लगल। एक दोसर दिस तकबो करैत। सबहक मनमे मारिक गंभीरता नचए लगल। मुदा तैयो मनक गरमी पूर्ण शान्त नै भेलै। विचार गजपटाए लगलै। कखनो शान्तीक रास्ता मनमे जोर पकड़ै तँ लगले उनटि कऽ मारि-दंगाक रास्ता पकड़ि लै। जे चढ़ैत-उतड़ैत विचार मुँहक रूखिसँ साफ बुझि पड़ै। लोकक रूखि देख बाबा कहए लगलखिन- ‘‘गामेमे की देखै छहक? जे कने हुबगर अछि ओ मुँहदुबराक संग केहेन बेबहार करैए। भलहिं अप्पन जातिये, दियादे किएक ने

होय। भीतरसँ अप्पन गाम फोंक छह। देखते छहक जे सभ अपन-अपन नून-रोटीमे दिन-राति लगल रहैत अछि। ने अपना पेटसँ छुट्टी होइ छै आ ने दोसराक आिक समाजक कोनो चिन्ता रहै छै। समाज की छिऐ से लोक बुझबे ने करैत अछि। अपने पेटक खातिर बेइमानी-शैतानी, चोरी-डकैती सभ करैत अछि। सभ मिल समाजकेँ परिवार जकाँ ठाढ़ कए काज करी, से ककरो मनमे छैहे नै। ओना सिसौनियो सएह अछि मुदा तैयो तँ अपना गामसँ कने निस्सन अछि। कमसँ कम तँ सभ मिल दुर्गा-पूजा तँ कइये लैत अछि जखने दस-पनरह दिन सभ एकठाम भऽ एक काजक पाछू लगैत अछि, तखने ने अपनामे गप-सप्प भेने साल भरिक छोट-छोट झगड़ा मेटाइत अछि। तँए समाजकेँ आगू बढ़बैक लेल दसगरदा काज जरूरी अछि। जाधरि लोकक मनमे दसनामा काजक प्रति झुकाव नै हेतै ताधरि समाज आगू मुँहे केना ससरत? ऐ नजरिसँ देखबहक तँ बुझि पड़तह जे अपना गामसँ थोड़े आगू सिसौनी बढ़ल अछि। सिसौनियोसँ आगू पछबारि गाम बरहरबा अछि। देखते छहक जे ओइ गाममे दुर्गो-पूजा होइत अछि आ पढ़ै-लिखैले हाइयो स्कूल अछि। बरहरबोसँ अगुआएल दछिनबरिया गाम कटहरबा अछि। ओइ गाममे हाइयो स्कूल अछि, अस्पतालो अछि आ सालमे एक-बेर सभ मिल चारि दिनक मेला कालियो-पूजामे लगा लैत अछि। जै गाममे जते सार्वजनिक काज हएत ओ गाम ओते तेजीसँ आगू बढ़त। गाम अगुआइक माने संस्थे बनि जाएब आ पूजे हएब नै बल्कि आचार-विचार-बेबहार-चालि-ढालि सभ किछु बदलब होइत। जाधरि कोनो गाम पछुआएल रहैत अछि ताधरि ओइ गाममे सदिखन राँड़ी-बेटखौकी, मारि-मरौबलि, हल्ला-फसाद होइते रहैत अछि। जाधरि लोक झूठ-फूसि, छोट-छीन बात लऽ कऽ लड़ैत-झगड़ैत रहत ताधरि ओकरा समैक कोनो मोल नै हएत। जखने मूल्यहीन जिनगी चलैत रहत तखने श्रमक कोनो महत्व नै रहत। जे श्रम सार छी, मनुष्यक पूजी छी ओ धूरा जकाँ उड़ैत रहत। भाग्य-तकदीर बनौनिहार चानी कटैत रहत। जइसँ लोकक कमाइ आँखिकेँ सदतिकाल नोर दबने रहत ओ दुनियाँकेँ केना देख सकत?''

मनधन बाबा बजिते रहथि कि सुनिनिहारक बीच गल-गुल शुरू भेल। लोकक गल-गुलसँ मनधन बाबाकेँ दुख नै भेलनि, खुशिये भेलनि। मनमे उठलनि जे भरिसक लोकक परती बुद्धिमे जोत-कोर भऽ रहल छै। नजरि खिरा-खिरा मरदो दिस आ जनीजातियो दिस देखए लगलथि। बैसले-बैसल जोगिनदर जोरसँ बाजल- ‘‘दुर्गा-पूजा तँ आब पौरूकाँ हएत मुदा कालीपूजा तँ लगिचाएल अछि। तँए हम सभ आइये संकल्प लऽ ली जे हमहूँ सभ काली-पूजा गाममे करब।’’
जोगिनदरक बातपर सभ थोपड़ी बजा समर्थन दऽ देलक। अही प्रतिक्रियाक फल थिक गाममे काली-पूजा।

ओना रौदियाह समए भेने गामक किसानो आ बोनिहारोक दशा दयनीय मुदा सिसौनीक घटना तेना उत्साहित कऽ देलक जे सभ बिसरि गेल। उत्साहित भऽ बोनिहारो सभ एकावन-एकावन रूपैया चंदाक घोषणा कऽ देलक। बोनिहारक उत्साह किसानकेँ झकझोड़ि देलक। प्रतिष्ठाक प्रश्न सामनेमे उठि गेलै। तइपर सँ परदेशिया आरो रंग चढ़ा देलक। एक दुखकेँ दबैक लेल अनेको दवाइ आ पथ्य सामने आिब गेलै। समाजक संग मिल चलैक अछि तँए व्यक्तिगत दुखकेँ दबै पड़त। सार्वजनिक काजमे पाछुओ हटब उचित नै। गामक बहू-बेटी आन गाम मेला देखए जाइत ओइ प्रतिष्ठाकेँ प्राप्त करब। सभसँ पैघ बात बदला लेबाक रास्ता बनि रहल अछि। हमरा गामक लोककेँ जँ आन गामक लोक बेइज्जत करत तँ ओहू गामक लोककेँ हमसभ करबै। जइसँ आन गामक बराबरीमे अपनो गाम आओत। उत्साहित भऽ प्रेमलाल उठि कऽ ठाढ़ भऽ जोर-जोरसँ बजए लगल- ‘‘भाय लोकनि, अपना गामक भाए-वहिन आन गामक मेलामे जा बेइज्जत होइत अछि। एकर की कारण छै? कारण छै जे अपना गाममे कोनो तेहेन सार्वजनिक काजे ने होइत अछि। जखने अपनो सभ तेहन काज करब तँ अनेरे आन गामबलाकेँ दहसति हेतै। वएह दहसति गामकेँ उजागर करत, प्रतिष्ठित बनाओत। गोसाँइ जी रामायणमे कहने छथि- ‘‘बिनु भय होहि न प्रीति।’’

प्रेमलालक मुँह तँ बन्न भऽ गेलै मुदा बजैले मन लुसफुसाइते रहए। आगूक बात मनमे एबे नै करै आ बजले बात दोहरौनाइ उचित नै बुझि, बैस रहल। प्रेमलालकेँ बैसते फेर गल-गुल हुअ लगल। गल-गुल एते बढ़ि गेलै जे जहिना सौजनियाँ भोजमे होइत तहिना। गल-गुल देख अनुप उठि कऽ हाथक इशारासँ शान्त करैत गरमा कऽ बाजल- ‘‘देखू, गल-गुल केने किछ ने हएत। सिसौनीबला सभकेँ एते गरमी किएए चढ़ल रहै छै से बुझै छिऐ। ओ सभ दस हजार रूपिया खर्च कऽ कऽ दुर्गा-पूजा कए लैत अछि, तँए। ओकरा सबहक गरमी हेट करैक अिछ। तँए हम सभ पचास हजार रूपिया काली-पूजामे खर्च करब। जँ सबैया-ड्यौढ़ा खर्च कऽ पूजा करब तँ ओ सभ मद्दियो ने देत। तँए समधानि कऽ हरदा बजबैक अछि। अखने पूजा कमिटी बना लिअ। ओना अखन बीस-बाइस दिन काली-पूजाक अछि। मुदा अखनेसँ गामसँ आन गाम धरि माहौल बनबैक अछि। पूजा समितिमे सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य बनाउ। जँ सभ टोल आ सभ जातिक सदस्य नै बनाएब तँ अनेरे अखनेसँ अनोन-विसनोन शुरू भऽ जाएत। ततबे नै सभ जातिक सदस्य बनौने काजो असान हएत। सभ अपन-अपन लूरि-वुद्धिसँ सहयोग करत।’’

अनुपक विचारसँ सभ सहमति भेलाह। समिति बनए लगल। सभ मिला एक्केस गोटेक समिति बनल जइमे पाँच महिला। एक्कैसो गोटे उठि कऽ ठाढ़ भेलाह तँ एक दिव्य स्वरूप चमकल। सभ नौजवान। एक्कैसोक मनमे खुशी जे सामाजिक क्षेत्रमे आगू बढ़ि रहल छी। समितिक सदस्य एक भाग आ गौआँ दोसर भागमे बैस विचार आगू बढ़ौलनि। समितिक संचालनक लेल पदाधिकारीक जरूरत होइत। कमसँ कम अध्यक्ष, उपाध्यक्ष आ कोषाध्यक्षक जरूरत हेबे करैत। मुदा अध्यक्ष के बनत? गंभीर प्रश्न। सभ सबहक मुँह देखए लगलाह।
ककरो अनुभव नै। ओना समितिक अधिकांश सदस्यकेँ अध्यक्ष बनैक इच्छा मुदा अनुभव नै रहने डरो होइत। सभकेँ चुप देख रघुनाथ अपन पितियौत भाय देवनाथकेँ अध्यक्षक लेल प्रस्ताव केलक। देवनाथक परिवार जातियो आ

पूँजीयोमे गाममे सभसँ बीस। देवनाथक नाओं सुनि अधिकांश सदस्य धकमकाए लगल। दोसर गोटेक नाओं नै सुनि मंगल अपन नाओंक प्रस्ताव विरोधमे अपने केलक। दू गोटेक नाओं अबिते बैसारमे गुन-गुनी शुरू भेल। धनो आ जातियोमे मंगल देवनाथसँ पछुआएल। मुदा जेहने बजैमे फड़कोर तेहने इमानदार। बी.ए. पास सेहो। जे सभ बुझैत।

देवनाथ आ मंगल संगे-संग बी.ए. पास केने रहए। ओना पढ़ैमे मंगल चन्सगर मुदा रिजल्ट देवनाथक नीक रहए। तेकर कारण रहै जे देवनाथ धुड़फन्दा शुरूहेसँ रहए। मंगलक नाओं सुनि देवनाथो आ रघुनाथो आँखिक इशारासँ गप-सप्प करए लगल। कनिये खानक पछाति मंगलकेँ पलौसी दैत रघुनाथ बाजल- ‘‘भैया, हमरा लिए जेहने आहाँ तेहने भैया छथि। अहूँ दुनू गोटे संगिये छी। आग्रह करब जे देवनाथ भैयाकेँ अध्यक्ष आ अहाँ उपाध्यक्ष बनि काज कएल जाउ।’’

मंगलक मनमे केवल पूजे समिति चलाएब नै समाजकेँ आगू बढ़बैक विचार सेहो। बच्चेसँ देवनाथक चालि-ढालि मंगल देखैत आएल। मुदा समाज तँ पोखरिक पानि सदृश्य होइत अछि। हवा-बिहाड़िमे लहरि सेहो उठैत मुदा लगले असथिर भऽ शान्त सेहो भऽ जाइत अछि। मंगलक मनमे देवनाथक प्रति एकटा आरो बात घुरियाइत। ओ ई जे एक दिन करीब चारि साल पहिने एकटा गामेक लड़कीक संग छेड़खानी करैत देवनाथकेँ मंगल पकड़ने रहए। हाटसँ अबैत मंगलकेँ देख ओ फफकि-फफकि कानए लागलि। साइकिल ठाढ़ कऽ सभ बात सुनलक। तामसे बेकाबू भऽ गेल। देवनाथकेँ बिनु किछु पुछनहि चारि-पाँच चाट मुँहमे लगा देलक। क्रोधो कमलै। मुदा डरसँ देवनाथ थर-थर कपैत रहए। मंगल दवनाथकेँ कहलक- ‘‘बच्चा, अखन धरिक संगी छलै तँए छोड़ि दै छियौ। नै तँ समाजक बेटीक संग एहेन बेवहार करैबलाकेँ जिनगी भरिक पाठ पढ़ा दैतिऐ।’’

दुनू हाथ जोड़ि देवनाथ, न्यायालयक अपराधी जकाँ आगूमे ठाढ़ रहए। विचित्र स्थितमे मंगल उलझि गेल। मनमे क्रोध आ दयाक बीच घिच्चम-घिच्चा हुअ लगलै। कखनो दया दिस मन ससरैत तँ लगले क्रोध दिस बढ़ि जाय। मनकेँ असथिर करैत कहलक- "अखन धरिक संगी होइक नाते छोड़ि रहल छियौ। नै.... तँ......। कान पकड़ि कऽ बाज जे एहेन गलती फेर ककरो संग नै करब? जाधरि कोनो लड़कीकेँ वियाह-दुरागमन नै होइत ताधरि माए-बापक सन्तान बुझल जाइत मुदा सासुर जाइते गामवाली माने गामक बेटी बनि जाइत अछि।"

यएह बात मंगलक मनमे घुरियाइत रहए।

रघुनाथक बात सुनि मंगल जबाब देलक- "बौआ रघू, दसगरदा काजक शुरूआत गाममे भऽ रहल अछि। मुदा समाज तँ टुकड़ी-टुकड़ी भऽ छिड़िआएल अछि। तँए जरूरत अछि जे एक-एक टुकड़ीकेँ ओरिया-ओरिया पकड़ि दोसरमे सटबैक अछि। से जाधरि नै हएत ताधरि कोनो सार्वजनिक काज सफल हएब संदिग्ध बनल रहत। खंडित भऽ जाएत। देखते छिऐ जे कोनो भोज होइ छै ते दस कोस-पनरह कोससँ पंच आिब-आबि खाइत अछि मुदा भोजैतक घर लगहक परिवार भुखले रहैत अछि। एहेन अन्यायी समाजमे न्याय कहिया आओत। के आनत? अखन जे सामाजिक ढाँचा बनि ठाढ़ अछि ओ गँड़ि-मुड़ाह अछि। जहिना कोनो बोझ गँड़ि-मुराह भेने कखन माथपर सँ खसि छिड़िया जाएत, तेकर कोनो ठेकान नै, तहिना समाजोक अछि। तँए बोझे जकाँ समतुल्यपर बान्ह पड़ैक चाही। जइसँ कहियो छिड़िएबाक शंका नै रहत। दसनामा काजमे समाजक बच्चा-बच्चाकेँ बराबरीक हिस्सा भेटक चाहिये। मुइल-टूटल कियो किएक ने हुअ मुदा ओकरा मनसँ ई विचार निकलि जेबाक चाहिये जे ई काज हमर नै फल्लांक छिऐ। हम सोझे करैबला छी करबैबला नै। ककरो बाप-पुरखा हर जोतैत आएल अछि, अखनो जोतैत अछि आ आगुओ जोतैत रहत। जँ से नै जोतत तँ खेती केना हएत? मुदा ओहो समाजक ओहने अंग छी जहिना पढ़ि-लिख कियो करैत अछि। अखन

गामक सभ बैसल छी तँए पूजा-प्रकरणक सभ निर्णए सबहक बीच भऽ जाए। सिसौनीमे अखनो देखै छी जे दुर्गास्थानमे सबहक पहुँच नै अछि।''

मंगलक बात सुनि सभ स्तब्ध भऽ गेलाह। मनमे उठा-पटक हुअ लगलनि। ओना बहुतोक बुद्धिमे सभ बात अँटबो ने कएल मुदा जतबे अँटल ओ आिगक लुत्ती जकाँ चमकए लगल। व्यवहारिक जिनगी आ वास्तविक जिनगीक दुरी बहुत बेसी भऽ गेल अछि। व्यवहारिक जिनगीकेँ वास्तविक जिनगी दिस झुकौने चलए पड़त। जँ से नै हएत तँ सदिखन चलैक रास्ता गजपट होइत रहत। परोछमे उचित बात बजनिहारक कमी नै मुदा सोझा-सोझी बजनिहार कियो नै। तेकरो कतेक कारण छै। गुन-गुन, फुस-फुस होइत देख मंगल बुझि गेल। मनमे उठलै बुद्धदेवक ओ बात जइमे कहने छथि जे वीणक तारकेँ ओते नै कड़ा कऽ दिऐ जे टुटि जाए। आ ने ओते ढील रहए दिऐ जे अबाजे नै निकलै। मंगल बाजल- ''अध्यक्ष पदसँ हम अपन ना आपस लै छी। देवनाथे अध्यक्ष होथि। मुदा अखनसँ लऽ कऽ जाधरि पूजाक प्रकरण चलैत रहत ताधरि सभ काजक निर्णए समितिक बीच हुअ।''

मंगलक बात सुनि देवनाथ ठाढ़ भऽ बाजल- ''जिनगीमे पहिल-पहिल दिन समाजक काज करैक मौका भेट रहल अछि तँए मनमे असीम खुशी अछि। सभ तँ अनाड़िये छी, जइसँ बिनु बुझलो कतेक गलती भऽ सकैत अछि। मुदा ओइ सभकेँ भुल-चुक मानि सम्हारैक उपाए हेबाक चाही। अखन सभ कियो छी तँ मुख्य-मुख्य काजक निर्णए अखने भऽ जाए। ओना अखन दिनगर अछि मुदा सबहक नजरिमे रहब बढ़ियाँ रहत।''

देवनाथक विचार सुनि सबहक मुँहसँ निकलल- ''बहुत बढ़ियाँ, बहुत बढ़ियाँ।'' कहि समर्थन देलक।
निर्णए भेल-

(१) गामेक कारीगर माने मुर्ति बनौनिहार मुरती बनाबे। ओना एकपर एक कारीगर दुनियाँमे अछि मुदा पूजाक मुरतीमे कला नै देवी-देवताक स्वरूप देखल जाइत अछि। दोसर जँ हम अपन बनाओ मूर्तिकेँ अपने अधलाह कहब तँ गामक कलाकार आगू केना ससरत। तँए जे गामक कला अछि ओकरा सभ मिल प्रोत्साहित करी।

(२) काली मंडप गामेक घरहटिया बनबथि। जिनका घर बनबैक लूरि छन्हि ओ मंडप किएक नै बना सकै छथि। संगे इहो हएत जे गामक अधिकसँ अधिक लोकक सहयोग सेहो होएत।

(३) मनोरंजनक लेल गामोक कलाकारकेँ अवसर भेटनि। संगे बाहरोक ओहन-ओहन तमाशा आनल जाए जेहन ऐ परोपट्टामे नै आएल हुअए।

(४) पूजाक लेल, परम्परासँ अबैत ओहनो पुजेगरीकेँ अवसर भेटनि जे पूजाक प्रेमी छथि।

(५) गामक जते गोटे काज करथि ओइमे नीक केनिहारकेँ पुरस्कृत आ अधला केनिहारकेँ आगू मौका नै देल जाइन।

पाँचो निर्णए सर्वसम्मतिसँ भऽ गेल। बैसार उसरि गेल।

खाए-पीब कऽ मंगल सुतैले बिछान बिछबैत रहए। रातिक एगारह बजैत। सतरंजी बिछा दुनू हाथे जाजीम झाड़लक। तै बीच जोगिनदर मंगलसँ भेँट करए आएल । जाजीमक अवाज सुनि जोगिनदर घबड़ा गेल। मनमे भेलै जे किम्हरौ थ्री-नट्टा ने तँ चलल। हियासि-हियासि चारू कात ताकए लगल। मुदा ककरो सुनि-गुनि नै पाबि मन असथिर भेलै। असथिर होइते मंगलकेँ सोर

पाड़लक। कोठरियेसँ मंगल आवाज दैत बहराएल। बाहर अबिते जोगिनदरकेँ देख बाजल- ‘‘आबह। आबह भाय। एती रातिकेँ कियए एलह?’’
दुनू गोटे ओसारक चौकीपर बैस गप-सप्प करए लगल। जोगिनदर कहलक- ‘‘भाय, आइ तक तोरा एना भऽ कऽ नै चिन्हने छेलियह। मुदा तोहर औझुका विचार सुनि छाती बारह हाथक भऽ गेल। भाँइमे कियो दादा हुअ।’’
जोगिनदरक बात सुनि मंगल बाजल- ‘‘भाय, बहुत राति भऽ गेल अिछ भोरे उठैयोक अछि। कियए एलह से कहह।’’
‘‘अखन अबैक खास कारण अछि तँए निचेन बुझि एलौं। तहूँ तँ देखते छहक जे अखैन धरि हम गाममे दहलाइते छी। ने रहैक बढ़ियाँ ठर अछि आ ने जीबैक कोनो आश। मुदा....।’’
‘‘मुदा की?’’
‘‘मुदा यएह जे करोड़पति रहितो कोनो मोजर गाममे नै अछि’’
करोड़पति सुनि मंगल चौंकैत पुछलक- ‘‘करोड़ कतेक होइ छै, से बुझै छहक?’’
‘‘हँ। सौ लाख।’’
‘‘एत्ते रूपैया अनलह कतऽ सँ?’’
‘‘ऐ बातकेँ छोड़ह। जहियेसँ दिल्ली नोकरी करए गेलौं तहियेसँ रूपैयाक ढेरी लग पहुँच गेलौं। शुरूमे जे बोरामे कसल रूपैया देखिऐ तँ हुअए जे छपुआ कागज छिऐ। मुदा कनी दिन रहलापर रूपैया हथियबैक लूरि भऽ गेल। अखैन, दिन भरिमे लाख रूपैया हसोथब कोनो भारी कहाँ बुझै छिऐ। मुदा ओइ काजसँ मन उचैट गेल। आब एक्केटा इच्छा अछि जे मनुख बनि गाममे रही।’’
‘‘हमरा की कहए चाहै छह?’’
‘‘अखैन तँ सभ पूजामे ओझराइल छी। पूजाक पछाति मदति कऽ दिहह। एक लाख रूपैया अनने छी। अपन जे आदमी अछि जदी ओकरा जरूरी होय तँ बिना सुदिऐक सम्हारि देबै। मूड़क-मूड़ घुमा देत। संगे तोरो कहै छिअ जे रूपैया दुआरे पूजामे कोनो कमी नै होय।’’

जोगिनदर बात सुनि मंगलक मनमे बिरड़ो उठि गेल। एक मन कहै जे रूपैया दुआरे काज पछुआ जाइए। से आब नै हएत। तँ फेर सोचए जे डकैत-तकैतक भाँजमे ने तँ पड़ल जाइ छी। अखन धरि एकटा साधारण आदमी बुझि परदेशिया बुझै छलौं। परदेशमे की करै छलै से तँ नै बुझै छलौं। मुदा खतरनाक आदमी बुझि पड़ैए। एसमगलर छी कि हवालाक धंधा करैए। तत्-मत् करैत मंगल पुछलक- ''एत्ते रूपैया केना भेलह?''

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिनदर चौकन्ना भऽ चारू दिस तकलक। ककरो नै देख घुन-घुना कऽ बाजल- ''भाय, जैठिन नोकरी करै छलौं ओ बड़ भारी कारोवारी अछि। हजारो नोकर-चाकर छै। देखौआ कारोवारक संग चोरनुकबा कारोवार सेहो करैए। आन-आन देशक रूपैया भजबैए। कोन-कोन देशक लोक कोन-कोन रंगक रूपैया भजबैए से कि सभकँ चिन्हबो करै छेलिऐ। मुदा हमरापर सेठवाकँ खूम विसवास छै। हरदम अपने लग रखैत अछि। टहल-टिकोरासँ लऽ कऽ चाह-पान धरि आनि-आनि दैत छेलिऐ। निशिभाग रातिमे एक आदमी गाड़ीपर अबैत छै आ भरि दिन जते बाहरी रूपैया भेल रहै छै ओ सभ लऽ जाइ छै। आपस किछु ने करै छै। खाली पास बुकपर रूपैया चढ़ा दै छै। सेठवाकँ जखैन जते रूपैयाक जरूरत होय, हमहीं बैंकसँ आनि-आनि दैत छेलिऐ।''

जोगिनदरक बात सुनि मंगलक भक्क खुजल। पुछलक- ''दिल्ली सनक शहरमे सी.आइ.डी. आ पुलिस किछु ने कहै छै?''

मुस्की दैत जोगिनदर उत्तर देलक- ''सभकँ महीना बान्हल छै।''

जोगिनदरक बात सुनिते मंगलक मनकँ, निराशाक कारी मेघ टोपर बान्हि घेड़ि देलक। हतोतसाह भऽ गेल। मनमे उठलै- ''ककरापर करब सिंगार पिया मोरा आन्हर रे। जै देशक शासन कमजोर रहत ओइ देशक सुरक्षा भगवान छोड़ि के कऽ सकैत अछि भीतरे-भीतर डरा गेल। मुदा मनकँ असथिर करैत पुछलक- ''तूँ ओही सेठक संग रहै छह की.......?''

“दस बर्ख ओइ सेठबा ऐठीन रहि सभ तरी-घटी देख लेलिऐ। ओकरा ऐठीनसँ हटैक मन भऽ गेल। मुदा नोकरी नै छोड़लौं। कहलिऐ, माए अस्सक अछि तँए किछु अगुरवारो रूपैया दिअ जे इलाज कराएब। भरि दिन दारूए पीबैत रहैत अछि। सारकेँ लगबो करै छै कि नै। एते भारी कारोवार केना सम्हारि लैत अछि। मनमे उठल जे जहिना ई सार दुनियाँकेँ ठकि धन जमा केने अछि तहिना हमहूँ कियए ने एकरे ठकी। दवाइक दोकानसँ एकटा कड़गर निशाँबला दवाइ कीन आनि दारूक बोतलमे फेंटि देलिऐ। आठ बजे साँझमे जखन दारू मंगलक तँ वएह बोतल दऽ देलिऐ आ कहलिऐ जे हमरा गाम दिसक गाड़ी चारि बजे भोरमे अछि तँए रातियेमे चलि जाएब। कहलक- बड़बढ़ियाँ। दारू पीलक। हम ससरि कऽ मलिकाइन लग जाय कहलिऐ जे गाम जाएब। फेर ओइठीनसँ थानापर चलि गेलौं। सभकेँ कहि देलिऐ जे आइ गाम जाएब। सभ चिन्हरबे रहए। धुरि कऽ एलौं तँ देखलिऐ जे सेठवा बेमत अछि। खाइले गेलौं। खेलौं। खा कऽ आबि सिरमा तरसँ कुन्जी निकालि रूपैयाबला कोठरी खोललौं। बाप रे सौंसे कोठरी रूपैयेसँ भरल। मझोलका बैगमे रूपैया भरि कोठरी बन्न कऽ कुन्जी रखि देलिऐ। अपन जे नेपलिया रैक्सीनबला बैग रहए ओहिमे रूपैयोक बैग आ कपड़ो-लत्ता लेलौं। बारह बजे रातिमे जखन रोड खाली भेल तखन एकटा टेम्पूसँ ममियौत भाय लग चलि गेलौं। भैया बड़ होशगर छथि। कहलनि जे जहन रूपैया हाथ आिब गेल तहन चलि केना जाएत। वएह रूपिया छी।”

जोगिनदरक बात सुनि मंगल पुछलक- “अपन कि अभियंतर छह?”
“मनमे अछि जे दस कट्ठा घरारी जोकर जमीन भऽ जाए आ पाँच बीघा घनहर। दसो कट्ठा घरारीकेँ छहरदेवालीसँ घेरि दिऐ। बीचमे डेढ़ कट्ठामे चौबगली घर-अंगना बना लेब। दू कट्ठा खुनि भरियो लेब आ दुनू कट्ठामे माछो पोसब। दू कट्ठामे फल-फलहरीक गाछ लगा लेब। तीमन-तरकारीले चौमासो भइये जाएत। काजो-उदम आ खरिहानो लेल आगूमे खस्ते रखि लेब।”

जोगिनदरक विचार सुनि मंगलक मनमे आश जगल। बाजल- "देखते छहक जे बथनाहामे अवधिया सभ अछि। ओकरा सभकेँ बहुत जमीन छै। ओइमे सँ एकगोटे बैंकमे नोकरी करैए। समांगोक पातर अछि। असकरे नोकरी करत कि खेती करत। सभ खेत बटाइ लगौने अछि। दस बीधा जमीन अपना गाममे ओकर छै। जँ इच्छा हुअ तँ दसो बीघा कीन लाए। अखन धरि ओकर जमीन ऐ दुआरे बचल छै जे एक्के दामठाम बेचए चाहैए। नै तँ कहिया ने बिका गेल रहितै। मुदा एकटा बात पुछै छिअ जे अखैन धरिक जे तोहर जिनगी रहलह ओ हमरासँ विपरीत रहलह। तोंही कहह जे दुनू गोटेक बीच कते दिन निमहत?"

मंगलक प्रश्न सुनि जोगिनदर अबाक भऽ गेल। कनी खानक वाद बाजल- "मंगल भाय, तोहर शंका सोलहन्नी सही छह। दस गोटेक बीच बजैबला मुँह बनौने छह। मुदा शपत-किरिया खा कऽ कहै छिअ जे अपनो अपना जिनगीसँ मन उचटि गेल अछि सदिखन होइत रहैए कखैन सड़कपर घूमै छी आ कखैन जहल चलि जाएब। ओना रोडक सिपाहीसँ लऽ कऽ नीक-नीक पाइबला सभसँ चिन्हारे अछि मुदा ओ सभ पाइयक दोस छी। कहियो काल जे सुतलमे सपनाइ छी तँ ओहिना देखै छी जे आगू-पाछू बन्दूकक हाथे सिपाही घेरने अछि आ हाथमे कड़ी लगौने जहल नेने जाइए। कखनो सोचै छी तँ बुझि पड़ैए जे अपनाकेँ आगू मुँहे जाइत देखै छी तँ लगले होइए जे पाछु मुँहे तेजीसँ खसल जाइ छी। कखनो चैन नै रहैए।"

बजैत-बजैत जोगिनदरक आँखिमे नोर ढबढबा गेल। दुनियाँक आकर्षण देख मंगलोक मन पघिलए लगल। मनमे उठलै मनुष्यमे एहेन अद्भुत शक्ति होइ छै जे एकाएक बदलि जाइत अछि। डकैतसँ महात्मा बनि जाइत अछि आ महात्मासँ डकैत। तँए मनुष्यक संबंधमे किछु निश्चित कहब असंभव अछि। अनुपमेय अछि मुदा तैयो एकटा नमहर खाधि बुझि पड़ैए। हमरा तपमे विसवास अछि जहन कि एहेन जिनगी उनटा छै। उम्रमे भलहिं बेसी अन्तर नै हुअए मुदा जिनगी तँ दू-दिशाह अछि। मात्रिकक एकटा बात मन पड़लै।

मात्रिक कोशिकन्हामे। पूवसँ कोशी आ पछिमसँ कमला गामकेँ घेरने रहए। बिचला सभ धार एक-दोसरमे मिलल। ओइ गाममे बाँसक बोन। बाँसक एकटा बीट गहीरगरमे। खूब सहजोर बाँस रहए। चालीस-चालीस हाथक बाँस ओइमे। अगते धार फुला गेल। बाढ़ि आबि गेल। गामक सभ माल-जालक संग गाम छोड़ि कुटुमारे चलि गेल। कातिकेमे घुरि कऽ आओत। एहेन परिस्थितिमे मातृभूमि केना स्वर्ग बनि सकैत अछि। ओइ बाँसक बीटमे दस-बारह हाथ पानि लगल रहए। ओइ बीटमे दस-बारह हाथ उपरसँ सौंसे बीट कोपर दऽ देलक। जे मंगलो देखने रहए। वएह बात मंगलकेँ मन पड़ल। मन पड़िते सोचलक जे अगर जँ मनुक्ख संकल्पित भऽ जिनगी मोड़ए चाहत तँ जरूर मोड़ि सकैत अछि। अपन परिवारक पाछु लोक चोरी-डकैती, बेइमानी, शैतानी सभ किछु करैत अछि। हम तँ एकटा गिरल आदमीकेँ उठबए चाहै छी। मनमे खुशी उपकलै। मुस्कुराइत बाजल- “भाय, जहिना तूँ दरबज्जापर आिब कहलह तहिना तँ हमरो मदति करब फर्ज बनैत अछि। मुदा आइधरि अधलाह काज नै केलौं, तेकरो तँ निमाहैक अछि।”

मंगलक बात मंगलक पिता गणेशी सेहो सुनलनि। ओ लग्घी करए निकलल रहथि। हाँइ-हाँइ कऽ लग्घी कऽ लगमे दुनू गोटेक बीच आबि कहलखिन- “बौआ, तीस बर्ख पहिलुका एकटा खिस्सा कहै छियह। ओइ समए जुआने रही। मोछ-दाढ़ीक पम्ह अबिते रहए। माइयो-बाबू जीविते रहथि। एहिना कातिक मास रहए। तीन बजे करीब बेरू-पहर माथपर मोटरी नेने नाना हहाएल-फुहाएल एला। अबिते माएकेँ कहलखिन- “दाय, गंगा नहाइले जाइ छी। बहुत लोक गामक जाइ छै। ओकरा सभकेँ कहने छिऐ जे टीशनेपर भेँट हेबह। ताबे कनी हमहूँ सुसता लै छी आ तहूँ तैयार हुअ। खेबा-खरचा अछिये तँए कोनो ओरियान करैक नै छह।”

नन्नाक बात सुनि माए ठर्रा गेलि। एक दिन पहिने गाए बियाएल रहए। ऐ सभमे माए बड़ सुतिहार रहए। माइयक मनमे दू तरहक बात टकरा गेलै।

ओमहर गंगा नहाइले जाएब आ एम्हर जँ गाएकेँ किछु भऽ जाए। तहन तँ नअ मासक मेहनत डुबि जाएत। दोसर होइ जे गौआँ-घरूआकेँ छोड़ि बाबू एला। गाड़िये-सवारीक भीड़-भड़क्काक बात छी, जँ कही कियो भेँट नै होइन, तहन की हेतनि। तँए गुम्म रहए। तै बीच बाबूओ आिब गेलाह। गोड़ लागि ओहो कातमे ठाढ़ भऽ गेलाह। ने माए किछु बाजै आ ने बाबू। नाना अपन बात बाजि चुकल रहथि तँए ने किछु बजैत। तीनू गोटेकेँ चुप देख कहलयनि- “नाना पाएर धुअ ने?”

ओ कहलनि- “नै-नै, पाएर-ताएर नै धुअब। टेनक टेम भेल जाइए। सामंजस्य करैत माए बाजलि- “बौआ, छोड़ैबला कोनो ने छह। नन्ना संगे तोंही जाह।”

मन अपनो रहए मुदा बीचमे बाजब उचित नै बुझि चुप्पे रही। ओना भागवत सुनैकाल एकटा खिस्सा सुनने रही जे गंगा तेहेन भारी धार अछि जइमे सौंसे दुनियाँक मनुक्खसँ लऽ कऽ चुट्टी-पिपरी धरि अँटि जाएत। तैयो पेट खालिये रहत। सएह देखैक जिज्ञासा रहए। नाना संगे विदा भेलौं। जखन गंगामे पैस दुनू गोटे नहाए लगलौं कि कहलनि- “नाति मने-मन गंगाकेँ कहुन जे आइसँ झूठ-फूसि नै बाजब।” सएह कहि डूब लेलौं। दू सालक बाद बाबू मरि गेलाह। घरक गारजन बनलौं। बाबू मुइलाक पछाति माइयो रोगा गेलि। मुदा काज करैक सभ लूरि रहए तँए कहियो कोनो काजक अबूह नै लागए। अपन राजकाजमे सदिकाल लागल रहै छलौं। कहियो झूठ बजैक जरूरते ने हुअए। दछिनबारि टोलमे सरूप रहए। दस बीघा खेतो ओकरा रहए। मुदा रहए फुर्र-फाँइबला आदमी। ललबबुआ। भरि दिन एम्हरसँ ओम्हर घूमल घुरै। ताश जे खेलए लगे तँ बारह-दू बजे राति धरि खेलते रहए। गामक लोककेँ टिक ओझरबैमे माहिर रहए। पर-पनचैतीमे तेहन पेँच लगा दै जे मारि-पीटि भइये जाए। कोट-कचहरीक दलाल रहए। दस बीघा खेत रहितो दुइयो मास घरसँ नै खाए। ने अपने कोनो काज करै आ ने खूटापर बड़द रखने रहए। जे सभ झड़-झंझटमे फँसल रहए ओकरे सबहक बड़दसँ खेतियो करै आ ओकरे सभसँ ठकि-फुसिया कऽ गुजरो करै। जेकरासँ जे चीज लै ओकरा घुमा कऽ

दैक नामो ने लै। एक दिन अपना ऐठाम अिाब कहलक- ''गणेश, सुनै छी तूँ चाउर बेचै छह?''

हम कहलिऐ- ''हँ।''

कहलक- ''एक मन चाउरक काज अछि।''

कहलिये- ''भऽ जाएत। ककरो पठा देबै। नै ते अपने नेने जाएब तँ नेने जाउ।''

चाउर तौला कऽ कहलक- ''तोरा तगेदा करैक जरूरत नै छह। जखने हाथमे रूपैया आओत तखने दऽ देबह।''

कहलिऐ- ''बड़बढ़ियाँ।'' छह मास बीत गेल। ने तगेदा करिऐ आ ने दियए। साल बीत गेल। दोसर साल फेर ओहिना केलक। तेसरो साल केलक। झुठ केना बजितौं जे चाउर नै अछि। पाइयक दुआरे अपन काज खगैत रहए। काजकेँ बिथुत होइत देख मनमे आएल जे कमाइ छी हम आ खाइए ललबबुआ। ई तँ सोझा-सोझी गरदनि कट्टी भऽ रहल अछि। ओह से नै तँ आब कहत तँ गछबे ने करब। कहबै जे नै इए। मुदा फेर मनमे उठल जे बीच गंगामे पैस संकल्प केने छी, झूठ केना बाजब। विचित्र स्थिति भऽ गेल। हारि कऽ झूठ बजए लगलौं। मुदा एते जरूर करै छी जे जे झुट्ठा अछि ओकरा लग झूठ बजै छी आ जे झूठ बजनिहार नै अछि ओकरा लग सत्य बजै छी। तँए बौआ कहि दैत छी जे अहाँ सभ जुआन-जहान छी सोचि-विचारि कऽ डेग उठाएब। जहिना दुनियाँ बड़ीटा छै, बड़ लोक छै, खेत-पथार धार-धुर, पहाड़-पठार, समुद्र इत्यादि की कहाँ छै तहिना मनुक्खो अछि। एक्के कुम्हारक बनाओल पनिपीबा घैल सेहो छी आ छुतहरो छी। मुदा देखैमे दुनू एक्के रंग होइए।''

२

अमावास्या दिन। आइये साँझमे दिवाली आ निशांरातिमे कालीपूजा हएत। अखन धरिक जे काजक उत्साह सभमे रहै ओ ठमकि गेल। काजो आखिरी रूपमे आिब गेल। ओरा गेल। जहिना साल भरिक अध्ययनक आखिरी दिन परीछा दिन होइत, तहिना। काल्हि धरि काज गतिसँ चलैत रहल। जै दिन जेहेन काज तै दिन तेहेन रफ्तार। मुदा आइ तँ आखिरी दिन छी तँए काजक उनटा गिनती कऽ लेब जरूरी अछि। हो न हो किछु छुटि गेल हुअए। जँ छुटि गेल हएत तँ पूजामे बिध्न-बाधा पड़त। तै दुआरे पूजा समितिक बैसार सबेर साते बजे बजाओल गेल।

आठे दिनमे गामक चुहचुहिये बदलि गेल। जहिना हरोथ बाँसक जड़ि अधिक मोट रहितो बीचमे भुर कम होइत मुदा आगू ओहिसँ पातर रहनौ भूर बेसी होइत तहिना बँसपुरोमे बुझि पड़ैत। जखन पूजाक दिन आगू छल तखन काज बेसी आ जखन लग आएल तँ कमि गेल। काल्हियेसँ गामक धी-वहिन आबि रहल अछि ओना गामक सभ अपन-अपन कुटुमकेँ हकार देने मुदा अबैमे दिवाली बाधक बनल छलै। दिवाली दिन घरमे नै रहने भूतक बसेराक डर सबहक मनमे नचैत। जइसँ आगू आरो पहपटि हएत। तँए गामक जे धी-वहिन असकरूआ छलि ओ भरदुतिया ठेकना कऽ दिवालीक परात आओत। मुदा जेकरा घरमे दियादनी वा सासु अछि ओ कियए ने एक दिन पहिने आओत। नैहर छिऐ ने। कते दिन माए-बाप, भाए-भौजाइ आ गामक सखी-सहेलीसँ भेँट भेना भऽ गेल छै। तहूमे जेकर नैहरक परिवार जेरगर छै ओ तँ साले-साल वा सालमे दुइयो-तीन बेर आिब जाइत अछि मुदा जेकर परिवार छोट छै, जइमे कम काज होइ छै, ओ तँ दस-दस सालसँ नैहरक मुँह-आँखि नै देखलक। गामक सौभाग्य जे काली-पूजा शुरू भेल। मुदा एकटा अजगुत बात भऽ गेलै। गामक धी-वहिनसँ बेसी गामक सारि-सरहोजि आबि गेलै। गाममे बेसी साइर-सरहोजि एलासँ गामक चकचकिये बढ़ि गेल। जइसँ छौड़ा-

मारड़िसँ लऽ कऽ बूढ़-पुरानक मुँहमे चौवन्नियाँ मुस्की आिब गेल। तहूमे परदेशिया साइर-सरहोजि आिब कऽ तँ आरो रंग बदलि देलक।

दुखक दिन गौआँक कटि गेल। सुखक दिन आिब रहल अछि किएक तँ आठ दिन जे बीतल ओ ओहन बीतल जे ने ककरो खाइक ठेकान रहै आ ने सुतैक। मुदा आब तँ सभ पाहुन-परकक संग अपनो पहुनाइये करत। मरदक कोन बात जे जनीजातियो खुशी जे भनसिया आिब गेल। नीक-निकुत खेनाइ, दिन-राति तमाशा देखनाइ, ऐसँ सुखक दिन केहेन हएत। तहूसँ बेसी खुशी ई जे भरि मेला ने ककरो पैंइच-उधार करए पड़तै आ ने दोकान-दौरीक झंझट रहतै। किएक तँ दू दिन पहिने सभ अपन-अपन काज सम्हारि नेने छल। महाजनोक बही-खाता बन्न रहत। मुदा दिवालीक बोहनिक दुख महाजनक मनकेँ जरूर कचोटै। कतबो रेड़गड़ मेला कियए ने होउ मुदा दूध-दही, माछ-मासुक अभाव नै हएत। पाँच दिन पहिनहि सुधा दूधक एजेन्ट आ माछ-माउसक व्यापारीकेँ एडभांस दऽ देने अिछ। तहूमे काली-पूजा छी। बिना बलि-प्रदाने पूजो केना हएत। बँसपुराक जनीजातियो तँ ओते अनाड़ी नहिये अिछ जे जोड़ा छागर कबुला नै केने हएत। पहिल साल पूजाक छी। बिना नव वस्त्र पहिरने पूजा केना कएल जाएत आ धिया-पूजा मेला केना देखत? जँ से नै हएत तँ की देवीक अपमान नै हेतनि?

जै जगहपर काली मंडप बनल ओइ ठिमक आठे-दस कट्ठाक परती। सेहो आम जमीन। जइसँ एकपेरियासँ लऽ कऽ खुरपेरिया लगा सौंसे परती रस्ते बनल। ओइ परतीक पछिम-उत्तर कोनमे लोक फुटल-फाटल माटियोक बरतन आ परसौतीक कपड़ो-लत्ता फेकैत। पूब-उत्तर कोनमे धिया-पूजा झाड़ा फिरैत। दछिन-पछिम भागमे घसबाह सभ घास-घास खेलाइ दुआरे कतेको खाधि खुनने आ दछिन-पूब कोनमे कबड्डी आ गुड़ी-गुड़ीक चेन्ह दऽ घर बनौने। काली-पूजाक आगमनसँ सौंसे परती छील-छालि एक रंग बना देलक। जै तरहक मेलाक आयोजन भऽ रहल अछि ओइ हिसाबसँ जगहो छुछुन लगैत। मुदा रौदियाह समए भेने परतीक चारू भागक खेतक धान मरहन्ना भऽ गेलै, जेकरा

काटि-काटि सभ अगते माल-जालकैँ खुआ नेने छलै। तँए मेलाक लेल जगहक कमी नै रहल। पनरह बिघासँ उपरे खेतक आड़-मेड़ तोड़ि चट्टान बना देलक। अगर जँ से नै बनाओल जाइत तँ मुजफ्फरपुरक ओहन नाटकक अँटाबेश केना हएत? किएक तँ जै पार्टीमे बाजा बजौनिहारसँ लऽ कऽ स्त्री पाट खेलेनिहारि धरि मौगिये संगीतकार आ कलाकार अछि। परोपट्टाक लोक उनटि कऽ नाटक देखए लेल आओत। तँए कमसँ कम पाँच बीघाक फील्ड देखिनिहार लेल चाहबे करी। से तँ भइये गेल। तइपर सँ बृन्दावनक रास सेहो अछि नाटकसँ कनियो कम नै। एकपर एक कलाकार अछि। मोट-मोट, थुल-थुल देह, हाथ-हाथ भरिक दाढ़ी-केश लऽ लऽ पार्टो खेलत आ नचबो करत। तँए देखिनिहारोक कमी नहिये रहत। मेल-फिमेल कौव्वालीक संग महिसोथाक मलिनियाँ नाच सेहो अछि। एकपर एक चारू। किएए ने धमगिज्जर मेला लागत। पूजा-समितिक सभ सदस्यक मनमे खुशी होइत मुदा एकटा शंका सबहक मनमे रहबे करै। ओ ई जे एत्ते भारी मेलाकैँ सम्हारल केना जाए? कतबो गौआँ जी-जान लगाओत तैयो लफुआ छौड़ा सभ छअ-पाँच करबे करत। पौकेटमारो हाथ ससारबे करत। मुदा की हेतै, मेला-ठेलामे कनी-मनी ई सभ होइते छै। केकरा के देखत आ ककर के सुनत। तहूमे रौतुका मसीम रहत किने?

दोकानो-दौरीक आयोजन सेहो बेजाए नै। दुनू ढंगक दोकान। पुरनो आ नवको। नवका समानक लेल न्यू मार्केट एक भाग आ दोसर भाग पुरना बजार बैसल। ओना अखन धरि दोकान-दौरी नीक-नहाँति नै जमल अछि मुदा बेर टगैत सभ बनि जाएत।

न्यू मार्केटक चाक्-चिक्य दोसरे ढंगक अछि जइमे बिनु देखलेहे समान बेसी रहत। दोकानदारो सभ बहरबैये रहत। एहेन-एहेन सुन्नर चूड़ी ऐ इलाकाक लोक देखनौ हएत कि नै तेहन-तेहन चूड़ीक दोकान सभ आिब गेल अछि। देखिनिहारोकैँ आँखि उठि जाएत। किएए ने उठत? एते दिन देखैत छल जे

चूड़ी स्त्रीगणे बेचै छलि ऐबेर देखत जे पुरूखो बेचैए। तइमे तेहन-तेहन फोटो सभ दोकानक भीतरो आ बाहरो लगौने अछि जे अनेरे आगूमे भीड़ लागल रहत। असली मनुक्ख छी आिक नकली से सभ थोड़े बुझत। फोटोए टा नै गीतो गबैबला तेहन-तेहन साउण्ड-बॉक्स सभ सजौने अिछ जे सभ किछु बिसिर जाएत। चूड़ी बजारक बगलेमे चेस्टरक दोकान लगल अछि। चूड़ी बजारसँ कम थोड़े ओहो बेपारी सभ सजौने अछि काल्हियेसँ एहेन-एहेन प्रचारक मशीन सभ लगौने अछि जे कियो थोड़े परखि लेत जे आदमीक मुँह बजै छै कि मशीन। परचारो कि हरही-सुरही छै। समानक संग-संग पहिरैक लूरि सेहो सिखबैत अछि। धन्यवाद ओइ बनौनिहारकेँ दी जे हाथी सन-सन मोट देहसँ लऽ कऽ खिरकिट्टी देह धरिमे एक्के रंगक चेस्टरसँ काज चलि जाएत। तहूमे तेहन डिजेनगर सभ अछि जे एकटा छोड़ि दोसर पसिनो करैक जरूरत नै पड़त। जेकरा पाइ छै ओकरा एकटासँ मन भरत ओ तँ गेठक गेठ कीनत। बिल्कुल औटोमेटिक। दामो कोनो बेसी नहिये रखने अछि जे समानक बिक्री कम हेतै। मात्र एगारहे रूपैया। बेपारियो सभ तेहन ओसताज अछि जे पहिने पता लगा समान डिक देने अछि।

चेस्टरक दोकानक बगलेमे खेलौनाक बजार अछि। वाह रे खेलौना बनौनिहार आ पूँजी लगा व्यापार केनिहार। दस रूपैयासँ लऽ कऽ हजार धरिक। बन्दूक, तोप, रौकेट, हवाइ जहाजक संग बम साइजिक खेलौना सभसँ दोकान भरने अछि। देखैमे असलिये बुझि पड़त मुदा अछि नकली। ओना असलेहे जकाँ गोलियो छुटैत, अवाजो होइत आ उड़बो करैत अछि।

तीनटा दाढ़ी केश बनबैबला बम्बैया शैलून सेहो आिब गेल अछि। तीनूमे महिले कारीगर। मरदे जकाँ अपन रूप बनौने। मुदा मरदोसँ बेसी फुरतिगरो आ बजबोमे चंगला। दाढ़ी कटबैकाल बुझिये ने पड़त जे उनटा हाथ पड़ैए आिक सुनटा। हाथो मरदे जकाँ मुदा कने गुलगुल बेसी। शैलूनक बगलेमे साड़ीक बाजार। साड़ियो सभ अजबे टँगने अछि। पुरजीमे रेशमी लिख-लिख सटने मुदा पटुआ जकाँ छल-छल करैत अछि। कतौ ओचिला नै, एकदम पलीन।

तेहन-तेहन पटोर सभ रखने अछि जे बुझबे ने करबै ई भगलपुरिया रेशम छी आक पटुआक। प्लास्टिकक मनुक्ख बना तेहन सजौने अछि जे बुझि पड़त आँखिक इशारासँ दोकान अबैले कहैए।

राम-हिलोरा, मौतक कुआँ, हेलिकेप्टर, हवाइ-जहाज, रेलगाड़ी, दिल्लीक चौकक चरि पहिया, छह पहिया गाड़ीक दौड़-बरहा सभ अछि। मुदा जखन न्यू मार्केट घुमिये लेलौं तँ पुरनो बजार घुमिये लिअ। कियो छपड़ीक दोकान बनौने तँ कियो फट्ठाक खूटापर बातीक कोरो बना प्लास्टिक दऽ घर बनौने अछि। कियो तिरपाल टँगने अछि तँ कियो ओहिना घैला-डाबा इत्यादि माटिक बरतन पसारने अछि। दोकानदारो सभ सुच्चा ग्रामीण। अइँ ई तँ चिन्हरबे दोकानदार सभ छी। पहिलुके दोकान झुनझुनाबला बुढ़बाक छी। चालिसो बर्ख उपरेसँ झुनझुना बेचैए। आब तँ बुढ़हा गेल। दुनू परानी दुनू दिस बैस ताड़क पत्ताक झुनझुनो बना रहल अछि आ खजुरक पातक पटिया, बीअनि सेहो सजौने अछि। तोरा तँ कनी कऽ चिन्है छिअ हौ झुनझुनाबला।''
''बौआ चसमा लगौने छी तँए धकचुकाए छह। पहिने चसमा नै लगबै छलौं। आँखियो नीक छलए। दू साल पहिने आँखि खराब भऽ गेल। तँए अहीबेर लहानमे आँखि बनेलौं।''
मुदा झुनझुनावाली परेखि कऽ बाजलि- ''बौआ सोनमा रौ। जहियासँ परदेश खटए लगलैं तहियासे नै देखलियौ। तूँ हमरा चिन्है छैं?''
''नै।''
तोहर मामाघर आ हम्मर नैहर एक्केठीन अछि अंगने-अंगने झुनझुनो आ बिअनियो, पटिया बेचै छी। अहीसे गुजर करै छी। आब तँ भगवान सभ किछु दए देलनि। दूटा बेटा-पुतोहू अछि। सातटा पोता-पोती अछि। दुनू बेटा घर जोड़ैया (राज मिस्त्री) करैए। खूब कमाइए आब तँ अपनो ईटाक घर भऽ गेल। मुदा दुनू परानी तँ जिनगी भरि यएह केलौं। आब दोसर काज करब से पार लगत। ओना दुनू भाँइ मनाहियो करैए। मगर हाथपर हाथ धऽ कऽ बैसल नीक लागत। तँए जाबे जीबै छी ताबे करै छी। तोरा माएसँ बच्चेसँ

बहिना लागल अछि। जहिया तोरा घर दिस जाइ छी तहिया बिना खुऔने थोड़े आबए दइए। माएकँ कहि दिहैन जे अपनो दोकान मेलामे अछि। तोरा कएटा बच्चा छौ?"

"एक्केटा अछि।"

"एकटा झुनझुना बौआले नेने जाही।"

"ओहिना नै लेबौ मौसी। अखैन हमरो संगमे पाइ नै अछि आ तोहूँ दोकान लगैबते छँ। बिकरी बट्टा थोड़े भेल हेतौ।"

"रओ बोहनिक सगुन ओकरा होइ छै जे इद-बिद करैए। हम तँ अपन पोताकँ देब। तइले बोहैनक काज अछि।"

दोसर दोकान रमेसराक लोहोक समान आ लकड़ियोक समानक अछि। हँसुआ, खुरपी, टेंगारी, पगहरिया, कुड़हड़ि, खनती, चक्कू, सरौता, छोलनीक संग-संग चकला, बेलना, कत्ता, रेही, दाइब, खराम, बच्चा सबहक तीन पहिया गाड़ीक दोकान लगौने अछि। असकरे रमेसरा समान पसारि खूटामे ओङठि, टाँग पसारि बीड़ी पीब रहल अछि।

"रमेसरा रौ। सुनने रहियौ जे तोहूँ दिल्ली धए लेलैं।"

"धुड़ बूड़ि, दिल्ली हौआ छिऐ। जहिना लोक कहै छै ने जे दिल्लीक लड्डू जेहो खाइए सेहो पचताइए आ जे नै खेलक सेहो पचताइए। दिल्लीसेट सभकँ फुलपेंट, चकचकौआ शर्ट, घड़ी, रेडियो, उनटा बाबरी देख हमरो मन खुरछाही कटए लगल। गामपर ककरो कहबो ने केलिऐ आ पड़ा कऽ चलि गेलौं। अपने जातिक (बरही) ऐठाम नोकरी भऽ गेल। तीन हजार रूपैया महीना दरमाहा आ खाइले दिअए। मुदा तते खटबै जे ओते जँ अपने गाममे खटी तँ कतेक बेसी होइए। घुरि कऽ चलि एलौं। जहिया सुनलिऐ जे अपनो गाममे काली-पूजाक मेला हएत तहियासँ एते समान बनौने छी। कहुना-कहुना तँ चारि-पाँच हजारक समान अछि कोनो कि सड़ै-पचैबला छी जे सड़ि जाएत। तोरा सभकँ ने बुझि पड़ै छौ जे दिल्लीमे हुंडी गारल अछि। हम तँ एक्के

मासमे बुझ गेलिऐ। जखन अपना चीज-बौस बनबैक लूरि अछि तखन अनकर तबेदारी कियए करब। अपन मेहनतसँ मालिक बनि कऽ कियए ने रहब। तूँ सभ ने अनके कोठा आ सम्पत्तिकेँ अपन बुझै छीही। मुदा ई बुझै छीही जे धनिकहा सभ तोरे मेहनत लूटि कऽ मौज करैए। अखैन जो, कनी दोकान लगबै छी।''

''ई तँ रौदिया भैयाक चाहक दोकान बुझि पड़ैए। अपने दोकान खोललह भैया?''

''हँ, बौआ। गामक मेला छी। एकर भीड़-कुभीड़ तँ गौअँएपर ने पड़त। ओहिना जे टहलैत-बुलैत रहितौं तइसे नीक ने जे दू पाइ कमाइयो लेब आ मेलाक ओगरबाहियो करब।''

''बेस केलह। बरतन-बासन अपने छेलह?''

''नै। रघुनाथ लग बजलौं तँ वएह अपन पुरना सभ समान देलक।''

''रघुनाथक दोकान तँ बड़ स्टेनडर भऽ गेलै।''

''चाहे दोकानक परसादे तीनटा बेटियोक वियाह केलक आ ईंटाक घरो बना लेलक।''

''वाह बड्ड सुन्दर, बर बेस।''

कते छोटका दोकानदार छपड़ियो ने बनौने। कातिक मास रहने ने बेसी गरमी आ ने बेसी जाड़। तहन कियए अनेरे बाँस-बत्ती कीन घर बनौत। दूटा बाँसक खूटा गाड़ि उपर बल्ला दऽ देत। ओइपर केराक घौर टाँगि बेचत। कचड़ी पापड़ फोंफी लेल माटियेमे चुल्हि खुनि लोहिया चढ़ा बनाओत। मुरही पथियेमे रखि डिब्बासँ नापि-नापि बेचत। झिल्ली बनबैक साँचा तँ सभकेँ रहितो ने छै, जे बनौत।

झंझारपुरक आ मधेपुरक दस-बारहटा दोकानदार आिब कऽ मेलाक चुहचुहिये बदलि देलक। गहिकियो चिन्हरबे आ दोकानदारो सएह। तँए सभसँ नीक

कमाइ ओकरे सभकेँ हएत। नगद-उधार सभ चलतै। एक पाँतीसँ सभ दोकान बना रहल अछि।

पितोझिया गाछ लग के झगड़ा करैए। कनी ओकरो देख लिऐ। अरे ई तँ दुनू परानी ढोलबा छी। ''एना कियए ढोल भाय अबिते-अबिते ढोल जकाँ दुनू परानी ढबढ़बाइ छह?''
अवाज दाबि ढोलबा बाजल- ''है भाय, देखहक ने ऐ मौगियाकेँ, मेलासँ जेकरा जे हानि-लाभ होउ मुदा हमरा ते सीजिन पकड़ाएल अछि आगूमे छठि अछि। परोपट्टाक लोक ते कोनियाँ, सूप, छिट्टा, डगरी कीनबे करत। ओइ हिसाबसँ ने समान बनबैत। से कहैए जे तीसे गो छिट्टा-पथिया मिला कऽ अछि। अट्ठारह गो सूप आ गोर पचासे कोनियाँ अछि ऊँटक मुँहमे जीरक फोरनसँ काज चलत?''
''ऐले झगड़ा कियए करै छह? फेर लऽ अनिहह।''
ढोलबा कने गम खेलक मुदा झपटि कऽ तेतरी बाजलि- ''ऐ मरदावाकेँ एक्को मिसिया बुइध छै। एतनो ने बुझैए जे आठे दिनमे कते बनैबतौं। दूटा ढेनमा-ढेनमी अछि ओकरो सम्हारए पड़ैए। ई तँ भरि दिन बाँस, बत्ती, कैमचीक जोगारमे रहैए। कोनो कि बजारक सौदा छिऐ जे रूपिया नेने जाइतौं आ कीन अनितौं।''
ढोलबा- ''तूँ नै देखै छीही जे महिनामे पनरह दिन, काजक दुआरे नहेबो ने करै छी। तौँही छातीपर हाथ रखि बाज जे एक्को दिन टटका भात-तीमन खाइ छी। डेढ़ बजे दू बजे हकासल-पियासल बाँस आनै छी, तखन गोटे दिन नहाइ छी ने तँ नहिये नहाइ छी। धड़-फड़ा कऽ खाइ छी आ काजेमे लगि जाइ छी। निचेनसँ बीड़ीयो-तमाकुल नै खाए-पीबए लगै छी। खा कऽ अराम केकरा कहै छै से तँ दिन कऽ सिहिनते लागल रहैए। तूँ की बुझबीही जे बाँस टोनै, फाड़ै, गादि लैमे कते भीर होइ छै। बैसल-बैसल बानि चलबै छै तँ बुझि पड़ै छौ एहिना होइ छै। ई थोड़े बुझै छीही जे उठ-बैठ करैत-करैत जाँघ चढ़ि जाइए। ऐसँ हल्लुक सए बेर डंड-बैसकी करब होइ छै। एते काज केला बाद

जा कऽ बैसारी काज अबैए। बैसयो कऽ कारा-कैमची बनैबते छी। गुन अछि जे ताड़ी पीबै छी तँए मन असथिर रहैए। मूड फरेस रहैए। तँए ने कोनो काज उनटा-पुनटा होइए। ने तँ केकर मजाल छिऐ जे एक्के दिनमे एते रंगक काज सरिया कऽ कए लेत। अच्छा हो, दोकान लगा। दोकान की लगेमे, कोनियाँकेँ तीन मेल बना ले। डगरी, सूप तँ एक्के रंग छौ आ छिट्टाकेँ दू मेल बड़का एक भाग छोटका एक भाग कऽ के लगा ले। पाँच गो रूपैया दे कनी ताड़ी पीने अबै छी।''

''अखैन रौद चरहन्त छै। अखैन जे ताड़ी पीबैले पाइ देबह से कि हमरा गारि सुनैक मन अछि।''

''आँइ गै मौगिया, तोरा बजैत एक्को पाइ लाज नै होइ छौ जे पुरूख रहितो घरक भार सुमझा देने छियौ। संगीयो-साथी सदति काल किचाड़ैए।''

''अच्छा रूपैया दै छिय मुदा फेर बेरू पहर नै मंगिहह। जाइ छह ते जा मुदा झब दऽ अबिहह। मेला-ठेला छिऐ असकरे हम दोकान चलाएब कि बेदरा-बुदरी सम्हारब।''

''से कि हम नै बुझै छिऐ मुदा दसटा दोस-महिम अछि। अगर भेँट-घाँट भऽ जाएत ते की कुशलो-क्षेम नै करब।''

बँसपुराक लड़कीक संग जे दुरबेबहार सिसौनीक दुर्गा-स्थानमे भेल ओइ घटनाक समाचार तरे-तर चारू भरक गाममे पसरि गेल छल। जेकर टीका-टीपनी गामे-गाम होइत छल। मुदा एक रूपमे नै। अधिकतर लोक ऐ घटनाकेँ निन्दा करैत तँ कमतर मनोरंजन कहैत। किछु गोटे फैशन बुझि पाछुसँ अबैत बेबहार मानि बजबे ने करैत। मगर सभ किछु होइतो सिसौनीबला बँसपुराबलासँ सहमल। एहेन घटना आगू नै हुअए तै लेल सिसौनीक बुद्धिजीवी सबहक मनमे खलबली मचि गेल। सिसौनियेक दयानन्द दरभंगा कओलेजमे प्रोफेसरी करै छथि। गामक लोक तँ हुनका एकटा नोकरिहरा बुझै छन्हि मुदा कओलेजमे छात्रोक बीच आ शिक्षकोक बीच प्रतिष्ठित व्यक्ति बुझल जाइत

छथि। ऐबेर ओ दुर्गा-पूजामे गाम नै आिब संगीक संग रामेश्वरम् चलि गेल छलाह। मुदा बालो-बच्चा आ पत्नियो गाम आएल रहनि। वएह सभ रामेश्वरम् सँ एलापर घटनाक जानकारी देलकनि। घटना सुनि प्रोफेसर दयानन्द मने-मन जरि गेलाह। गुम्म-सुम्म भऽ सोचए लगलथि जे ई कोन तमाशा भऽ गेल जे धरमक काजक दौरमे एहेन अधर्म भऽ गेल। केना लोकक मनमे धरमक प्रति आदर रहत। धर्मस्थलमे जँ एहेन-एहेन वृत्ति हएत तँ कएक दिन ओ स्थल जीबित रहत? केना ककरो माए-वहिन घरसँ निकिल देवस्थान पूजा करए वा साँझ दिअ आओत। जते घटनाकेँ टोब-टाब करथि तते पैघ-पैघ प्रश्न मनकेँ हौंड़ए लगलनि। मुदा जे समए ससरि गेल ओ उनटियो तँ नै सकैत अछि। कोन मुँहे ओइ गाम पाएर देब। लोक की कहत? ओहू गामक (बँसपुराक) तँ अनेको विद्यार्थी पढ़बो करैत अछि आ पढ़ि कऽ निकललो अछि ओ सभ की कहैत हएत। मुदा आगू एहेन घटना नै हुअए तेकर तँ प्रतिकार कएल जा सकैत अछि। पाप तँ प्राश्चितेसँ कटैत अछि तहूमे अगुरबारे बँसपुरासँ काली-पूजाक हकार-कार्ड सेहो आिब गेल अछि। तत्-मत् करैत मनमे एलनि जे एकटा बेंग मरलासँ लोक इनारक पानि पीब तँ नै छोड़ि दैत अछि। ओकरा निकालि गंधकेँ मेटबैक उपाइ करैत अछि। बँसपुराक काली-पूजाक आरंभ सेहो सिसौनियेक घटनाक प्रतिक्रिया स्वरूप भऽ रहल अछि। हो न हो एकरे जबाबमे ओहो सभ ने घटना दोहरा दिअए?

काली-पूजा शुरू होइसँ तीन दिन पहिने प्रो. दयानन्द गाम आिब, बिना कोनो मान-रोख केने गामक पढ़ल-लिखल उमरदार सभसँ सम्पर्क कए कहलखिन। किछु गोटे गामक प्रतिष्ठा बुझबो करैत छलाह आ किछु गोटे बुझौलासँ बुझलनि। बुझला बाद एकमुँहरी सभ गाममे बैसार कए एकर निराकरण करैक विचार व्यक्त केलकनि। दयानन्दक मनमे आगू डेग बढ़बैक साहस जगलनि। साहस जगिते कओलेजक विद्यार्थी सभकेँ बैसार करैक भार देलखिन। दू दिन समए बीत गेल। जै दिन काली-पूजा शुरू हएत तै दिन भोरे सात बजे बैसार भेल।

सात बजेसँ पहिनहि दुर्गेस्थानमे सभ एकत्रित भेलाह। वैचारिक रूपमे गाम दू फाँक जकाँ भऽ गेल। तँए अपन-अपन विचारकेँ मजबूत बनबैक विचार सबहक मनमे। तीनू कार्यकर्ताक (जे सभ घटनामे शामिल रहए) पिता बैसारमे नै आएल । नै अबैक कारण विरोध नै लाज होय। तहूमे जखनसँ प्रो. दयानन्द दरभंगासँ आिब घटनाक चर्चा चलौलनि तखनेसँ मुँह नुकबए लगल। मुदा मौलाइल घटना पुन: पोनगि गेल। ओना गामक एक ग्रुप, जेकरा कुकर्मी ग्रुप कहि सकै छिऐ, बल प्रयोगक योजना तरे-तर बनौने रहए। जइसँ कोनो रस्ते ने गाममे खुजतै। मुदा गामक विशाल समूहक, जे अधला काजसँ घृणा करैत, एक रंगाह विचार। एक तरहक विचारक पाछु कते तरहक सोच अछि। किछु गोटेक सोच जे गाममे एकटा कुकर्मी समाज अछि जे सदतिकाल किछु नै किछु करिते रहैत अछि। परोछा-परोछी तँ एक-दोसरकेँ गारि पढ़ैत अछि मगर, बेर एलापर सभ एक मुहरी भऽ जाइत अछि। तँए घटना ओहन अस्त्र छिऐ जइसँ ओइ समाजकेँ काटि-काटि लतियौल जा सकैत अछि। किछु गोटेक विचार जे जहिना तीनू गोरे दसगरदा जगहपर जुल्म केलक तहिना समाजक बीच लतियौल जाए। किछु गोटेक विचार जे हम सभ मनुष्यक समाजमे रहै छी नै कि जानवरक समाजमे। तँए मनुष्यक समाज बने। भलहिं मनुष्यक समाज बनबैक जे प्रक्रिया होइत अछि ओइ प्रक्रियाकेँ क्रियान्वित कएल जाए। ललबाक विचार सभसँ भिन्न। किएक तँ जै लड़कीक संग दुरबेबहार भेल छलै ओ ओकर ममियौत बहीन। ललबा कलकत्तामे ड्राइवरी करैत अछि। दुर्गापूजामे गाम आएल रहए। जै दिन घटना भेल ओइ दिन ओ बुझबे ने केलक। जखैनसँ बुझलक तखैनसँ देहमे आिग लगि गेलै। मनै-मन योजना बना नेने रहए जे धनिकक टेरही केना झाड़ल जाइ छै से समाजकेँ देखा देबै। नीक मौका हाथ लागल हेन। मुदा मनमे इहो शंका होय जे दयानन्द कक्काक आयोजन छियनि जँ कहीं आगूमे आिब जेताह तँ सभ विचार चौपट भऽ जाएत। सोचैत-विचारैत तइँ केलक जे चाहे जे होय मुदा बिना जुत्तियौने नै छोड़ब। भलहिं जिनगी भरि जहलेमे कियए ने रहै पड़ए।

गामक सभ टोलक लोक, गोटि-पंगरा छोड़ि, बैसारमे आएल। प्रो. दयानन्द उठि कऽ ठाढ़ भऽ कहए लगलखिन- "ऐ बेरक दुर्गा-पूजामे जे घटना गाममे घटल ओ समाजक लेल बड़का कलंक छी। ऐ घटनाकेँ जत्ते निन्दा कएल जाए ओते कम होयत। कते गोटे बुझैत हेबै जे अनगौआँ लड़की छल मुदा ई बुझब हमरा सबहक पड़ाइनवादी विचार हएत। जइसँ रंग-विरंगक अधलासँ अधला घटना होइत रहत आ हम सभ मुँह तकैत रहब। तँए एहेन-एहेन घटनाकेँ रोकए पड़त।"

बिचहिमे जे ग्रुप हंगामा करए चाहैत छल उठि-उठि हल्ला करए लगल। हल्ला देख सभ उठि कऽ ठाढ़ भऽ विरोध करए लगल। ललबा प्रो. दयानन्द दिस तकलक। दयानन्दक मुँहक रूखि तँ नै बदलल मुदा नोरसँ आँखि, करिया मेघ जकाँ, लटकि कऽ निच्चाँ मुँहे जरूर भऽ गेल छलनि। बिजलोका जकाँ ललबा चमकि कऽ फाँइट चलबए लगल। तीनूकेँ असकरे ललबा मारि कऽ खसा देलक। जाबे सभ शान्त भेल ताबे तँ तीनूक गाल-मुँह फुइल गेल मुदा तैयो ललबाक गरमी कमल नै। जहिना खून केनिहारकेँ आरो खून करैक गरमी खूनमे आिब जाइत अछि तहिना ललबोकेँ भेल। मुदा चारू दिससँ सभ पकड़ि ललबाकेँ घिचने-घिचने कात लऽ गेल। दुनू हाथ पकड़ि दयाबाबू फुसफुसा कऽ कहलखिन- "अगर समाजमे एक्कोटा बेटा अन्यायक खिलाफ अपनाकेँ उत्सर्ग कऽ देत तँ सैकड़ो बेटा धरतीमाता गोदमे पैदा भऽ जाएत। मन थीर करह। ओना समाजक सभ तरहक समस्याक समाधान खाली मारिये टा सँ नै हएत आ ने केवल पनचैतियेसँ हएत। किएक तँ समस्या दू तरहक होइत अछि पहिल घटना विशेष परिस्थितिक होइत जबकि दोसर सत्ता-विशेष वा बेबस्था विशेषक होइत अछि। अखुनका जे समस्या अछि ओ बेबस्था विशेषक छी तँए एहेन समस्याकेँ बलेसँ रोकल जा सकैत अछि। नै तँ कोनो नै कोनो रूपमे चलिते रहत, मरत नै।"

प्रोफेसर दयानन्दक विचार सुनि ललबा बाजल- "कक्का, अहाँ लग किछु बजैत संकोच होइए मुदा आइ तीनूक खून पीब लैतिये। भलहिं जिनगी भरि जहले कियए ने कटितौं। फाँसियेपर कियए ने चढ़ितौं। की लऽ कऽ एलौं आ की

लऽ कऽ जाएब। जखन मरनाइ अिछये तँ लड़ि कऽ कियए ने मरब जे सड़ि कऽ मरब।''

ललबाक बात सुनि मुस्कुराइत प्रो. दयानन्द कहलखिन- ''अल्होमे लोक गबैत अछि 'रनमे मरे दोख नै लागे।' तहिना महाभारतमे व्यासोबाबा कहने छथिन जे इन्द्रासनक अधिकारी वएह छी जे अन्यायक विरूद्ध रनक्षेत्रमे ठाढ़ भऽ अपन बलि चढ़ाओत। मुदा जे भेल से उचित भेल। ऐसँ आगू नै बढ़ह। अगर जँ ऐसँ सुधरि जाएत तँ बड़बढ़ियाँ नै तँ ओकर फल आन थोड़े भोगत। तूँ एतै रहह।''

कहि आगू बढ़ि दयानन्द सोचए लगलाह जे समाजक अध्ययन नीक नहाँति नै भेल अछि। लोकक जे रूखि बनि गेल अछि ओ कखनो बेकाबू भऽ सकैत अछि। तँए सभकेँ गामपर जाइले कहि दिऐ। कहि तँ देलखिन मुदा कियो मैदान छोड़ैले तैयार नै भेल। सभ अड़ल। विचित्र स्थितिमे अपनोहु पड़ि गेलाह। मनमे नाचए लगलनि जे सभसँ पहिने हमहीं केना मैदान छोड़ि देब। मुदा रहनौं तँ लोक मानि नै रहल अछि। दोहरा कऽ कहलखिन- ''सभ गोटेक परिवार आइयेसँ नै बहुत दिनसँ एकठाम रहैत एलौं आ आगुओ रहब। तँए सभकेँ मिल-जुलि रहैक अछि। ककरो संग कियो अधला करबै तँ झंझट हेबे करत। एक परिवारक झगड़ा गामक माने समाजक झगड़ा बनि जाइत अछि। तँए झगड़ाकेँ रोकैक उपाए एक्केटा अछि जे ओहन कारणे ने उठै जइसँ झगड़ा हुअए।''

कहि घर दिसक रास्ता पकड़लनि। मुदा सभ मैदानमे डँटले रहल। प्रो. दयानन्दक विचारक असरि तेनाहे सन लोकक मनपर पड़ल। किएक तँ एहेन-एहेन घटना पूर्वमे अनेको भऽ चुकल छलैक। जे सबहक मनमे उपकए लगल। दयानन्द बाट धेने आगूओ बढ़ल जाइत आ पाछु घुरि-घुरि सेहो देखथि। जे फेर ने कहीं पटका-पटकी शुरू हुअए। ओना ककरो हाथमे ने लाठी अछि आ ने हथियार मुदा देह तँ छै। पाँच बीघा आगू बढ़लापर लग्घी करैक लाथे बैस हिया-हिया देखथि। जे कियो हाथ-पाएर ने तँ फड़कबैए। मुदा से नै देखथि। पहिने मारि खेलहा सभ मैदान छोड़लक। पाछुसँ सभ

अपन-अपन रास्ता धेलक। ठंढ़ाएल रूखि देख अपनो उठि कऽ विदा भेलाह।

घरपर आिब प्रो. दयानन्द पत्नीकेँ कहलखिन- ''बँसपुरा जाइक समए दसे बजेक बनौने छलौं मुदा बैसारेमे बेसी समए लगि गेल। तँए आब नहाए नै लगब। झब दऽ खाइले दिअ। ताबे हाथ-पाएर धोइ लै छी।''
पतिक बात सुनि पत्नी किछु नै बजलीह। बुझल रहनि जे एना कते दिन भेल अछि जे काजक धड़फड़ीमे नहाइयो नै लगै छथि।

नओ बजे। बगुरबोनीक भगत कफलाक संग बँसपुरा काली-स्थान पहुँचल। भगतजीक हाथमे लोटा आ जगरनथिया बेंत। डलिबाह मनटुनक हाथमे सिक्कीक चौड़गर चंगेरी, जे मधुबनी बजारमे कीनने रहए। चंगेरीमे फूल-अछत, अगरबत्ती आ सलाइ रखने रहए। निरधनक कन्हामे मिरदंग लटकल। रविया आ सैनियाक हाथमे झालि। सोमना हाथमे एकटा बसनी; सरही आमक पल्लो आ पान-सातटा सुखल कुश। बुधबाक कान्हपर एकटा मुँठवासी बाँस, जेकरा छीपमे आल रंगक पताका आ तीन हाथ जड़िसँ उपर ओहने रंगक कपड़ाक टुकड़ा बान्हल। सभ एक सूरे 'काली महरानीक जय'क नारा लगबैत।

पूजा समितिक सदस्य बैस अपन काजक हिसाब लगबैत रहए। छलगोरिया मुरतीक अंतिम परीक्षण मंडपमे करैत रहए। भगतजीक क्रिया-कलाप देखए लेल एक्के-दुइये लोक जमा हुअए लगल। पूजा समितिक सदस्य अपन हिसाब-वारी रोकि भगतजी सभकेँ देखए लगल। काली मंडपक ओसारपर भगतजीक मेड़िया सभ अपन-अपन समान रखि हाथ-पाएर धोय लेल बगलेक पोखरि विदा भेल। अछींजल भरैले सोनमा बसनी लऽ लेलक। भगतजीक हाथमे लोटा। हाथ-पाएर धोय सभ कियो काली मंडपक आगू आिब एकटंगा दऽ दऽ गोड़ लगलकनि। गोड़ लागि निरधन मिरदंग चढ़बए लगल। सैनियाँ, रविया झालि बजबए लगल। पोखरिसँ आिब भगतजी हाथमे लोटा नेने ठोर पटपटबैत मंडपक आगू ठाढ़ भऽ आँखि बन्न कऽ सुमिरन करए लगल। बुधबा मंडपक

आगूमे थोड़े हटि कऽ धुजा गाड़ए लगल। बरसपतिया भगैत उठौलक- ''हे काली मैया।''
जना सभ काजक बँटबारा पहिने कऽ नेने हुअए तहिना। ठाढ़े-ठाढ़ भगतजी देह थरथरबए लगल। गोसाँइ आबि गेलखिन। भगतजीक आगूमे डलिबाह दुनू हाथे डाली पकड़ने। थोड़े कालक बाद भगतजी चंगेरीमे सँ फूल-अछत लऽ उत्तर मुँहे खूब जुमा कऽ फेकलक। फेर फूल-अछत लऽ गंगाजीक नाओं लऽ दछिन मुँहे फेकलक। चारि मुट्ठी चारू दिस फेक पाँचम मुट्ठी उपर फेक जोरसँ बाजल- ''ओ..... ओ.....। कहि अपन परिचए कालीक नाओंसँ देलक। कालीक नाओं सुनि डलिबाह बाजल- ''हे माए, किछु वाक् दियौ?''
भगत- ''ऐ जगहक भाग्य चमकि गेल। एकरा निच्चाँमे साक्षात् गंगाजी बहै छथिन। ई स्थान बनने, गाममे कोनो डाइन-जोगिनक किछु नै चलत। एते दिन गामक लोक बड़ कलहन्तमे रहै छलै मुदा आब सभ खुशीसँ रहत। कोनो कुशक कलेप ककरो नै लगत।''

गामक खुशहाली सुनि पूजा समितिक सभ सदस्यक मनमे नव आनन्दक जन्म भेल। देवनाथ पूछलक- ''हे माए, अहाँ की चाहै छी?''
''ई स्थान हमर छी। अखन धुजा गारि पीरी बनेलौं। सभ दिन पूजो करब आ बेरागने-बेरागन गोसाँइयो खेलब। जेकरा जे कोनो उपद्रव देहमे हेतै ओ डाली लगाओत। फूल दैते छुटि जेतै।''

धुजा गारि, पीरी बना बुधबा तुलसियोक गाछ रोपि देलक। समितिक सभ चुपचाप भऽ देखैत रहए। ककरो मनमे कोनो शंके नै उठल। किएक तँ अनेको स्थानमे गहवरो रहैत अछि। मुस्की दैत देवनाथ पूछलक- ''हे मैया, अपन कोनो पहचान दियौ?''
झपटि कऽ भगत बाजल- ''तूँ जे जानक बदला जान गछने रहह से देलह। जखैन जान गड़ूमे रहह तखैन के बचौने रहह। गड़ू मेटा गेलह तँ सभ किछु बिसरि गेलह। अखनो धरि जे बचल छह से स्त्रीयेक धरमे। जेहने तोहर

स्त्री धरमात्मा छथुन तेहने तूँ पापी छह। हुनके धरमे अखन धरि बचल छह। नै तँ कहिया ने तोहर नाश भऽ गेल रहितह।''

भगतक बात सुनि देवनाथक मनमे लड़कीबला घटना ठनकल। मुदा किछु बाजल नै। चुपचाप दुनू हाथ जोड़ि बाजल- ''हे माए, बिसरि गेल छलौं भने मन पाड़ि देलह।''
देवनाथपर सँ नजरि हटा भगत जोगिनदरकँ कहलक- ''तूँ जे कबुला केलह से देलह। जखैन जान उकडूमे फँसल रहह तखन कते बेर कहि कऽ गछने रहह। ओना तोहर बारह आना ग्रह कटि गेलह सिर्फ चारि आना बँचल छह। तँए दान-पुन कऽ कऽ जल्दी ओकरो मेटाबह।''

जोगिनदरकँ ओइ रातिक घटना मन पड़ल जै राति रूपैया लऽ सेठक ऐठामसँ पड़ाएल रहए। दुनू हाथ जोड़ि बाजल- ''हे मैया, ठीके बिसरि गेल छलौं। जलदिये तोहर कबुला पूरा करबह।''
बीच-बचाव करैत डलिवाह बाजल- ''आइ पहिल दिन गोसाँइ जगबे कएलाह ऐसँ बेसी आब कोनो काज ने हएत।''

डलिबाहक बात सुनि भगत उत्तर मुँहे ठाढ़ भऽ दुनू हाथ उठा आँखि मूनि लेलक। काली देहसँ निकलि गेलखिन। सामान्ये आदमी जकाँ भगतो भऽ गेल। झालि-मिरदंग, भगैत सेहो बन्न भऽ गेल। आँखिक इशारासँ भगत डलिबाहकँ कहलक- ''काज सुढ़ियाएल अछि''
आँखियेक इशारासँ डलिवाह उत्तर देलक- ''हँ।''

समितिक सदस्य भगत लगसँ हटि पुन: बैसारमे आिब गेल। मुदा एकटा नव समस्या समितिक सामने उपस्थित भऽ गेल। समस्या ई जे कि गहबरो बनाओल जाए आिक धुजा उखारि कऽ फेक देल जाए। मुदा दुनू तरहक विचार उठि गेल। किछु गोटे गहवरक समर्थनो केलक आ किछु गोटे विरोधो

केलक। बीचमे मंगलकेँ किछु फुरबे ने करै। मने-मन सोचै जे ई तँ बेर परक भदबा आिब गेल। जँ मनाही करब तँ शुभ काज अशुभेसँ शुरू हएत। जँ नै करब तँ सभ दिना भदवा ठाढ़ भऽ जाएत। भगतकेँ मंगल चिन्हतो नै रहए मुदा बगुरबोनीक भगतक विषयमे बुझल रहै जे एकटा कोखिया गुहारि केनिहार भगत जहल गेल रहए।

वएह भगत छह मास जहल काटि हालेमे निकलल छलै। बगुरबोनीक गहवरकेँ बदनाम बुझि दोसर गहवर जगबए चाहैत अछि। भगता जहल कियए गेल? बगुरबोनीक भगता मथ-दुखीसँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि धरि करैत छलै। एक दिन एकटा नोकरिया अपन घरवालीकेँ लऽ कऽ कोखिया गुहारि करबए बगुरबोनी गहवर आएल। शुक्र दिन रहए। तीनू बेरागनमे शुक्र सभसँ नीक बुझल जाइत अछि। खूब डील-डालसँ डाली सजा अनने रहए। आन-आन कोखिया गुहारिमे कहालीक संग बुढ़-बुढ़ानुस स्त्रीगण सभ अबैत छलि तँए कहियो कोनो रक्का-टोकी नै होय। मुदा ओ बुड़िचोन्ह नोकरिया अपन घरवालीक संग अपने आएल। बुड़िचोन्ह एहेन जे कलकत्तामे नोकरी करितौ अस्पताल देखले ने रहए। पूजा ढारि भगत ओकरा कहलकै जे गहवरक सीमासँ हटि जाह। सौझुका समए रहए। अन्हारो भइये गेल रहए। ओकरा मनमे शंका जगलै। ओ हटैले तैयारे ने भेल। दुनू गोरेक बीच रक्का-टोकी शुरू भेल। रक्का-टोकीक बाद ओ गहवरसँ निकलि बहराक जाफरी लग ठाढ़ भऽ गेल। मुदा आँखि-कान ठाढ़ केने रहल। असकरे भगत आ ओ औरत गहवरक भीतर रहल। देह थरथरबैत भगत पहिने ओकरा माने औरतक देहपर हाथ देलक। औरत गुहारि बुझि किछु नै बाजलि। जखन भगत ओकरा पीरीक आगुमे पड़ैले कहलक तखन ओ जोरसँ घरबलाकेँ सोर पाड़लक। घरवालीक अवाज सुनि दौड़ कऽ आबि सोझे भगतपर हाथ छोड़ए लगल। भगतोक अपन घर छलै। केना अपना घरमे मारि खा बरदास करैत। हल्ला सुनि पान-सात आदमी पहुँच गेल। सभ भगतेक लाइग-भाइगक। भगतकेँ कहिते ओ सभ ओकरा थोपड़ा देलक। दू-चारि थापर मौगियोकेँ लगलै। वएह आदमी थाना जा दोसर दिन केस कऽ देलक। तेसरे दिन भगत जेल चलि

गेल।

जखनसँ जोगिनदर सुनलक जे चारि आना ग्रह बाकिये अछि जे दान-पुन केलासँ कटत तखनसँ मनमे उड़ी-बीड़ी लगि गेलै। मनमे होय जे भगत ठीके कहलक। जखन रूपैया लऽ टेम्पूपर चढ़लौं तखन ठीके कबुलो केलौं आ भरि रस्ता गोहरियबैतो गेल रहियनि। भरि रस्ता काली माए, काली माए, सेहो जपैत गेल रही। एते बात जखन मिल गेल तँ चारि आना ग्रह केना झूठ भऽ सकैत अछि। दाने-पुन केलासँ ने ग्रह कटैत अछि। मुदा दान-पुन करैक तँ कतेको रास्ता अछि। तहूमे फुटा कऽ किछु नै कहलक। कियो भोज-भनडारा करैए तँ कियो तीर्थ-स्थानमे धर्मशाला बनबैत अछि कियो-पोखरि-इनार खुनबैए तँ कियो स्कूल-कओलेज बनबैए। कियो अस्पताल बनबैए तँ कियो अन्न-वस्त्र दान करैत अछि। दान-पुन करैक तँ अनेको जगह अछि मुदा हम की करी? फेर मनमे एलै जे एते दिन ककरोसँ दोस्ती नै केने छलौं, तँए अपने फुरने किछु करैत छलौं। मुदा आब तँ मंगलसँ दोस्ती भऽ गेल अछि तँए पुछि लेब जरूरी अछि।

पूजा समितिक सभ सदस्य कालिये स्थानमे छल, किएक तँ औझुका काज सभसँ झनझटिया अछि कतौ दोकान बनबैक तँ कतौ चंदा माने बेहरीक। मुदा जोगिनदर मंगलकेँ बैठकसँ उठा कात लऽ गेल। कातमे लऽ जाए कहलक- “भाय, भगतजी ठीके कहलनि जे तोरा चारि आना ग्रह बाँकिये छह।”
मंगल- “तोरा अपनो विसवास होइ छह?”
“हँ। केना नै विसवास हएत। कोनो कि झुठेसँ गोसाँइ खेलाइए।”
जोगिनदरक बात सुनि मंगल मने-मन सोचए लगल जे एक दिस दोस्ती भेल आ दोसर दिस दुसमनीक रास्ता सेहो बनि रहल अछि। अखन धरि वएह ओझा-गुनी लोककेँ ओझरौने अछि, तैयो लोकक विसवास जमले छै। कोन जरूरी छलै जे बिना कहनहि सुननहि अपने मने चलि आएल। ठीके गोसाँइ जी कहने छथिन जे “भइ गति साँप छुछुन्दर केरी।” अगर भगतकेँ भगा देबै

तँ तेहन बबंडर करत जे पूजा पूजे रहि जाएत। जँ नै भगेबै तँ गहवर बना बड़का तमाशा ठाढ़ करत। सोचैत-विचारैत मंगल पुछलक- ‘‘तोहर अप्पन की विचार होइ छह?’’

‘‘भाय, जँ अपना मने करैक रहितए तँ तोरा कियए पुछितियह।’’

जोगिनदक विचार सुनि मंगलक मन आरो ओझरा गेल। कनी काल गुम्म रहि पुछलक- ‘‘भाय, तूँ केते दान करए चाहै छह। दान-पुनक अनेको जगह अछि’’

‘‘जते दान-पुनक जगह देखै छिऐ ओ लगले थोड़े हएत। जे लगले हएत वएह करब।’’

मंगलक मनमे फेर शंका उठल जे हो न हो, ई ई ने कहि दियए जे ईंटाक गहवर बना देबै। जँ से कहत तँ ने विरोध करैत बनत आ ने समर्थन। चपाड़ा दैत कहलक- ‘‘बड़ सुन्दर विचार छह। हमहूँ यएह कहैले छेलियह।’’ ‘‘मनमे होइए जे गाममे जते विधवा, नि:सहाय मसोमात अछि ओकरा सभकेँ मदति कऽ दिऐ।’’

मसोमातक नाओं सुनि मंगलक मनमे खुशीक लहरि दौड़ गेल। हँसैत बाजल- ‘‘बड़ चिक्कन बात बजलह। मुदा मसोमातक विषयमे कने बुझह पड़तह।’’

‘‘की?’’

‘‘अपना ऐठाम दू तरहक मसोमात अछि। एक तरहक सरकारी अछि आ दोसर तरहक समाजक अछि।’’

‘‘नै बुझलौं?’’

‘‘सरकारी मसोमात ओ छी जे सरकारक देल सभ सुविधा पबैत अछि। आ समाजिक विधवा ओ छी जेकरा ने सरकार जनै छै आ ने ओ सरकारकेँ जनैत अछि। किछु गनल सरकारी मसोमात अछि जे ओकर पोसुआ छी। जे कोनो सरकारी सुविधा मसोमात सबहक लेल आओत ओ ओकरे भेटतै। अजीब खेल सरकारो आ मसोमातोक अछि ओही पोसुआ मसोमातकेँ इन्दिरो आवासक घरो

छै आ बाढ़ि-बरखामे घरखस्सीक रूपैया सेहो भेटतै आ बाढ़िसँ क्षति फसलक क्षतिपूर्तिक रूपैया सेहो ओकरे भेटतै। ततबे नै, वृद्धावस्था पेंशन सेहो ओकरे भेटतै आ रोजगार चलबैक नाओंपर सबसीडी सेहो भेटतै। तँए सरकारी मसोमात छोड़ि जे निरीह समाजक मसोमात अछि, जँ ओकरा जीबैक उपाए भऽ जाय तँ उपाय केनिहारकेँ ऐसँ बेसी दान-पुनक फल कतऽ भेटतै। धन्यवाद ओइ माए-दादीकेँ दी जे सत्तरि-अस्सी बर्ख बितौलाक बादो जेठक दुपहरिया, भादवक झाँट आ माघक शीतलहरीमे, जी-जानसँ मेहनत करैत अछि धन्यवाद ओइ अस्सी बर्खक मैयाकेँ दी जे माथपर धान, गहूम, मकैक बोझ लऽ कऽ दुलकी चालिमे गीत गुनगुनाइत खेतसँ खरिहान अबै छथि। तँए, कहबह जे अखन तँ मेलाक धुमसाही अछि, मेलाक पछाति सभकेँ अपन रोजगारक उपाय कऽ दिहक। काज करब अधलाह नै मुदा ओ शरीरक शक्तिक अनुकूल काज होय। अखन तत्-खनात पाँच दिनक मेला भरिक बुतात, मेला देखैक लेल किछु नगद, एक-एक जोड़ साड़ी आ आडी दऽ दहक। मुदा बीचमे एकटा बात आरो छह। आ ओ हमर मिथिलाक धरोहर सम्पत्ति सेहो छी। ओ ई जे जे जिनगीक चारू पायासँ हारि चुकल अछि, दुखक पहाड़क तरमे पिचाएल अछि मुदा आत्मबल एत्ते सक्कत छै जे दान लैसँ आना-कानी करतह। तँए पहिने जा कऽ ओइ मैया सभकेँ गोड़ लागि कहिहक बाबी, समाजरूपी परिवारक अहूँ छी आ हमहूँ छी, तँए कमाइबलाक ई दायित्व बनि जाइत अछि जे परिवारमे वृद्ध आ बच्चाक सेवा इमानदारीसँ होय। हम अहाँकेँ मदति सेवाक रूपमे दऽ रहल छी। जरूर ओ बेचारी हँसि कऽ लए असिरवाद देथुन।''

मंगलक विचार सोझे जोगिनदरक करेजमे घुसल। करेजमे घुसिते तिलमिला गेल। जना ओइ मसोमात सबहक हृदए जोगिनदक हृदेमे धक्का मारि प्रवेश करए चाहैत होय। मन पसीज गेलै। ओना जै गाममे जोगिनदक जनम भेल छलै ओइ गाममे अनेको मसोमात पहिनौ छलि मुदा जे रूप आइ देखलक ओ पहिने नै देखने छल। कँपैत मनसँ जोगिनदर बाजल- ''भाय, जे कहलह से

अखने कऽ लै छी। मुदा ऐसँ मन नै मानि रहल अछि। मेलाक बाद नीक जकाँ विचारि किछु करब।''

प्रोफेसर दयानन्द, साइकिलसँ सोझे बँसपुरा विदा भेला। गामक सीमा टपिते देखलनि जे एकटा शिक्षक (जेकर बहाली शिक्षा मित्रमे हजार रूपैयापर भेल) बीचे रस्तापर साइकिल लगा मोबाइल कानमे सटौने रहए। मुदा किछु बजलाह नै। मनमे भेलनि जे एक तँ अहिना अबेर भेल अछि तइपर सँ किछु कहबै आ रक्का-टोकी शुरू करत तँ अनेरे आरो समए लगत। मुदा मन असथिर नै रहलनि। सोचए लगलाह जे अखन ने दरभंगा कओलेजमे छी, डेरो लगेमे अछि। मगर जखन एम.ए. पास केने रही तखन अपना साइकिलो ने रहए। पाएरे डेढ़ कोस चलि कओलेज पढ़बैले जाय। जहन कि देखै छी गामक शिक्षक गामक स्कूलमे काज करैत अछि आ मोटर साइकिलसँ जाइत अछि। हजार रूपैयाक नोकरी केनिहार तीन हजारक अपन जिनगी बनौने अछि। की ओइ शिक्षकसँ पूछि सकै छियनि जे अहाँ अपन जिनगीक सीमा बुझै छी? जँ नै बुझै छी तँ अहाँ पढ़ेबै की? बच्चा सभ अहाँसँ की सिखत? ई सभ सवाल मनमे उठिते दयानन्दक मन उलझि गेलनि। फेर मनमे उठलनि जे जहिना खढ़होरिमे पैसैले दुनू हाथसँ खढ़ हटबए पड़ैत छै तहिना सभ उलझनकेँ मनसँ हटबैत बँसपुराक संबंधमे सोचए लगलाह।

सिसौनी बैसारक समाचार बिरड़ो जकाँ लगले चारू भागक गाम सभमे पहुँच गेल। बँसपुराक काली-पूजा समितिक बैसारमे सेहो सिसौनियेक चर्च चलैत। प्रो. दयानन्दकेँ देखते मंगलो आ देवनाथो उठि कऽ ठाढ़ भऽ दुनू हाथ जोड़ि प्रणाम केलकनि। प्रणाम कऽ मंगल दयानन्दक हाथसँ साइकिल पकड़ि-मंडपक बगलमे लगा देलक। साइकिल ठाढ़ कऽ मंगल दयाबाबूक हाथ पकड़ि बैसारमे लऽ गेलनि। समितिक बिचहिमे एक साए एक रूपैया चंदा दऽ पुछलखिन- ''एकाएक अहाँ सबहक मनमे काली पूजा केना आएल?''

प्रोफेसर दयानन्दक प्रश्नमे रहस्य छिपल छलनि। तँए कियो किछु उत्तर देबे ने केलकनि। सिसौनियेक दुर्गा-पूजाक घटनाक प्रतिक्रियास्वरूप भऽ रहल अछि। जै बातकेँ छिपबैत कियो किछु नै बाजल। मुदा दयानन्दक प्रश्न ऐसँ अलग छलनि। हुनकर प्रश्न छलनि जे दुर्गा-पूजा (शक्तिक पूजा, संगठनक होइत) जहन कि काली-पूजा कालक, समैक- होइत। प्रश्न उठैत जे शक्तिक संचयमे समैक की योगदान होइत। मुदा अपन रहस्यमय विचारकेँ छिपबैत दयानन्द कहलखिन- ''बड़ सुन्दर काज अहाँ सभ केलौं। ऐसँ समाजमे नव चेतनाक उदय होइ छै। जे सभ समाजक लेल जरूरिये अछि।''

प्रोफेसर दयानन्द आ बँसपुरा काली-पूजा समितिक सदस्यक बीच गप-सप्प चलिते रहै कि हुनका माने दयानन्दकेँ तकैत बरहरबाक प्रोफेसर कमलनाथ मोटर-साइकिलसँ पहुँचलथि। प्रो. दयानन्दकेँ कनडेरिये आँखिये कमलनाथ निच्चाँसँ उपर माने पाएरसँ माथ धरि देख कहलखिन- ''दयाबाबू, हम तँ अहींकेँ भजियबैत घरपर होइत एलौंहेँ।''
कमलनाथक बातक उत्तर नै दऽ दयानन्द मुस्की दैत कहलखिन- ''भाय सहाएब, कनिये काल ऐठाम देख लै छी, तहन दुनू भाँइ संगे चलब। अपने पढ़ाओल शिष्य सभ पूजाक आयोजन कऽ रहल अछि।''
देवनाथो आ मंगलो, काओलेजमे दयानन्दसँ पढ़ने छल। तँए दयानन्दकेँ विशेष सिनेह रहनि। प्रोफेसर कमलनाथ सेहो बिचहिमे बैस गप-सप्प सुनए लगलाह। पूजाक सभ बेबस्था बुझि दयानन्द मंगलकेँ कहलखिन- ''अखन तँ ओहिना बुझै दुआरे आएल छलौं मुदा रातिमे सभ -परिवार सहित- देखैले आएब। कनी काल आरो थम्हितौं मुदा भाय सहाएब कमलबाबू आिब गेल छथि। भाय सहाएबकेँ तँ सभ नै चिन्हैत हेबहुन। हमर गुरू भाय छथि। चारि बर्ख हिनकासँ पढ़ने छी। दस बर्ख पहिने कओलेजसँ सेवा-निवृत भेल छलाह। अपने परोसिया सेहो छथि। बरहरबे घर छियनि।''

प्रोफेसर दयानन्दो आ प्रोफेसर कमलनाथोक आगमनसँ देवनाथोक आ मंगलोक मनमे चारि-बर उत्साह बढ़ि गेल। दुनूक मनमे खुशी आ नव शक्तिक संचार शरीरमे भऽ गेल। प्रोफेसर कमलनाथ एक साए एक्कैस रूपैया चंदा देलखिन। दुनू गोटेकेँ आग्रह करैत मंगल कहलखिन- "गुरूदेव, आब अपने सभ कतऽ जाएब। रहिये जाइयौ। केयो अओताह अहाँ सभ आएले छी।"

मंगलक बात सुनि प्रो. कमलनाथ कहलखिन- "बौआ, अखन धरि तूँ सभ नै चिन्है छेलह। जहन कि एक अरिया-पटिया छी। महिनामे कमसँ कम पाँच बेर ऐ गाम होइत अबै-जाइ छी। औझुका संयोग नीक रहल जे सभसँ भेँट भऽ गेल। सिर्फ भेँटे नै चिन्हा-परिचए सेहो भऽ गेल। सभ एक्के अिरया-पटिया छी तँए एकठाम बैस सभ गामक उत्थानक लेल विचार-विमर्श कऽ आगू बढ़ैत रहब। ओना तँ हम बूढ़ भेलौं मुदा तैयो दौनक मेहोता बड़द जकाँ, जाधरि जीवैत छी ताधरि संग-साथ दैत रहबह। गामकेँ आगू बढ़बैले दू तरहक काज करैक जरूरत अछि। पहिल, मनुष्यकेँ जीबैले मूल आवश्यकता की अछि ओ बुझि ओकर पूर्ति करैक आ दोसर पाछुसँ अबैत क्रिया-कलापकेँ ढंगसँ देख अधलाहकेँ छोड़ि नीकक अनुशरण करैक। अखन तोहूँ सभ नमहर काजमे लागल छह ओकरा नीक-नहाँति सम्हारि लाए तकर बाद बुझल जेतैक।"

कहि कमलनाथ दयानन्दक संग किछु बगलि कऽ गप-सप्प करए लगलाह। कमलनाथकेँ दयानन्द पुछलखिन- "अपनेकेँ बड़ हलचल देखलौं। किछु खास बात छै, की?"

मुस्कुराइत कमलनाथ कहलखिन- "खास बात तँ अहीं कहब। करीब साढ़े नओ बजे भातिज आबि कऽ कहलक जे दयाबाबूक गाममे बैसार छलनि जइमे किछु गोटे हुनका गरियेबो केलकनि आ मारबो केलकनि। से कहाँ धरि की बात छिऐ?"

कमलबाबूक बात सुनि दयानन्द अवाक् भऽ गेलाह। मने-मन सोचए लगलाह जे बैसारमे तँ कियो आन गामक नै छल, तहन केना बात उड़ियाएल। फेर भेलनि जे इलाकाक सभ गाम एक-दोसरसँ जुड़ल अछि। कर-कुटुमैतीसँ लऽ कऽ

आवाजाही, हाट-बजार धरिक संबंध रहैत अछि। परिवारक काज ने साधारण ढंगसँ चलै छै मुदा सामाजिक काज तँ बिरड़ो जकाँ उड़ैत चलैत अछि भरिसक सएह भेल। फेर मनमे उठलनि जे जँ किछु अधलाह बात उड़बे कएल तँ ओइ संग घटनो उड़ल हएत। जखने घटना उड़ल हएत तखने विरोध स्वरूप चर्चा भेल हएत। से तँ अधलाह नै भेल। ओ तँ नीके भेल। अन्यायक विरोध करब तँ धर्मक रक्षा करब थिक। जहिना अन्यायक विरोध केलासँ रामायणिक बालिमे दोबर शक्तिक संचार भऽ जाइत छल तहिना तँ भरिसक इहो भेल। अन्यायिक बीच जरूर दहसति बढ़ल। ई तँ जिनगीक लेल पैघ उपलब्धि छी। मुस्की दैत दुर्गा-पूजाक घटल घटनाकेँ दोहरबैत कहलखिन- "सभ गाममे दस-बीसटा लुच्चा-लम्पट रहिते अछि। जे सदिकाल किछु ने किछु उकठ समाजमे करिते रहैत अछि ताड़ी-दारू पीब अनेरे ककरो गरियबैत रहैत अिछ। माए-वहिनकेँ देख पीहकारी भरैत रहैत अिछ। झूठ-फुसि सिखा लकठी लगबैत रहैत अछि ओहन-ओहन वृत्ति केनिहारक वृत्तिकेँ रोकब समाजक दायित्व बनि जाइत अछि हमहूँ सएह ने केलौं जँ दुर्गा-पूजामे रामेश्वरम् नै गेल रहितौं तँ एहेन घटना थोड़े गाममे होइत। जै गाममे हजारो बर्खसँ अनेको पीढ़ी-खुशीसँ रहैत आएल अछि ओइ गाममे एहेन-एहेन घटना भेने समाजमे आिग लागत आिक शान्ति रहत। जाधरि समाज शान्तिसँ नै रहत ताधरि आगू मुँहे ससरि केना सकैत अछि? यएह सभ सोचि गाममे बैसार केलौं। बैसारेमे किछु चक-चुक भऽ गेलै। समाजोकेँ धन्यवाद दी जे गलत काजक विरोधमे एकजुट भऽ ठाढ़ भेल। मुदा गलतियो केनिहार तँ बेबस्थेक फूल-फड़ छी, तँए ओहो कमजोर नहिये अछि।"

प्रो. दयानन्दक बात सुनि प्रो. कमलनाथ कहलखिन- "देखियौ, कोनो स्थानपर पहुँचैले रस्तो अनेक आ सबारियो अनेक तरहक होइ छै मुदा चलनिहार जँ यएह सोचैत रहि जाए जे ई नीक कि ओ, तहन ओ पहुँच केना सकैत अछि अपना इलाकाक दुर्भाग्य रहल अछि जे विचारक क्षेत्रमे पैघ-पैघ विचार कऽ लै छी मुदा कर्मक बेरमे शिथिल भऽ जाइ छी। कोनो विचार ताधरि महत्वक नै

बनैत जाधरि कर्मरूपमे नै आओत। कहैले तँ सभ कियो अपना बच्चाकेँ सिखबैत छथि जे बौआ अधलाह काज नै करिहेँ मुदा केला बाद गबदी मारि दै छथि। ऐसँ केना अधलाह काज मेटाएत। खाइर जे किछु मुदा अहाँक प्रसन्नतासँ हमहूँ प्रसन्न छी। आगूक बात हेतै। चलू।"

३

नीन टुटिते ओछाइनेपर दुखनीक मनमे उपकल आइये दीयोबाती छी आ काली-पूजाक मेलो गाममे हएत। एना कऽ बेटी श्यामाकेँ समाद देने छेलिऐ जे एक दिन पहिनहि धीया-पूताकेँ नेने अबिहेँ, से कहाँ आएल। ओहो बेचारी की करत? अन्न-पानि घरमे हेतै मुदा तीनू तूर जे मेला देखत तइले तँ दसो-बीस रूपैया खर्च हेबे करतै। जँ कहीं अपना हाथ-मुट्ठीमे नै होइ तेकरो इन्जाम ने करए पड़तै। भऽ सकैए जे तेकर ओरियान नै भेल होय। हँ, हँ, भरिसक सएह भेल हेतै। ओना आइ भरि अबैक समए छै, बेरो धरि एबे करत। खाइले चाउर आ देखैले रूपैया नेने आएत मुदा जरना तँ नै आनत। अखन धरि हमहूँ तँ जरनाक कोनो ओरियान नहिये केलौंहें। आब कहिया करब? भने मन पड़ि गेल। सोचने छेलौं जे श्याम आओत तँ घर-अंगनाक काज सम्हारि देत सेहो नहिये भेल। भरिये दिनमे की सभ करब। घरो छछाड़ैले अछि, ओलतियो ओहिना पड़ल अछि। केना असकरे एते काज सम्हरत? ओलतीमे माटि भरब, कि घर छछाड़ब आिक जरना आनब। काज देख अबूह लगि गेलै। असकताइत मने बिछानसँ उठि ओलती देखलक। मुदा रौदियाह समए रहने माटि देब जरूरी नै बुझि पड़लै। काज हल्लुक होइत देख मनमे खुशी एलै। ओलतियेमे ठाढ़ भऽ ओसार हियासलक। कतौ चुबाट नै देख सोचलक जे छछाड़बो जरूरी नहिये अछि। बाढ़निसँ झोल-झाड़ झाड़ि देबै। आरो मन हल्लुक भेलै। मन हल्लुक होइते बाढ़नि लऽ घरो-ओसारक झोल-झार झाड़ि, अंगनो बहारलक। बाढ़नि रखि घैला नेने कलपर गेलि। छउरेसँ मुँह धोइ-कुड़ड़ा कऽ घैल भरने आंगन आएल। पानि पीब तमाकुल निकालि सोचलक जे एक जूम खाइयो लेब आ दू जूम बान्हि कऽ बाधो नेने जाएब। सएह केलक।

ओना दुखनी पहिने तमाकुल नै खाति छलि, हुक्का पीबैत छलि। मुदा जहियासँ लबहदक मिल बन्न भेल तहियासँ छुआ भेट'बे बन्न भऽ गेल। जइसँ पीनी महग भऽ गेल। घर बन्न कऽ कान्हपर लग्गी नेने मारन बाध विदा भेल। बाधक अधा भाग निच्चाँ दिस खेती होइत बाँकी उपर दिस गाछिये कलम अछि बड़बड़िया आमक गाछक निच्चाँमे ठाढ़ भऽ सुखल ठौहरी सभ हियासए लागलि। रौदियाह समए रहने मनसम्फे जारन देखलक। जारन देख मन चपचपा गेलै। आँचरक खूँट खोलि तमाकुल निकालि एक चुटकी मुँहमे लेलक आ फेर बान्हि लेलक। तमाकुल मुँहमे लैते मन पड़लै जे उक बनबैले खढ़ कहाँ अछि आन साल लोक आसीन-कातिकमे खढ़होरि कटबै छलै ओइमे सँ दू मुट्ठी रखि लै छेलौं। जइसँ सालो भरि बाढ़नियो भऽ जाइ छलए आ उको बना लै छेलौं। मुदा जेहन बाढ़नि चड़िकाँटूक होइए तेहन राड़ीक थोड़े होइए। हारल नटुआ की करत? तते ने लोक बकरी पोसि नेने अछि जे कतौ एकोटा चड़िकाँटू रहए दैत अछि तहूमे तेहन रौदियाह समए भेल जे घसवाह सभ चोरा-चोरा घासेमे काटि खरहोरियो उपटा देलक। कथीक उको बनाएब? उक नै हएत तँ पावनि केना हएत। गाम कि कोनो शहर-बजार छिऐ जे ने लोक घरमे सीर-पाट रखैए आ ने उक फेड़ैए। सोझे छुड़छुड़ी-फटक्कासँ पावनि करैए। नजरि खिरा खढ़ भजिअबए लागलि। भजियबैत गंगबापर नजरि गेलै। बुदबुदाएल- ''त: अनेरे एते मन औनाइ छलए। घरे लग पोखरिक महारपर खढ़क जाक लगौने अछि ओहीमे सँ लऽ आनब। मुँहमे खैनी घुलिते थूक फेकलक। खढ़क ओरियान देख मन सनठीपर गेलै। बिना सनठिये उक केना बनाएब? मनमे खौंझ उठलै। खौंझा कऽ बाजए लागलि- ''सभ खेतबला पटुआ उपजौनाइ छोड़ि देलक। आब अपनो उक बना लिअ। हमसब तँ सहजे गरीब छी अपना खेत-पथार नै अछि मुदा खेतोबला उक फेड़ि लिअ। माल-जालकँ ठेका-गरदामी बना लिअ। आनह आब बजारसँ कीन कऽ प्लास्टिकक डोरी। अपने मालकँ डोरीक रगड़ा लगतै, चमड़ी उड़तै माछी असाइ देतै, घा हेतै, मरतै। तखन बुझत जे पटुआ नै उपजेने केहेन भेल।'' बजैत-बजैत दुखनीक तामस कमल। बिनु सनठिये जँ उक बनाइयो लेब तँ भोरमे सूप कथी लऽ

कऽ बजाएब। लछमी दिन छी जँ सूप बजा दरिदराकेँ नै भगाएब तँ ओ किन्नहुँ भागत। अपने गप-सप्प करए लागलि- ''कोनो की हमरेटा संठी नै हएत कि गामेमे ककरो नै हेतै?''

''अनका भेने हमरा की? कियो अपन दरिदरा भगौत आिक दोसराक?''

''जँ कोनो जोगार कऽ सभ संठीक ओरियान कऽ लेत आ हमरा नै हएत तखन तँ सबहक भागि जेतै आ हमरे रहि जाएत।''

दुनू हाथ माथपर लऽ संठीक चिन्तामे दुखनी डूबि गेल। रसे-रसे हूबा टूटए लगलै। मन औनाए लगलै। जहिना कोनो भारी चीज आंगुरपर पड़ि गेलासँ छटपटाइत तहिना संठीक सोगसँ मन छटपटाए लगलै। तरे-तर नजरि गाममे टहलबए लागलि। एकबेर टहला कऽ देखलक तँ कतौ नै संठी अभरलै। फेर दोहरा कऽ टहलबए लागलि। फेर नै कतौ अभरलै। मन कहै जे बिनु संठिये उक अशुद्ध हएत। अशुद्ध उक गोसाँइक आगूमे केना फेड़ब। ओहो की बुझताह। फेर मनमे भेलै गरीब लोककेँ एहिना सभ चीजक खगता रहै छै मुदा कहुना तँ जीविये लइए। देवतो-पितरकेँ बुत्ता नै छन्हि जे अपनो पावनि-तिहारक आिरयान करताह। संठी ताकब छोड़ि डिहवार स्थानक भागवत मन पड़लै। भागवत मनमे अबिते महाभारतक कृष्णकेँ कुरूक्षेत्रमे शंख फूकैत देखलक। मुदा जखन व्यासजी अर्थ बुझबए लगलथिन कि तै काल खैनी खाइक मन भेलै। आँचरक खूँटसँ खैनी निकालि चुनबए लागलि। अर्थ सुनबे ने केलक। भागवतक कम्मे बात रहै मनसँ निकलि गेलै। फेर संठियेपर मन आिब गेलै। पटुआक संठीक बदला चन्नी आ सनैपर नजरि पहुँचलै। सनै आ चन्नीपर नजरि पहुँचते मने-मन अपसोच करए लगल जे अनेरे गिरहत सभकेँ दुसलिऐ। पटुआक खेती तँ बेपारी सबहक दुआरे छोड़लक। मेहनतो आ लगतो लगा उपजबैत छलै आ बेपारी सभ गरदनि कट्टी कऽ लै छलै। नीक केलक जे पटुआ उपजौनाइ छोड़ि देलक। अपना जते डोरी-पगहाक काज होइ छै ओ तँ सनइयो आ चन्नियोसँ कइये लैत अछि। मुदा बेपारियो सभकेँ भाभन्स कहाँ भेलै। जहिना गिरहतक गरदनि काटि धन ढेरियौलक तहिना प्लास्टिक आिब

सभटा खा गेलै। बड़का-बड़का करखन्ना सभ ओहिना ढन-ढन करै छै। चन्नी मन पड़िते दुखनीक मनमे खुशी उपकल। खूँटसँ तमाकुल निकालि-मुँहमे लेलक। पटुओ संठीसँ मोट-मोट संठी चन्नीक होइ छै। सूपो बजबैमे नीक हएत। खूब जोरसँ बजाएब जे दोसरे दिन दरिदरा पड़ा जाएत। चन्नी मन पड़िते घुरनापर नजरि गेलै। बान्हे कात खेतमे ओकरा खूब चन्नी भेल छलै। सोनो सुन्दर मुदा पटुआक सोन जकाँ सक्कत नै होइ छै। खैर जे हौ काज तँ सम्हैर जाइ छै। घुरनाक घरवाली अछियो बड़ आबेशी। जखने कहबै तखने बेसिये कए कऽ देत। जैललबा बौहू जकाँ धौंछ थोड़े अछि जे सोझोक वस्तु लाथ कऽ लेत। अनकर चीज लै बेरमे धौंछीक मुँह केहेन मीठ भऽ जाइ छै जना मुँहसँ मौध चुबैत होय। भगवान करौ जे सभ चीज बिला जाइ। तामसपर दुखनी सरापि तँ देलक मुदा लगले अफसोच करए लागलि जे अनेरे कियए सरापि देलिऐ। कहुना भेलौं तँ माइये-पितियाइन भेलौं किने? माइये-बापक सराप ने धीया-पूताकँ पड़ै छै। जेहेन चालि रहतै तेहेन फल अपने हेतै। बीस बर्खसँ कहियो थूको फेकए गेलिऐ। अपना आिगये-पानिये निमहै छी। आगि-पानिपर नजरि अबिते बेटी श्यामा मन पड़लै। एना कऽ समाद देने छेलिऐ जे एक दिन पहिने चलि अबिहें। अनका जकाँ कि तूँ असकरे छँ। हाथी सनक सासु छेथुन तखन तोरा घरक कोन चिन्ता छौ। फेर मनमे उठलै लछमी पावनि छी किने। सभ ने अपना-अपना घरमे पूजा करत। भरिसक तही दुआरे नै आएल। तमाकुल खाइक मन भेलै। अँचराक खूँट खोलि तमाकुल देखलक तँ एक्के जूम बुझि पड़लै। एक्के जूम देख सोचलक जे एकरे दू जूम बना लेब। मुदा टूटल दाँतक गहमे तँ हराएले रहत। एक्के जूम बना मुँहमे लेलक। तमाकुल लैते बेटापर मन गेलै। बेटा मन पड़िते दुखनी सोचए लागलि जे सालो भरि परदेशमे नै रहत तँ कमाएत कतए? अंदाजे मनमे एलै जे चारि-पाँच मास गेना भेल हेतै। मुदा चारि-पाँच मास झुझुआन बुझि पड़लै। फेर मन पाड़ि हिसाब जोड़ए लागलि। ठेकना कऽ मन पाड़लक जे आसीनमे गेल रहए। हँ, हँ आसिने रहए। खान-पीन चलैत रहए। हमहूँ पोखरिमे तेल-खैर चढ़ा कऽ आएल रही। अखैन कातिक छी। अयँ, तब तँ बरखोसँ बेसी

भऽ गेलै। ओह नै, पैछला आसीन नै छी किएक तँ ओकरा गेलापर नाइतक जनम भेल। ओहो छौड़ा दौड़ैए। कहुना-कहुना दू बर्ख भेल हेतै। आंगुरपर हिसाब जोड़ै लगल। दू बर्ख आ एक बर्ख तीन बर्ख ने भेल। तीन बर्ख मनमे अबिते चौंकि गेल। ने एकोटा पाइ पठौलक आ ने एको बेर आएल। मनमे खुशी उपकलै। छौड़ा फुटि कऽ जुआन भऽ गेल हएत। कोनो कि खाइ-पीबैक दुख हेतै। आब तँ चिन्हलो ने जाएत। दाढ़ी-मोछ सेहो भऽ गेल हेतै। आओत तँ बियाहो कइये देबै। असकरे नीक नै लगैए। बिनु धिया-पूताक अंगना कोनो अंगना छी। लोके ने लछमी छी। मगन भऽ दुखनी आँखि बन्न कऽ फड़ल-फुलाएल परिवार देखए लगलीह। जहिना पोखरिमे नावपर चढ़ि झिलहोरि खेला उतड़ि कऽ महारपर अबैत तहिना दुखनियोकेँ भेल। तकिते विचार बदलि गेलनि। मनमे उठलै जे जँ कहीं छौड़ा ओनै वियाह-तियाह कऽ नेने हुअए आ गाम नै आबै तखन की करब। गामोमे तँ कते गोरेकेँ देखबे केलिऐहैं। अखन धरिक खुशीक मनमे एकाएक पानि पड़ि गेलै। निराश मने सोचए लागलि जे जुगे-जमाना तेहेन भऽ गेल जे केकरा के की कहतै। आब ककरो बेटा-बेटी थोड़े पाँजमे रहै छै। जेकरा जे मन फुड़ै छै से करैए। छौड़ा सभ जहाँ बौहू देखलक कि माए-बाप बिसरि जाइए। मने उनटि जाइ छै। आँखिमे नोर ढबढ़बा गेलै। आँचरसँ नोर पोछलक। नोर पोछिते मनमे उठलै जाबे पैरूख अछि ताबे तक ने ककरो पमौजी केलिऐ आ ने करबै। जै दिन पैरूख घटि जाएत तै दिन बुझल जेतै। जिनगियो तँ तहिना अछि कोनो कि ठीक अछि जे पैरूख घटलेपर मरब। पहिनौ मरि सकै छी तइले सोगे की करब। बेटा जँ उड़हड़िये जाएत तँ उड़हरि जा। बेटापर सँ नजरि हटि बेटीपर गेलै। बेटीपर नजरि परिते मनमे आशाक उदय भेलै। आशा जगिते मुँहमे हँसी एलै। सात घर दुश्मनोकेँ भगवान हमरा सन बेटी देथुन। साक्षात् लछमी छी। अपने फेरल नुआ कियए ने दिअए मुदा कहियो ओढ़ैसँ पहिरै धरि वस्त्रक दुख अखैन तक भेलहैं। ओकरे परसादे तीनटा कम्मर घरोमे अछि जमाइयो तेहने छथि जे अपने माथपर उठा कऽ अन्नो-पानि दइये जाइत छथि। आश जगिते दुखनी

जारन तोड़ए उठल।

आँखि उठा गाछमे सुखल ठौहरी हियासए लगलीह। रौदियाह समए भेने मनसम्फे सुखल ठौहरी गाछमे। जारन देख मन खुशीसँ नाचि उठलै। मनमे गामक सुख नचए लगलै। अखनो गाम गामे छी। शहर बजारमे तँ लोक जरना कीनैत-कीनैत तबाह रहैए। मन पड़लै सिंहेश्वर स्थानक मेला। एक्के साँझ भानस केलौं तइमे दस रूपैया जरनेमे लगि गेल। ई तँ गुन रहए जे सात-आठ गोरे रही जे सबे रूपैया हिस्सा लागल। नै तँ सवा रूपैयाक जरना चुल्हिये पजारैमे लगि जाइत। एक सूरे दुखनी दूटा गाछमे लग्गीसँ ठौहरी तोड़लक। जारन देख अबूह लगि गेलै जे कहुना-कहुना तँ पाँच बोझसँ बेसिये भऽ जाएत। उगहौ पड़त ने। घरो कि कोनो लगमे अछि। पाँच बेर उघैत-उघैत दुपहर भऽ जाएत। मुदा भीड़ो हएत तँ कहुना-कहुना पनरह दिन निचेनो रहब। फेर मनमे उठलै जे जँ कहीं ऐ बीचमे श्यामा आिब गेल हएत तँ अंगने-अंगने खोज-पुछाड़ि करैत बौआइत हएत। मुदा छोड़ियो कऽ केना जाएब। सभटा लोक लैये जाएत। से नै तँ सभटाकँ बोझ बान्हि लै छी आ एकटा लऽ कऽ जाएब। देखियो सुनि लेबइ। जँ नै आएल हएत तँ सभटा उघिये लेब। ओना जँ आएल हएत तँ कि ओहो मानत। दुनू माए-बेटी दुइये बेरमे उघि लेब। मन असथिर होइते तमाकुल खाइक मन भेलै। आँचरक खूँटपर नजरि पड़ते मन पड़लै जे तमाकुल तँ तखने सठि गेल। मुदा पथार लागल जारन देख मनमे एलै जे पावनिक दिन छी। बेसी अंहोस-मंहोस करब तँ सभ काज दुरि भऽ जाएत। अंगनोमे मारिते रास काज अछि। जारन बिछैले उठल। गाछक चारू भाग नजरि देलक तँ बीचमे एकटा घोरनक छत्ता सेहो खसल देखलक। छत्तासँ निकलि-निकलि घोरन पसरि गेल। पाँखिबला धोरन देख दुखनी डरा गेल। बापरे ई तँ डकूबा घोरन छी दुइये टा काटत तँ पराने लऽ लेत। मुदा छोड़ियो केना देबै। से नै तँ लग्गियेपर उठा कातमे फेक जारन बीछब। मुदा छोटका सभ तँ सौंसे पसरि गेल अछि। छोड़ियो केना देबै। जीबठ बान्हि छत्ताकँ कातमे फेक जारन बीछए लागलि। फेर मनमे

एलै जे ठौहरियो तँ दू रंगक अछि। मोटको अछि आ पतरको अछि। से नै तँ दुनूकेँ फुटा-फुटा रखि बोझ बान्हब। सएह करए लगल। ठौहरी बीछते रहै कि मन पड़लै, हाय रे बा बान्हब कथीपर। जुना तँ अछिये नै। अग-दिगमे पड़ि गेल। पहिने जे से मन पड़ैत तँ अंगनेसँ जुन्नो नेने अबितौं मुदा सेहो ने मन रहल। छोड़ि देबै तँ सभटा आने लऽ जाएत। एते बेर उठि गेल किछु खेनौ ने छी। मुदा जारन देख मनमे खुशी होय जे कहुना-कहुना एक पनरहिया तँ चलबे करत। जँ दू-चारि दिन आरो तोड़ि लेब तँ भरि जाड़क ओरियान भऽ जाएत। आँखि उठा घसबाहिनी सभ दिस तकलक जे कियो भेटत तँ ओकरे हाँसू लऽ कड़चिये नै तँ राड़िये काटि जुन्ना बना लेब। मुदा सेहो नै ककरो देखै छिऐ। हिया कऽ करजान दिस विदा भेल। मुदा ओहो केराक सुखल डपोर तँ बिना हँसुए काटल नै हएत। करजान पहुँचते देखलक जे करजानबला केरा घौड़ काटि भालरि आ थम्होकेँ काटि छोड़ि देने अछि जुन्ना देख मनमे खुशी भेलै। पान-सातटा जुन्ना लऽ आबि बोझ बन्हलक। पाँच बोझ। चारू बोझ गाछे लग छोड़ि एकटा नेने आंगन आएल।

आंगन आबि सोचए लगलि जे किछु बना कऽ खा लै छी। फेर मनमे भेले जे जखने आंगनक काजमे ओझड़ाएब तखने जारन बाधेमे रहि जाएत। तत्-मत् करैत पानि पीलक। घरसँ तमाकुल निकालि चुनबैत विदा भेल। पाँचो बोझ उघि लेलक। काठी जकाँ डाँड़ो आ गरदनियो तानि देलकै। देहो-हाथमे दर्द हुअए लगलै। हाथो-पाएर नै धोय ओसारेपर भुँइयेमे ओंघरा गेलि। थाकल-ठहियाएल देह ओंघराइत निन्न पड़ि गेल।

बेर टगि गेल। घरक छाहरि अंगनामे दू हाथ ससरि गेल। डेढ़ियापर सँ जोगिनदर सोर पाड़ए लगल- "काकी, काकी।"
दुखनीक निन्न नै टुटल। डेढ़ियापर सँ ससरि जोगिनदर आंगन गेल तँ देखलक जे भुँइयेमे निन्नभेर अछि। फेर बाजल- "काकी, काकी।"

ठाढ़ भेल जोगिनदरक मनमे उठल जे हमहूँ तँ पाइयेबला ऐठीन रहलौं मुदा सभ सुख-सुविधा रहितो ओकरा सभकेँ एहेन निन्न कहाँ होइ छै। देखै छी जे पेट खपटा जकाँ खलपट छै, भरिसक खेबो केने अछि कि नै। तहूमे पाएरो धुराएले देखै छिऐ भरिसक कतौसँ काज कए कऽ आएल अछि। अखन जे घरक सभ कुछ उठा कियो लऽ जाय तँ बुझबो ने करत। एकरा सबहक कोन दुनियाँ छै। जहिना चीनीक कीड़ाकेँ मिरचाइमे दऽ देल जाए तँ ओ मरि जाएत। जे स्वभाविके छै। मुदा कि मिरचाइक कीड़ा चीनीमे जीब सकत। विचित्र स्थिति जोगिनदरक मनमे उठि गेल। मुदा काजक धुमसाही, विचारक दुनियाँसँ झीक, ओकरा हड़बड़ा देलक। फेर काकी, काकीक आवाज देलक। मुदा निन्न नै टुटल देख कपड़ाकेँ ओसारेपर रखि दुखनीक घुट्ठी दाबए लगल। घुट्ठी दबिते दुखनीक निन्न टूटल। आँखि मुननहि बाजलि- ''अयँ गे सामा (श्यामा) काल्हि कियए ने एलै?''

दुखनीक अवाज सुनि जोगिनदरक मनमे भेल जे भरिसक काकी सपनाइए। घुट्ठीकेँ हिलबैत बाजल- ''काकी, काकी....।''

आँखि खोलि दुखनी उठि कऽ बैस गेल। हाफी कऽ जोगिनदर दिस तकलक। मुदा किछु बाजलि नै। मोटरी खोलि जोगिनदर जोड़ भरि साड़ी, साया, एकटा आंगीक संग दसटा दसटकही आगूमे रखि बाजल- ''अखैन धरि काकी अहाँ नहेबो ने केलौंहेँ।''

जहिना आम बीछिनिहार गाछक निच्चाँमे खसल आम देख उजगुजा जाइत तहिना दुखनी उजगुजा गेलि। बाजलि- ''बौआ, जारनि नै छलै वएह तोड़ए भिनसरे चलि गेलौं। ओकरे सम्हारैत-सम्हारैत दुपहर भऽ गेल। किछु खेबो ने केने छी। अराम करए लगलौं कि आँखि लगि गेल।''

दुखनीक बात सुनि जोगिनदर बाजल- ''काकी, अखैन अगुताएल छी तँए नै अँटकब। पूजा उसरला बाद निचेनसँ आिब आरो गप्पो करब आ कोनो कारोवार करैले मदति सेहो कऽ देब। अखैन मेला देखैले कपड़ो आ रूपैयो देलौंहेँ। जाइ छी।''

जोगिनदर उठि कऽ विदा भऽ गेल। मने-मन दुखनी हिसाब जोड़ए लागलि जे अधा रूपैयाक चाउर कीन लेब आ अधा हाथ-मुट्ठीमे रखि लेब। मेला-ढेलाक समए छी कखैन कोन भूर फूटि जाएत। फेर मनमे एलै जे श्यामो तँ अबिते हएत। ओहो चाउर अनबे करत। जखन अनदिनो नेने अबैए, अखन तँ सहजे पावनि छी। दुनू नाइत-नातिन सेहो एबे करत। ओकरो हाथकेँ दू-चारि रूपैया नै देबै से केहेन हएत। हम कतबो गरीब कियए ने छी मुदा नानी तँ छिऐ। साड़ी खोलि दुखनी देखए लागलि। साड़ी देख बुदबुदाएल- ‘‘एहेन साड़ीक कोन काज अछि। कोनो कि नव-नौतारि छी जे एहेन छपुआ पहिरब। ऐसँ नीक तँ तीन काजू मरकीन दैत जे केतबो मारि-धुसि कऽ पहिरतौं तैयो साल भरि चलबे करैत। सायाक कोन काज अछि। आब तँ सहजहि बुढ़ भेलौं। जहिया जुआन छलौं तहियो तँ डेढ़िये पहिरै छलौं। कोनो कि मंगैले गेल छेलिऐ मुदा जखैन घर पैस दऽ गेल तखैन तँ जे देलक सएह नीक। बेटी एबे करत ओकरे पुरना लऽ लेब आ ई दऽ देबै।’’

साड़ी-साया, आंगी समेट कऽ रखि दुखनी रूपैया गनए लागलि। फेर बुदबुदाएल- ‘‘सभटा दस टकहिये छी। दसटा अछि। दसटा दसटकही काए बीस भेल। दू-दू टा कऽ फुटा-फुटा रखि गनलक। पाँच बीस भेल। मनमे खुशी एलै। फेर लगले मनमे एलै जे आइ पावनिक दिन छी अखन धरि खेलौंहेँ कहाँ। सभ दिन खैहह पाबनि दिन ललैहह। मुदा भिनसरसँ तँ गाछिये-बिरछीमे रहलौं। सारा-गाड़ा नंघलौं। बिना नहेने केना भानस करब? सूर्य दिस तकलक। माथसँ निच्चाँ देख सोचलक आइ उपासे कऽ लेब। जाबे नहा कऽ भानस करए लगब ताबे तँ साँझे पड़ि जाएत। साँझमे लछमी पूजा करब कि अपने खाए-पीबए लगब। तहूमे अखन धरि ने खढ़ अनलौं आ ने संठी। जाबे से नै आनब ताबे उक केना बनाएब। दियारियो बनबए पड़त। करू तेलो आनए पड़त। घरमे जे तेल अछि ओ अँइठ भऽ गेल अछि केना दियारीमे देबै। काज देख दुखनीकेँ अबूह लगि गेल। पावनिक सभ किछु बिसरि गेल। नजरि बेटीपर गेलै। बेटीपर नजरि पहुँचते मनमे खौंझ उठले। बाजलि- ‘‘एना कऽ समाद पठौलिऐ से कियए ने आएल।’’

असमंजसमे पड़ि गेल।

तै बीच नवानीवाली बान्हेपर सँ सोर पाड़ि बाजलि- ''काकी, काकी, दैया आगू अबैले कहलकनिहेँ। उत्तरबरिया पोखरिपर दुनू बच्चो आ मोटरियो लऽ कऽ बैसल छन्हि।''

दैयाक नाओं माने श्यामा दऽ सुनि धड़फड़ा कऽ उठि घरमे कपड़ा रखि आँचरमे रूपैया बान्हि विदा भेल। तीन-चारिटा धिया-पूता सेहो संग लगि गेलनि। बेटी लग पहुँचते श्यामा उठि कऽ गोड़ लगलक। गोड़ लगिते तरंगि कऽ दुखनी बाजलि- ''अयँ गे, तोरा जानक काज नै छौ जे एते लदने एलेहेँ।''

माइक बातकेँ अनसून करैत श्यामा दुनू बच्चाकेँ कहलक- ''नानीकेँ गोड़ लाग।''

बच्चाकेँ देख दुखनी हरा गेलि। सभ बात बिसरि गेलि। आँचरक रूपैया निकालि एक-एक टा दस-टकही दुनू बच्चाकेँ हाथमे दऽ बाँकी अस्सियो रूपैया श्यामा दिस बढ़ौलक। रूपैया देख श्यामाक मनमे उठल। भरिसक बौआ पठौलकेहेँ। मुस्की दैत माएकेँ पुछलक- ''की सभ बौआ पठौलकौहेँ?''

बौआक नाओं सुनि दुखनीक मन फेर औनाए गेल। नजरि बेटापर गेलै। बेटापर नजरि पहुँचते मनमे तामस उठलै। बाजलि- ''कतऽ छौड़ा हराएल-ढराएल अछि तेकर कोन ठेकान अछि। अखन धरि ने कहियो चिट्ठी-पुरजी पठौलक आ ने एक्कोटा छिद्दी। ओम्हरे कतौ कोनो मौगी सने उढ़ढ़ि गेल कि की। से कि कोनो पता अछि''

माइक बात रोकैत श्यामा बाजलि- ''एना कियए बजै छेँ। माए छीही कनी ठर-ठेकानसँ बजमे से नै।''

बेटीक बात सुनि मायक मन बेटासँ हटि बेटीपर पुन: आबि गेल। बाजलि- ''दुनू बच्चो आ मोटरियोकेँ केना आनल भेलौ?''

मुस्कुराइत श्यामा बाजलि- ''अपने एतऽ तक पहुँचा गेलखिन।''

जमाए दऽ सुनि दुखनी बाजलि- ''एक डेग आगू घर नै देखल छलनि जे ऐतथि।''

“गाममे मेलो होइ छै आ पावनियो छिऐ तँए कहलखिन जे घरपर गेने ओझरा जाएब। चारि थान माल असकरे माए बुते सम्हारल नै ने हेतै। परसू एथुन।”

परसू सुनि दुखनीक मन थीर भेल। छोटका बच्चाकेँ कोरामे लऽ जेठकीकेँ आगू कऽ विदा भेल। घरसँ कने पाछुऐ रहै कि दछिनसँ एक गोटेकेँ हाथमे बैग, फुलपेंट-शर्ट पहीरिने अबैत दुनू गोटे देखलक। मुदा कियो चिन्हलक नै। बदलल चेहरा भुखनाक। भुखनो अंगने दिससँ अबैत आ दुनू गोटे दुखनियो अंगने दिस बढ़ैत। घर लग आबि भुखना दुखनीकेँ कहलक- “माए।”
भुखनाक माए कहब दुखनी सुनलक मुदा अनठिया बुझि अनठा देलक। किछु नै बाजलि। मुदा श्यामा चीन्हि गेली। बाजलि- “बौआ हौ।”
बौआ सुनि दुखनियो चौंकलीह। ताधरि भुखना लग आबि माएकेँ पाएर छुबि गोड़ लगलक। दुखनी अवाक् भऽ गेलि। आँखिमे नोर ढबढ़बा गेलनि। निच्चाँसँ उपर धरि भुखनाकेँ निग्हारए लगलीह।
करेज दहलि गेलनि। वामा बाँहिसँ नातिकेँ दबने आ दहिना तरहत्थीसँ आँखि पोछि विह्वल होइत बजलीह- “आँइ रौ बौआ तूँ तँ समरथ भऽ गेलैं। चिन्हबे ने केलियौ। आंङै-समांगे नीक रहै छलँ किने। एते दिनपर कियए एलँ। कि बुझि पड़ै छेलौ जे घरमे कियो ने अछि। कोनो कि हम मरि गेलियौ। रूपैया नै कमेलँ तँ नै कमेलँ मुदा छुछो देहे तँ अबितँ। अखैन तँ हम अपने थेहगर छी।”
श्यामक माथ परक मोटरी पकड़ैत भुखना बाजल- “दाय, तोहर माथ अगिया गेल हेतौ।”
“नै-नै कथीले तूँ लेबह। आब कि अंगना कोनो बड़ दूर अछि। मुदा बलजोरी भुखना श्यामक माथपर सँ मोटरी उताड़ि अपना माथपर लेलक। आद्र स्वरे दुखनी बाजलि- “बौआ, रस्ता तँ भुखले आएल हेबह।”
“नै गै। खाइत-पीबैत एलौं कि।”
“बौआ, अंगनो गेल छेलहक कि रस्तेसँ रस्ता छह?”

“अंगनामे बेग रखि देलिऐ। घर बन्न देखलिऐ तँ तमोरियावाली भौजीकेँ पुछलिऐ। वएह कहलनि जे दायकेँ आनए काकी आगू गेल छथि।”

भुखनाक बात सुनि दुखनीकेँ तामस उठल। बाजलि- “आँइ रौ छौड़ा, अंगना गेलेँ तँ गोसाँइकेँ गोड़ लगलेँ की नै?”
“घर बोन देखलिऐ तँ बेगकेँ ओसरेपर रखि तोरा तकैले विदा भेलौं।”
“हम कोनो बिलँत गेल छेलौं। ताबे तूँ हाथ-पाएर धो कऽ अंगनेसँ गोसाँइकेँ गोड़ लागि लैतेँ से तोरा बुते नै होइतौ। जाबे हमरा तकैले गेलेँ ताबे जँ कोइ बेग चोरा लेतौ, तब की करबीही।”
“हमरा देखते मारे धियो-पूतो आ जनीजातियो सभ आबि गेल। ओते लोकमे के बेग चोराओत।”
फुसफुसा कऽ माए बेटीकेँ पूछलक- “दाय, किछु खाइयोबला सनेस छौ। देखै छीही छौड़ाक मुँह केहेन सुखाएल छै।”
“हँ। असकरे दुआरे कते अनितियौ। पाँच गो दलिपूड़ी अछि।”
“अच्छा, बड़बढ़ियाँ। हम तँ अखैन धरि नहेबो ने केलौंहेँ।”
“कियए? पावनिक दिन छिऐ तैयो ने नहेलेँ।”
“छुट्टियो ने भेल। भिनसरेसँ जारनिक ओरियानमे लागल छलौं। बोझ उघैत-उघैत मन ठहिया गेल। असकता गेलौं। ने भानसे केलौं आ ने नहेबो केलौंहेँ। ओहिना ओसारपर ओघड़ेलौं कि नीन आबि गेल। जोगिनदरा आबि कऽ उठौलक। नै तँ सुतले रहितौं। देखही जे साँझ लगिचाएल जाइ छै ने अखैन तक उकक ओरियान भेलहेँ आ ने साँझ-बतीक।”

आंगन अबिते दुखनी-भुखनाकेँ कहलक- “बौआ, पहिने पाएर-हाथ धो कऽ सिरा आगूमे गोड़ लागह। तखन किछु करिहह।”
भुखना सएह केलक। श्यामा सेहो घैलची लग जा घैला झुका एक चुरूक पानि निच्चाँ खसा ओइमे दुनू पाएरक तरबा भीजा ओसारेपर सँ गोसाँइकेँ गोड़ लगलक। सौंसे अंगना धियो-पूतो आ जनीजातियो सभ कच-बच करैत।

छोटका बच्चा सभ फुटे काँइ-किचीड़ करैत रहए। तै बीच जुगेसराक बेटा रवियाक बेटाकेँ पाछुसँ पोनमे बिठुआ काटि दोगे-दोग घुसुकि गेल। छिलमिला कऽ रवियाक बेटा पाछु तकलक तँ शिबुआक बेटीकेँ देखलक। ओइ छौड़ाकेँ भेले जे यएह छौड़ी बिठुआ कटलक। हाँइ-हाँइ कऽ दू मुक्का लगा देलक। मुक्का लगिते शिबुआक बेटी चिचिया कऽ कानए लागलि। शिबुआक घरवाली सेहो पछबारि कात ठाढ़ छलि। बेटीकेँ कनैत देख कोरामे उठबैत पुछलक। ओ छौड़ी रवियाक बेटा नाओं कहलक। ओकरो हड़लै ने फुड़लै ओइ छौड़ाकेँ कान ऐंठि एक थापर लगा देलक। तै समए रवियाक घरवाली सेहो अबैत छलि। बेटाकेँ देख पुछलक। ओंगरीक इशारासँ छौड़ा शिबुआक घरवालीकेँ देखा देलक। शिबुआक घरवालीकेँ देखैबते रवियाक घरवाली लगमे जा झोंट पकड़ि मुँहपर थूक फेक देलक। सौंसे आंगन हड़-बिर्डो मचि गेल। छोटका धिया-पूता डरे पड़ाए लगल। तँ दोसर दिस हल्ला सुनि आन-आन अबौ लगल। दुखनीक बकारे बन्न। जहिना-जहिना शिवुआक घरवाली गारि पढ़ै तहिना-तहिना रवियाक घरवाली उनटबैत जाए। किएक तँ स्त्रीगणक झगड़ाक विशेषता होइत जे जे पाछु धरि गरियाओत ओकर जीत होइत। अंगनाक दृश्य देख भुखनो आ श्यामो दुनूक बाँहि पकड़ि-पकड़ि ठेल-ठालि कऽ अपना-अपना अंगना दऽ आएल। भगलाहा धिया-पूता सभ पुन: आबए लगल। जनीजातियो आ धियो-पूतोमे पाटी बनि गेल। किछु गोटे शिबुआक घरवालीक पक्ष लऽ आ किछु गोटे रवियाक घरवालीक पक्ष लऽ झगड़ाकेँ शान्त केलक। एक दोसराक दोख लगबैत अपना पक्षकेँ निर्दोष साबित करए लगल। मुदा जहिना पोखरिमे गोला फेकलापर पानिमे हिलकोर उठैत जे धीरे-धीरे शान्त भऽ जाइत तहिना शान्त भऽ गेल।

तत्-खनात तँ दुखनीक आंगन शान्त भऽ गेल। अंगनासँ बाहर रस्तो आ आनो-आनो जगहपर गुद-गुद-फुस-फुस होइते रहल। जहिना कोनो गाम वा घरमे आगि लगलापर पानि देने मिझा जाइत मुदा आगिक गरमी रहबे करैत तहिना भेल। आन सभ तँ आंगनसँ निकलि गेल मुदा दुखनीक मनक आगि

पजरि गेल। बेटी श्यामा दिस देख जोर-जोरसँ बजए लागलि- "हम ककरो बजबैले गेल छेलिऐ जे आबि पावनिक दिन अंगनामे झगड़ा केलक। पावनि कि कोनो एक दिनले होइ छै आिक सालो भरिले होइए। सालो भरि अंगनामे झगड़ा होइते रहत किने। तहूमे जे कियो डोरी बाँटि घरक पछुऐत बान्हि देत तखन तँ आरो सालो भरि झगड़ा होइते रहत किने?"

माइयक बोली बन्न करै दुआरे थोम-थाम लगबैत श्यामा कहलक- "अनेरे तूँ कियए आफन तोड़ै छँ। तोरा अंगनामे छेबे के करौ जे साल भरि झगड़ा हेतौ।"

बेटीक बात सुनि दुखनी दम कसलक। मुदा तैयो मनमे आगि लगले रहए। घरसँ बिछान निकालि श्यामा अंगनामे बिछौलक। बिछा अपन मोटरी खोललक। एक धारा चाउर, सेर तीनयेक खेसारीक दालि, पाँचटा दलिपूड़ी आ अपनो आ बच्चो सबहक कपड़ा निकालि रखलक। पाँचो पूड़ीमे सँ दूटा भुखनाकेँ एकटा कऽ सरस-निरस तोड़ि दुनू बच्चाक हाथमे देलक। एकटा अपना लेल आ एकटा माए लेल फुटा कऽ रखलक। बैग खोलि भुखना रूपैयाक गड्डी निकालि माएकेँ कहलक- "माए, यएह कमा कऽ अनलियौ।"
रूपैया देख माइयो आ वहिनो बाजलि- "झाँपह, झब दऽ झाँपह नै तँ लोक देख लेतह।"
रूपैया झाँपि भुखना दू जोड़ साड़ी आंडी आ सायाक कपड़ाक संग दुनू बच्चा लेल शर्ट-पेन्ट निकालि आगूमे रखलक। कपड़ा देख दुखनी विस्मित भऽ गेलि। मने-मन सोचए लागलि। जे ढहलेलो अछि तैयो तँ बेटे धन छी। मन पड़लै पति। भगवान ककरो अधला करै छथिन। मने-मन गोड़ लगलकनि। अही दुनू बेटा-बेटीक आशपर ने अपन वएस गमा कऽ रहलौं। संतोखे गाछमे ने मेवा फड़ै छै। माएकेँ विस्मित देख भुखना विस्कुटक डिब्बा निकालि माएक हाथमे दैत कहलक- "माए, ई मक्खनबला विस्कुट छी तोड़ेले अनलियौहेँ।"
हाथमे विस्कुटक डिब्बा लऽ उनटा-पुनटा कऽ देखए लगली। दुनू बच्चो आ श्यामोक नजरि डिब्बापर अँटकि गेल। तै बीच देहमे लगबैबला दूटा गमकौआ

साबुन, दूटा कपड़ाक साबुन पौवाही नारियल तेलक डिब्बा, निकालि दुखनीक आगूमे रखलक। चीज बौस देख दुखनी मन उधिया गेलै। मनमे हुअए लगलै जे अकासमे उड़ि गेलौं आिक नरकसँ सरग (स्वर्ग) चलि गेलौं आिक सपना देखै छी। अपनाकेँ संयत करैत बाजलि- ''पावनिक दिन छी, पहिने सभ कियो खा लै जाइ जाह। हम अखैन नै खाएब। दिनो खटियाइये गेल अछि कनी कालमे साँझ-बाती दइये कऽ खाएब।''
फेर मनमे एलै जे गोसाँइ डूबैपर अछि अखन धरि पावनिक तँ कोनो ओरियान भेबे ने कएल अछि ने उक बनबैले खढ़-संठी अनलौं आ ने दियारी बनेलौंहेँ। ने दियारीक टेमी बनबैले साफ सुती कपड़ा तकलौंहेँ आ ने दोकानसँ तेले अनलौंहेँ। तहूमे दुनू भाए-बहीन आएल अछि दुइयोटा तीमन-तरकारी नै करब से केहेन हएत। एक तँ लछमी पावनि तहूमे एते दिनपर छौड़ा आएल अछि।

पूड़ी खा पानि पीब श्यामा माएकेँ कहलक- ''चिकनी माटि सानि कऽ दियारी बना लै छी। तूँ दोकानक काज झब दऽ केने आ नै तँ किरिण डूबलापर दोकानोक काज नै हेतौ। ओहो पूजा-पाठमे लगि जाएत।''
बेटीक बात सुनि दुखनी बाजलि- ''आँइ गै दैया दोकान-दौड़ीक काजमे ओझरा जाएब तँ खढ़-संठी कखैन आनि उक बनाएब?''
काजक भरमार देख भुखना माएकेँ कहलक- ''तोँ दोसरे काज कर हम दोकानक काज कऽ लै छी।''
बेटाक बात सुनि दुखनी कहलक- ''अनठिया बुझि दोकानबला ठकि लेतौ।''
माइक बात सुनि भुखनाकेँ हँसी लागल। मने-मन सोचए लगल जे शहर-बजार घुमै छी हम आ गामक बनियाँ ठकि लेत हमरे। मुदा किछु बाजल नै। माएकेँ रोकैत श्यामा कहलक- ''आब जे ककरो ऐठीन खढ़-संठी मांगए जेबही से देतौ। पूजा बेर भऽ गेलै। काल्हिये कियए ने मांगि अनलेँ। नै तँ आइये दुपहर से पहिने मांगि अनितँ। आब लोक अपन-अपन चीज-बौस समेट घर आनत आिक तोरा खढ़-संठी देतौ।''

बेटीक बात सुनि दुखनी निराश भऽ गेलि। उकक आशा टुटि गेलै। बाजलि- ‘‘हम तँ बूढ़ भेलौं। आब कि कोनो पावनि-तिहारक ठेकान रहैए।’’

माइक टूटल आशा देख श्यामा सम्हारैत बाजलि- ‘‘खढ़-संठी छोड़ि देही। उक नै हएत तँ कि हेतै। गोसाँइ बाबाकेँ कहि देबनि जे एते तिरोट भऽ गेल। नै पान ते पानक डंटिए से तँ पूजा करबे केलौं।’’

सामंजस्य करैत दुखनी- ‘‘अच्छा हो। खढ़-संठी छोड़ि दै छिऐ। तूँ चिकनी माटिक दियारी बनाले। कनी रूखे कऽ माटि सनिहेँ। नै तँ आब नै सुखतौ। दिनो खटियाइये गेल। रौदो ठंढ़ा गेल। दोकानेक काज केने अबै छी।’’

तै बीच भुखना कहलक- ‘‘तूँ अंगनेक काज सम्हार। दोकानक काज केने अबै छी।’’

बेटाक बात सुनि दुखनी कहलक- ‘‘आँइ रौ, शुभ-शुभ कऽ तूँ गाम एलेहेँ, तोरा केना दोकान जाए देबौ। लोक की कहत?’’

‘‘लोक की कहतौ?’’

‘‘एतबो ने बुझै छीही जे सभ खिधांस करए लगत जे फलनीक खापड़ि केहेन तबधल छै जे अखने बेटा परदेशसँ एलै आ बेसाह अनैले दोकान पठौलक।’’

‘‘कोइ ने किछु बाजत। कोनो अनकर काज छिऐ जे कियो किछु बाजत। बाज कथी सबहक काज छौ?’’

‘‘एक रूपैयाक नून, दू गो तीमनो-तरकारी करब तँए पाँच रूपैयाक करू तेल सेहो लऽ लिहेँ। आठ अन्नाक जीर-मरीच, आठ अन्नाक हरदी आ आठ आनाक मिरचाइ सेहो लऽ लिहेँ। अल्लुओ घरमे नहिये अछि तरैबला अल्लू सेहो लऽ लिहेँ। दूटा पापड़ो लऽ लिहेँ। आइ लछमी पूजा सेहो छी तँए आठ अन्नाक मखान आ आठ अन्नाक चिन्नियो लैये लिहेँ। भरि राति डिबिया जरत तइले मट्टियो तेल कनी बेसिये कऽ लऽ लिहेँ।’’

‘‘आउरो किछु?’’

मन पाड़ि दुखनी बाजल- ‘‘आब तँ लोक धुमनक धूपो देनाइ छोड़िये देलक तँए एकटा धुपकाठीक डिब्बा सेहो लैये लिहेँ।’’

श्यामा दियारी बनबैले चिक्कनि माटि लोढ़ीसँ फोड़ए लगलीह। भुखना दोकान विदा भेल। दुखनीक मन असथिर भेल। मन असथिर होइते बेटीकेँ कहलक- ‘‘बुच्ची, हम नहाइले जाइ छी। किरिणो लुकझुकाइये गेल।’’
श्यामा- ‘‘बौआ जे साड़ी अनलकौ सएह लऽ ले।’’

बेटीक बात सुनि दुखनी हरा गेलि। मनमे नचए लगलै बेटाक कीनल पहिल साड़ी। जहियासँ अपने मुइलाह तहियासँ कहियो नव साड़ीक नसीव नै भेल। ओना बेटी अपन पहिरल साड़ी साले-साल दैते रहल तँए कहियो कपड़ाक दुख नहिये भेल। रोडे किनछरिमे गारल सरकारी कलपर दुखनी पहुँचल। कलपर पहुँचते मन पड़लै। साड़ी-लोटा कलेपर रखि चोट्टे घुरि कऽ आंगन आबि बेटीकेँ कहलक- ‘‘दाय, एकटा बात मन पड़ि गेल। बिसरि जाइतौं तँए कहैले एलियौ।’’
अकचकाइत श्यामा पुछलक- ‘‘कोन बात मन पड़लौ?’’
दुखनी- ‘‘बच्चा जे दोकानसँ आओत तँ कहि दिहैन जे अगिला चौमास बिकरी अछि दुइए कट्ठा छइहो। से कीन लेत। हमरा ने एक्कोटा घरसँ काज चलैत अछि मुदा नै ऐ साल तँ अगिलो साल वियाह कइए देबै। बाल-बच्चा हेतै। लघियो करैले कतऽ जेतै। लोक बढ़ने मालो-जाल पोसबे करत। से कतऽ बान्हत।’’
श्यामा- ‘‘अच्छा जो, पहिने नहाले। बौआ दोकानसँ आएत तँ मन पाड़ि देबौ।’’

४

आइ धरिक इतिहासमे बँसपुराक एहेन रूप कहियो नै बनल छल जेहन आइ देख पड़ैछ। ओना किछु अनुभवी बूढ़-पुरान लोकनिक कहब छन्हि जे आजुक बँसपुरा दोबरा कऽ बसल गाम छी। हुनका लोकनिक कथनानुसार करीब साठि-सत्तरि बर्ख पहिने ऐ गाममे कोसी प्रवेश केलक। तइमे पहिने जे गाम छल ओकर रूप-रेखा दोसर तरहक छलैक। आजुक जे मुख्य बस्ती अछि ओ पहिने बाध छलै आ जे बस्ती रहै ओ अखन बाध बनि गेल अछि। जेकर अनेको परमान अखनो भेटैत अछि अखनो बाधमे कतौ-कतौ पित्तरि आ तामक बरतन भेट जाइत अछि पहिलुका बस्तीमे गाछी-विरछी भरपुर छलैक। मुदा अखुनका जकाँ ने एते लोक छलैक आ ने एते परिवार। जखन पहिल बेर कोसीक बाढ़ि आएल तँ लोककेँ विसवासे ने होय जे कोसीक पानि छी। मुदा किछु अनुभवी लोक पानिक रंग देख परेखि लेलनि। किएक तँ कमला पानि जकाँ घोर-मट्ठा माने मटियाएल पानि नै रहए। पाँकक कोनो दरसे नै। पहिल साल एतबेपर रहि गेलै। एक तोड़ बाढ़ि आएल आ दस-बारह दिनक उपरान्त सटकि गेलै। दोहरा कऽ नै आएल। दोसर साल जे बाढ़ि आएल ओ छोटकी धार (नासी) जकाँ गामक बीचो-बीच बना देलक। ओइ साल गामक लोककेँ ई आभास नै भेलै जे एना धार गाममे बनि जाएत। जइसँ सभ गामेमे रहल। बाधक ऊँचका जमीनमे घर बना लेलक। केना नै बनबैत? एक तँ पुस्तैनी गामक सिनेह आ अपन सम्पतियो तँ छलै। छह मासक उपरान्त धार सुखि गेल। मुदा उपजो-बाड़ी आ गाछो-बिरीछ अधा-छिधा भऽ गेलै। किछु गोटेक मालो-जाल नष्ट भेलै। अनरनेबा, धात्री, लताम, कटहर इत्यादिक गाछ उपटि गेलै। दूटा पोखरि आ पाँचटा इनार धारक पेटमे समा गेलै। जइसँ लोकक मनमे डर पैइसए लगलै। गामक माटि-पानिक सिनेह सेहो कम हुअए लगलै। विसवासू जिनगी अनिश्चितता दिस बढ़ए लगलै। किछु गोटे आन गाम जा

बसैक बात सोचए लगल। मुदा जेकरा खेत-पथार रहै ओ करेजपर पाथर रखि रहैले मजबूर भऽ गेल। तेसरा साल बाढ़ि सभसँ भयंकर रूपमे आएल जइसँ गामक खेतो-पथारक रूप नष्ट भऽ गेलै, गाछो-बिरीछ नष्ट भऽ गेलै आ लोकोक जान अवग्रहमे फँसि गेलै। छातीमे मुक्का मारि सभ गाम छोड़ि देलक। सन्मुख कोसी गाम होइत बहए लगल।

तीस बर्ख, एक रफ्तारमे कोसी बँसपुरा होइत बहैत रहल। गामक सभ आन-आन गाम जा बोनिहार बनि गेल। अधिकतर लोक नेपाल पकड़ि लेलक। जेकरा-जत्तै जीबैक गर लगलै ओ ओत्तै रहए लगल। जाधरि लोककँ अपना पूँजी रहै छै ताधरि ने किसान वा कारोवारी रहैत अछि मुदा पूँजी नष्ट भेने तँ खाली-हाथ बँचि जाइ छै। बँसपुराक सभ बोनिहार बनि गेल। गामक, कोसी एलासँ पूर्वक, सामाजिक संबंध राँइ-बाँइ भऽ गेलै। पहिलुका समाज नष्ट भऽ गेलै। बँसपुराक सभ सुख लोक बिसरि गेल।

मातृभूमि ककरा कहै छै से बँसपुराक लोकक लेल परिभषे मेटा गेलै। किएक तँ मातृभूमि आ दुनियाँमे की अन्तर छै, जँ जन्मभूमिकँ मातृभूमि मानल जाए तँ मातृभूमिये नष्ट भऽ गेलै। जे सभ बँसपुरामे जन्म नेने छल ओ आन-आन गाममे रहि रहल अछि। जँ कहियो फेर बँसपुरा जगतै तँ ओ फेर आबि देखत किने। तहिना जे घुरि कऽ आओत ओ सभ तँ आने-आने ठाम जन्म नेने अछि तहन ओकर मातृभूमि कोन भेलै। जँ देशकँ मातृभूमि मानल जाए तँ देशो विभाजित भऽ जाइ छै। जे दू नाओं धारण कऽ लैत अछि तहन तँ देशोकँ केना मातृभूमि मानल जाए। जँ से नै, जै धरतीपर लोक जन्म लैत अछि ओकरा मानल जाए तँ दुनियाँक जते देश अछि सभ धरतिएपर अछि तहन कियए मातृभूमिकँ छोट आकारमे मानै छी। किएक ने दुनियाँकँ मातृभूमि मानल जाए?

कोसीक धार हटलापर जहन बँसपुरा जागल तँ रूपे बदलि गेल छलै। मुलाइम माटि बालु भऽ गेलै। गाछ-विरीछक जगह काश-पटेर, झौआ लऽ लेलक। अपन पुस्तैनी गाम बुझि पुन: लोक सभ आबए लगल। ने ककरो जमीनक सबूत, खतियान, दस्तावेज इत्यादि रहलै आ ने जमीनक ठर-ठेकान। मुदा गाम तँ हेतै। जहिना अदौमे माने साविकमे जंगल-झाड़ तोड़ि लोक बसो-बास आ उपजाउ भूमि बनौलक। रेन्ट फिक्स कऽ सरकारो जमीनक अधिकार देलक। सएह गाम बँसपुरा छी।

जहिना कहियो बँसपुरा पानिसँ दहा गेल छल तहिना पानिक अभाव गाममे भऽ गेल। ने एकोटा पोखरि-इनार रहल आ ने बाढ़िक पानि अबैत। पोखरि-इनार खुनब छोड़ि लोक कलसँ पानिक काज चलबए लगल। बरखा पानिसँ खेती हुअए लगलै। चापी जमीनकेँ बान्हि-बान्हि लोक पोखरियोक सेहन्ता मेटबए लगल। जइमे माछ-मखान, सिंगहार सेहो होइत अछि।

ओही बँसपुरामे आइ दिवालियो आ कालियो पूजाक उत्साह लोकक रग-रगमे दौड़ रहल अछि। आन-आन गामसँ अबैबला देखिनिहार लेल चारू भागक रास्ताकेँ गौआँ, अपन सीमा भरि, जते टूटल-टाटल छलै सभकेँ भरि-भरि कऽ सहीट बना देलक। जतए कतौ बोन-झार छलै सभ काटि-खोंटि साफ कऽ देलक। ओना सरकारो दिससँ बान्ह-सड़कपर माटि पड़ैत मुदा दूधक डाढ़ी जकाँ पड़ने बरसातमे भासि जाइ छलै। जइसँ जहिनाक तहिना रहि जाइत। मुदा ऐ बेर गौआँ अपन सम्पत्ति बुझि नीक जकाँ मरम्मत केलक। खाली बान्हे-सड़क टा धरि नै गामक जते पानि पीबैक साधन अछि सबहक मरम्मत सेहो केलक। ओना बैसाख-जेठ जकाँ देखिनिहार लोक थोड़े पानिये पीत मुदा तैयो पानि तँ पीबे करत गामक लेल सभसँ आश्चर्य ई भेल जे एकाएक सभ अपन जिम्मा केना बुझलक।

केवल पानियेक प्रबंधटा नै पाहुन-परकसँ लऽ कऽ हराएल-भौथिआएल देखिनिहारक लेल सेहो रहैक बेबस्था केलक। जेकरा दुआर-दरबज्जा छै ओकर तँ कोनो बाते नै, जेकरा नहियो छै ओहो सभ जोगार केलक। मोटका प्लास्टिक आनि-आनि घरे जकाँ बना लेलक। सबहक मनमे गद्‌गदी जे आबह कते पाहुन-परक अबैए। सुतैक लेल मोथीक बिछान सेहो बेसिये कऽ कीन-कीन रखि लेलक। अखन ने अनगौआँक लेल कीनलक मुदा पूजाक पछाति तँ अपने सुतबो करत आ अन्नो-पानि सुखाओत। ओना जे मेला देखए आओत ओ सुतत आिक मेला देखत। मुदा जे भरि राति मेला देखत ओ तँ दिनोमे सुतबे करत।

रघुनाथोकेँ धन्यवाद दिऐ जे खाइ-पीबैक समान- चाउर-दालि, तरकारीसँ लऽ कऽ जारनि-काठी धरिक तेहन कारोवार पसारि देलक जे कतबो लोक कीनत-बेसाहत तैयो नै सठतै। एक्के मेलाक कमाइमे ओहो धनिक भऽ जाएत। हँ तँ पूँजियो तँ वएह ने लगौने अछि। तेहेन ओकर बोहूक बोली मीठ छै जे एक्कोटा गहिकीकेँ थोड़े घूमए देत। सदिखन दोकानमे भीड़ लगले रहतै। कहबियो छै ने, जेकरा भगवान दै छथिन छप्पर फाँड़ि कऽ दै छथिन। भने दोकान घरेपर केने अछि। जँ मेलामे केने रहैत तँ गौआँकेँ घिनाष्ठे करैत, किएक तँ पाहुन-परकक सोझमे केना लोक चाउर-दालि कीनैत।

मुदा आश्चर्य भेल। बाप रे गाममे एते पाहुन-परक केना उनटि कऽ चलि आएल जना ककरो कोनो अपना काजे नै छै। तहूमे मरदसँ तीन गुना स्त्रीगण आबि गेल अछि स्त्रीगणोमे बेसी ओहन अछि जे पनरहसँ पच्चीस बर्खक अछि। सेहो एक मेलक माने चालि-ढालिक रहैत तब ने, चारि-पाँच मेलक छै। केना नै गामक हवामे खतरनाक कीड़ा फड़त। बम्बैइया सभ जे छै ओ सिर्फ छौड़े-माड़रि टा कँ थोड़े धड़त, बुढ़ो-बुढ़ानुसकेँ धड़बे करत। जहिना कोनो अनठिया चिड़ैकेँ गाममे एलासँ गामक सभ देखए जाइत तहिना ने बम्बैइयो चिड़ैकेँ देखत। मुदा नहियो देखत तँ अनुचिते हएत किने। आखिर ओहो ओहन रूप

कियए बनौने अछि। लोके देखैले किने। जँ से नै मनमे रहितै तँ एहेन पाँखि बनबैक काज कोन छलै। मनुक्ख तँ मनुक्ख छी किने? तइले एहेन हवा-मिठाइ बनैक कोन जरूरत छै। तहूमे जखन बनि गेल आ लोक नै देखै तँ बनैक मोले की? मोल तँ तखने हेतै किने जखन लोक ओकरा निङहारि-निङहारि तर-उपर देखत। तँए की ओकर चराओर गाम-देहातमे नै छै? जरूर छै। बम्बईये कलाकार सभ ने गामोक लोककेँ सिनेमाक माध्यमसँ सिखौलकैहेँ। लोकक मनो अजीब छै। जँ कनियो उपर उड़त तँ बुझि पड़ैत छै जे जमीनक सभ किछु हम देखैत छी मुदा हमरा कियो देखबे ने करैत अछि तहिना ने जमीनो परक केँ बुझि पड़ै छै। मुदा भ्रम तँ दुनूकेँ छै। उपर उड़निहार जँ जमीनक उपरका भाग देखैत अछि तँ जमीनो परक ने ओकरा निचला भाग देखैत अछि।

चारि बजैत-बजैत मेला देखिनाहारक भीड़ काली-स्थानमे उमड़ि गेल। ओना बूढ़ि-बुढ़ानुस अपन-अपन घर-अंगनाक ओरियानमे लागल। सिरपर सूर्यास्त होइते दीप जरौनाइसँ लऽ कऽ उक फेरनाइ सबहक सिरपर छन्हि। मुदा आन गामसँ आएल लोककेँ कोन काज छन्हि ओ तँ मेले देखैले आएल छथि। सभसँ खूबी तँ ई अछि जे मेला देखिनिहारे मेला देखैक वस्तु बनि गेल अछि। पूजा समितिक सदस्यक उपर जबाबदेही-भार रहने सभ जी-जानसँ निगरानीक संग-संग बेबस्थामे जुटल। सौंसे मेला पी-पाह होइत। ओना पूजाक प्रक्रिया निशा रातिमे शुरू हएत मुदा ओरियान तँ पहिनहिसँ करए पड़त। एहेन नै ने जे एक दिस पूजा शुरू हएत दोसर दिस समान जुटले ने रहत। एहेन नै ने जे पूजा काल जै वस्तुक जरूरत होय ओ अछिये नै। तँए पुजेगरियो आ पुरोहितो अपन सभ वस्तु पुरजीसँ मिला-मिला सैंत-सैंति रखथि।

ओना मेलाक आनन्द तँ तखन होइ छै जखन पूजा शुरू होइत अछि। नाचो-तमाशा तँ तखनेसँ ने शुरू होइ छै। मुदा तैयो सोलहन्नी नै तँ अधो-छिधो मेलाक आकर्षण तँ बढ़िये गेल छै। सभसँ अजीब तँ ई भऽ गेल छै जे दर्शक

गजपट भऽ गेल अछि। तेहन ने बजारू रूप बनि गेल अछि जे लड़का-लड़कीक भेदे मेटा गेल छै। चश्मा खोलि-खोलि बूढ़-पुरान सभ आँखि मलि-मलि देखैत जे ई छौड़ा छी आिक छौड़ी। मुदा तैयो आँखि ठीकसँ काजे नै कऽ रहल छन्हि। सभ अपन-अपन धुनिमे मस्त। तै बीच फटाक-फटाकक अवाज हुअए लगलै। फटाक-फटाकक अवाज सुनि सबहक कान ठाढ़ भेल। जे जेतै रहै ओ ओतैसँ अवाज अकानए लगल। मुदा दोकान-दौड़ी तै ढंगसँ सजल रहै जे सोझा-सोझी अवाज निकलबे नै करैत रहए। लगमे जे रहै ओ तँ अवाजो सुनै आ मारियो होइत देखै। किछु लोक बाहरो दिस भगैत रहै आ किछु गोटे दौड़-दौड़ एबो करैत रहए। उत्तर दिससँ देवन आ पछिमसँ मंगल दौड़ल आबि भीड़कँ चीड़ैत आगू पहुँचल। आगू पहुँचते देखलक जे बीस-पच्चीस बर्खक दूटा छौड़ा चेस्टरक दोकानक आगूमे मुक्का-मुक्की कऽ रहल छै। फांटि देख दुनू देवनो आ मंगलो सहमि गेल। मुदा तै बीच जोगिनदर दौड़ल आबि दुनू हाथ धुमबैत दुनू छौड़ाकँ गट्टा पकड़ि मारि छोड़ौलक। हल्लो शान्त भेलै। एकटा छौड़ाकँ देवन पुछलक- ''बौआ, अखन पूजा-पाठक समए छै तखन तोँ कियए मारि केलह?''

मुदा जै छौड़ाकँ देवन पुछलक ओ किछु विशेष मारि खेने रहए। तँए जाबत किछु बजै-बजै तइसँ पहिने दोसर बाजए लगल। ओइ छौड़ाकँ चोहटैत जोगिनदर कहलक- ''तूँ चुप रहह। पहिने जेकरा पुछलिऐ से बाजत।''

मुदा जोगिनदरक बातक असिर एक्को पाइ ओइ छौड़ापर नै भेलै। दुनू गामक पाहुन। तँए विकट संकट समितिक सदस्यक बीच भऽ गेल। विचित्र स्थितिमे सभ पड़ि गेल। अधिकतर लड़को आ लड़कियो परदेशिया। तँए मारिक डर ककरो हेबे ने करैत। लड़की सभ जोर दैत बाजलि- ''ब्रेशियरक दोकानपर लड़का सभकँ अबैक कोन जरूरत छै। ई तँ स्त्रीगणक सौदा छी?''

मुदा लड़को सभ लड़कीक बात मानए लेल तैयार नै। तेसर छौड़ा बाजल- ''लड़कीक उपयोगक वस्तु छी, एकर माने ई नै ने जे एकर जरूरत लड़का सभकँ नै छै।''

''लड़काकँ की जरूरत छै?''

“अपनो परिवार छै आ हितो-अपेछित तँ छैहे।”
लड़का-लड़कीक बीचक गप्प गजपट होइत देख देवन कहलक- “अखन सभ शान्त होउ। मेलाक पछाति एकर निबटारा हएत। अखन सभ मेला देखू।”

सूर्यास्तक समए। सूर्य तँ पूर्णरूपेण नै डूबल मुदा निच्चाँ उतड़ि गेलासँ लोकक आँखिसँ ओझल भऽ गेल। गामक धियो-पूतो आ चेतनो स्त्रीगण फुलडालीमे दियारी, सलाइ, अगरबत्ती आ खढ़क उक लऽ कऽ गामक जते देवस्थान अछि सभ दिस धरोहि लगि गेल। कियो डिहवार स्थान दिस जाइत तँ कियो महादेव मंदिर दिस। कियो धर्मराजक गहवर दिस तँ कियो हनुमान जीक स्थान दिस। गाममे पाँचेटा पुरना देवस्थान। छठम नबकामे काली स्थान बनल। ओना ठकुरवारी पहिने व्यक्तिगत छल मुदा महंथ जीक मुइलापर ओहो दसगरदे भऽ गेल। सभ स्थानमे दीप जरा, धुप दऽ सभ अपन-अपन आंगन आबि घर-आंगनमे दीप जरबैत माल-जालक थैर, इनार, कलपर सेहो जरौलक। किछु गोटे कुम्हारक बनाओल माटिक डिबिया तँ किछु गोटे दवाइ पीलहा शीशी सबहक डिबिया बना सेहो जरौलक। सौंसे गाम इजोत जगमगा गेल। काली स्थानक चारू जेनरेटर चलए लगल। जइसँ अन्हरिया रहितो इजोतसँ गाम दिने जकाँ भऽ गेल। ओना दिनमे मेघ जते उपर रहैत अछि रातिमे (अन्हार) निच्चाँ उतड़ि जाइत अछि।

दिवाली पावनिसँ गाम निचेन भऽ गेल। स्त्रीगण सभ भानस-भात करैमे लागि गेलीह। समए पाबि पुरूख सभ मेले दिस टहलि गेलाह। मेलाक आकर्षण देख किनको घरपर अबैक मने नै होइत रहनि। मुदा भरि राति तँ नाच-तमाशा चलिते रहत तँए बिना खेने-पीने रहबो कठिन बुझि अपन-अपन घर-अंगनाक रास्ता धेलनि। काली-मंडपमे पुजेगरी पूजाक ओरियानमे व्यस्त रहथि। मुजफ्फरपुरक जेहने नाटक तेहने मंचो बनल। एहेन मंच, आइ धरि ऐ इलाकाक लोक नै देखने रहथि। जेहने फइल स्टेज तेहने सुन्दर-सुन्दर रंगीन परदो लगाओल गेल रहैक। तेहने ऊँचगरो। कतबो देखिनिहार रहत तैयो

देखबे करत। अजीब ढंगसँ बिजलीयो लगाओल गेल रहैक। बजोक तेहने बेबस्था। मुजफ्फरपुरक मंचसँ कनियो उन्नैस बृन्दावनक रासक नै। मुदा दुनूमे अंतर साफ-साफ बुझि पड़ैत रहै। जेहने आधुनिकताक प्रदर्शन मुजफ्फरपुरक स्टेज करैत रहै तेहने प्राचीनताक बृन्दावनक मंच करैत रहए। कौव्वालीक मंच तँ ओते लहटगर नै बुझि पड़ैत मुदा मेल-फीमेलक दुनू स्टेज सटल रहने अपन आकर्षण बढ़ौने रहए। महिसोथाक मलिनिया नाचक मंच सभसँ दब। मात्र चारि-पाँचटा चौकी निच्चाँमे जोड़ने आ चारिटा खूटा गारि उपरमे आल रंगक चनवा आ एकटा परदा मात्र लगल रहैक। मंच दब रहितो मलिनिया नाचक कलाकार सबहक मनमे विशेष उत्साह रहै जे सभकेँ उखाड़ि देब। ओकरा सबहक मन गद्-गद् ऐ दुआरे रहै जे छुछे टीप-टापसँ सोझे काज चलै छै जे मौलिकता हमरा कलाकारमे अछि से अनकामे नै छै। संगहि जते देखनिहार हमर अछि ओते दोसराक नै छै। जहिना बजारमे अनेको दोकान रहितो सोना-चानी कीननिहार, सोने-चानीक दोकान पहुँचैत, किताब कीननिहार किताबे दोकानपर पहुँचैत अछि तहिना ने नाचो-तमाशाक छै।

नअ बजैत-बजैत मंच सबहक आगू देखिनिहारक ठट्ठ पड़ए लगल। केना नै पड़त? लगसँ देखब आ दूरसँ देखब मे सेहो अंतर होइ छै किने। मुदा समितिक सदस्य सभ बिचारि नेने रहै जे आगूमे अन गौआँकेँ बैसाएब। गौआँ तँ ठाढ़ो-ठाढ़ पाछुओसँ देख सकैत अछि। तहूमे अन गौआँकेँ कोनो ठीके नै अछि जे सभ दिन देखए एबे करत। मुदा गौआँक तँ अपन मेला छिऐक तँए एबे करत। कलाकार सभ मेक-अप करबो नै केने रहै कि देखिनिहार सभ पीकी मारब शुरू केलक। केना नै मारत? लोक देखैले आएल कि बैइसैले आएल अछि। कमसँ कम बजोबला सभ तँ मंचपर आबि सम बान्हह। समो बन्हैमे एकाध घंटा लगबे ने करतै। पैसा लऽ कऽ आएल अछि कि कोनो मंगनी आएल अछि जे समए ससरल जाइ छै आ अखन धरि स्टेज खाली रखने अछि। जनसेवा दलक सदस्य सभ कखनो मंचपर जाए शान्त करैत तँ

कखनो मर्द-स्त्रीगणक गजपट भीड़कँ सुढ़ियबैत।

चारू मंच बाजाक आवाजसँ गनगनाए लगल। देखिनिहारोक मन बाजाक धुनमे शरबत बनए लगल। कियो मने-मन गुनगुनाए लगल तँ कियो हाथक आँगरीसँ पोनोपर आ कियो-कियो ठेहुनोपर ताल मिलबए लगल। पूबसँ एक चिड़की मेघ -बादल- पुरबा हवाकँ संग केने उठल। हवाकँ उठिते देखिनिहारक औल-बौल मन शान्त हुअए लगल। धीरे-धीरे हवो तेज होइत गेल। करिया मेघ सेहो नमहर हुअए लगल। एकाएकी तरेगन डूबए लगल। जहिना-जहिना बादल पसरैत तहिना-तहिना हवो तेज हुअए लगल। काली-मंडपमे पुजेगरी घड़ी देख-देख पूजाक प्रक्रियाकँ आगू बढ़बए लगलाह। माए- वहिन गीत शुरू केलनि। जोरसँ मेघ बोली देलक। हवो बिहाड़िक रूप पकड़ए लगल। बुन्दा-बुन्दी पानि पड़ए लगल। मुदा पानिक शंका ककरो मनमे नै। किएक तँ रौदियाह समए रहने सभ निश्चिन्त जे ऐबेर मेघमे पानिये नै छै जे बरिसत। तहूमे जँ शुभ काजमे बुन्दा-बुन्दी हुअए तँ ओ आरो शुभ छी। तँए सबहक मन खुशी। मुदा पानिक बुन्नसँ मंचक आगूमे बैसल देखिनिहार एका-एकी उठए लगल। तड़तड़ा कऽ बड़खा शुरू भेल। बिजलोका सेहो तड़ाक-तड़ाक छिटकए लगल। जते विजलोका छिटकै तते मेघो गरजए लगल। गामक लोक घर दिसक रास्ता धेलक। मुदा अनगौआँ असमंजसमे पड़ि गेल जे आब भीजबे करब। मुदा बिहाड़ि तँ जान नै छोड़त। हारि कऽ अनगौआँ स्टेजक उपरो आ तरोमे पहुँच पानिसँ बचैक गर अंटबए लगल। इंजन बिगड़ै दुआरे जेनरेटरबला जेनरेटर बन्न कऽ देलक। सौंसे मेला अन्हार पसरि गेल। जहिना पानि तहिना बिहाड़ि अपन भीमकाय रूप बना नाचए लगल। सौंसे मेला 'साहोर-साहोरक' आवाज हुअए लगल। मुदा सुनैले ने बिहाड़ि तैयार आ ने बरखा। बिहारि तँ उड़ि कऽ पड़ा गेल मुदा मुसलाधार बरखा सवा-घंटा धरि होइते रहल। दोकान सबहक छप्पड़ उड़ने सभ समान तीत-भीज गेल। उड़बो कएल। ककराकँ देखत। सभ अपने जान बँचबै पाछु लागल। तै काल एकटा स्टेज दिससँ कनै-कुहरैक अवाज उठए लगल। तते लोक स्टेजक उपर चढ़ि गेल जे बल्ले सभ

टूटि गेल जइसँ खसि पड़ल। स्टेजक निच्चाँ जे लोक सभ बैसल रहै ओकरा उपरेमे उपरका खसल। ककरा की भेलै से तँ अन्हारमे देख नै पड़ैत मुदा कानै-कुहड़ैक आवाज टा सुनि पड़ै। छबेटा सिपाही डयूटीमे रहए। वएह बेचारा की करत। ककरा दोख लगाएत। पूजा समितिक सदस्य आ सिपाही मिल गर लगौलक। देवन आ जोगिनदर राती-राती पड़ा गेल।

खेला-पीलाक उपरान्त सजना पिता दुनियाँलालकेँ कहलक- ''बाउ, पाँच दिनक मेला छै। एक दिना रहैत तखैन ने देखैक धड़कफड़ियो रहैत। से तँ नै अछि। सोलहो आना घर-आंगन छोड़ि जाएबो उचित नै। किएक तँ जते लोक मेला देखए आएत ओ सभ की कोनो मेलेटा देखए आओत। कियो छौड़ा-छौड़ीक खेल करए आओत, कियो चोरी-चपाटी करए आओत। के की करए आओत से के कहलक। तँए अखैन हम दुनू परानी जाइ छी आ अधरतियामे आबि तोरा उठा देबह। तखन तूँ जैहह।''
सजनाक बात दुनियाँलालकेँ जँचल। मने-मन मानि लेलक। मुदा माए (तेतरी) बाजलि- ''राति-बिरातिकेँ देखए हम नै जाएब। साँझू पहरकेँ जाएब। काली-महरानीकेँ साँझो दऽ देबनि आ गोड़ो लागि लेबनि।''

माएक बात सुनि सजना किछु बाजल नै। मेला देखए विदा भेल। किछु कालक बाद सजनाक पत्नी (सितिया) सेहो स्त्रीगणक संग गेलि। पानि-बिहाड़ि उठिते सजना भागल। मुदा तैयो घर लग अबैत-अबैत नीक जकाँ भीज गेल। अंगनाक पानि जे निकलैत रहै तइठाम डेढ़िया लग आबि पिछड़ि कऽ खसि पड़ल। सौंसे देह थालो लगि गेलै आ ठेहुनमे चोटो लगलै। मुदा हूवा कए कऽ उठि ओइ पानिमे थाल धोय आंगन आएल। अखन धरि ने दुनियाँलाल सुतल छलै आ ने तेतरी। किएक तँ हवा देख तेतरी चुल्हि आ मालक घरक घूरक आगि मिझा ओछाइनपर आएले छलि। हवाक रूखि देख दुनियाँलाल पत्नीकेँ कहलक- ''तेहन हवा अछि जे भरिसक घरो ने ठाढ़ रहत। तहूमे

एक्कोटा खूटा लकड़ीक नै अछि। सभटा बाँसक अछि। बड़ गलती भेल जे चारिये टा खूटा बदललौं। सभ खूटाक जरि सड़ि गेल अछि।''

तै बीच पछुऐतक तीनू पुरना खूटा कड़कड़ा कऽ टुटि गेलै। नवके खूटा टा नै टुटलै। उत्तरबरिया-पूबरिया कोन लटैक गेलै। मुदा खसल नै। जाड़सँ थरथराइत सजना ओसारपर आिब माएकेँ कहलक- ''माए, भीज गेलौं। जाड़ो होइए। कनी लूँगी आ चद्दैर निकालि दे?''
घरेसँ माए कहलक- ''भीजलेहे धोतीक खूँटक पानि गाड़ि सौंसे देह पोछि ले। लूँगी आ चद्दैर दै छियौ।''

हाथक ऑंगरी सजनाक कठुआएल। मुदा तैयो कहुना-कहुना कऽ धोतीक पानि गाड़ि, अंगा निकालि सौंसे देह पोछलक। तेतरी डिबिया लेसए लगली। मुदा सलाइ सिमसि गेने बरबे ने कएल। अन्हारेमे हथोरि-हथोरि लूँगियो आ चद्दैरियो निकालि कऽ दैत बाजलि- ''घूरो कऽ दैतिऐ से सलाइये ने बरैए। तोंही टा एलँह आ कनियाँ?''
सजना- ''कहाँ कतौ देखलिऐ। पानिक दुआरे कतौ अटकि गेल हेतौ।''

दुनू गोटे गप-सप्प करिते रहै आिक रूपलालक घर कड़कड़ा कऽ खसल। रूपलाल दुनियाँलालक छोट भाए। रूपलाल घरेमे रहए। दू-चारी घर। कोनियाबला नै रहए। घरक दुनू चारक ओलती माटि पकड़ि लेलक आ दुनूक मठौठ ठाढ़े रहलै। पजराक दुनू टाट टुटि कऽ लबि दुनू भाग घेरने रहल। ओइ बीचमे रूपलाल दुबकल ठाढ़ भेल। जान अवग्रहमे जीवन-मृत्युक बीच पड़ल रहए। खूब जोर-जोरसँ हल्ला करै मुदा झाँट-पानिक दुआरे कियो सुनबे ने करै। एक तँ झाँट-पानि दोसर बान्हल माने घेराएल आवाज। किछु कालक उपरान्त मुनेसरी, जे दोसर घरमे रहए, सुनलक। अवाज सुनिते मुनेसरी केवार खोलि ओसारपर आएल कि बिजलोकाक इजोतमे घर खसल देखलक। खसल घर देखते बेटोकेँ उठौलक। दुनू गोटे जोर-जोरसँ हल्ला करए लगल।

मुनेसरीक अवाज सुनि दुनियाँलाल सजनाकेँ कहलक- ‘‘रौ सजना, रूपलालबाक घर खसि पड़लै। दौड़ कऽ जो, देखही जे कियो दबेबो केलै?’’

जाड़सँ कठुआएल सजनाकेँ बरखामे निकलैत अबूह लगै। मुदा की करत। मनमे द्वन्द्व सेहो उठि गेलै। एक दिस पित्तीक मोह तँ दोसर दिस पितियाइनिक बेबहारसँ कुपित। मुदा एहेन समैमे तँ जानक प्रश्न रहैक। दोस्ती-दुसमनी तँ जीवैतमे रहै छै। मन मसोसि कऽ लुँगीक फाँड़ बान्हि निकलल। हवो कमि गेल रहै मुदा बरखा होइते रहए। पाछुसँ दुनियाँलाल आ तेतरियो गेल।

रूपलालक दछिनबरिया घर खसल रहए। सजना पितियाइनकेँ कहलक- ‘‘काकी, एकटा इजोत आ हँसुआ नेने आउ? जाबे नीक-नाहाँति देख नै लेब ताबे केना किछु करबै।’’
हाँसू निकालि कऽ दैत पितियाइन बाजलि- ‘‘बौआ, चोरबत्ती तँ पित्तिये लग अछि।’’
हाँसू लैत सजना जोरसँ बाजल- ‘‘कक्का हौ, कनी टार्चक इजोत दहक?’’
घरक तरसँ रूपलाल बाजल- ‘‘चोरबत्ती तँ सिरमे लग रखने छलौं। उ तँ ठाठक तरमे पड़ि गेल अछि।’’
‘‘चोटो-तोटो लगलहेँ?’’
‘‘नै बौआ।’’
‘‘अच्छा, तूँ चिन्ता नै करह। हवो कम भेल आ बुन्नियो पतड़ाएल जाइए।’’
सजनाकेँ बुझबैत दुनियाँलाल कहलक- ‘‘बौआ, घड़फड़ नै करह।
(भावोसँ)- कनियाँ डिबिया नेसू।’’
मुनेसरी डिबिया लेसलक। इजोत होइते दुनियोलाल आ सजनो टाट हटबैक गर अँटबए लगल। ओलतीक खूटा जे टुटि कऽ कात भऽ गेल रहै ओकरा टाट देने घोसियबैत कहलक- ‘‘कक्का, ऐ दुनू टोनकेँ पकड़ि दुनू ठाठमे सोंगर लगा दहक। जइसँ ठाठ एम्हर-ओम्हर नै डोलतह।’’

एकाएकी दुनू सोंगर दुनू ठाठमे रूपलाल लगौलक। सोंगर लगिते सबहक मनमे खुशी एलै। सजनाकेँ दुनियाँलाल कहलक- "सौंसे टाट हटबैक जरूरत अखन नै छौ। दोग जकाँ बना पहिने आदमीकेँ बचा, तखन बुझल जेतै।"

हाँसूसँ तीन-चारिटा टाटक बनहन काटि सजना दोग जकाँ बनौलक। दोग बनिते रूपलाल बाजल- "बौआ, निकलै जोकर भऽ गेल। तूँ दुनू हाथे दुनू ठाठकेँ पकड़ने रहह।"

घरसँ निकलिते दुनियाँलालक पाएर पकड़ि रूपलाल कनैत बजए लगल- "भैया, अपन सवांग दुनियाँमे सभसँ पैघ होइ छै। अखन जे तूँ दुनू बापूत नै रहितह तँ घरेमे मरि जैतौं।"

शान्त्वना दैत दुनियाँलाल कहलक- "एना ढहलेल जकाँ कियए बजै छँ। अपन-विरान लोक अपने बनबैए। तूँ तँ जानिये कऽ छोट भाए छियेँ। समाज बड़ीटा होइ छै। गरीब लोक कोनो सुखे जीबैए। तखन तँ जाबे दुनियाँक दाना-पानी लिखल रहै छै ताबे काहियो काटि कऽ जीबे करैए। मन थीर कर। जे होइ कऽ छलै से भेलै। थरथर कियए कपै छँ।"

मुदा दुनियाँलालक बातक असरि दुनू परानी रूपलालपर नहिये जकाँ पड़ल। भीतरसँ करेज डोलैत। मनमे होय जे फेर ने घरक तरमे दवा कऽ मरि जाय। आंगन डेरौन लगए लगलै। जना किछु झपटैत होय तहिना बुझि पड़ै। मिरमिरा कऽ रूपलाल बाजल- "भैया, होइए जे सुति रहब तँ फेर दोसरो घर खसि पड़त।"

दुनियाँलालक मनमे एलै जे भरिसक डरे एना होइ छै। मुदा तैयो बोल-भरोस दैत कहलकै- "घर तँ गिरमा-गिरिए पड़लौ। आब कि दोहरा कऽ खसतौ। जे घर बँचल छौ ओकर भीत केहेन मजगूत छै। उ थोड़े खसत। तहूमे झाँटो-पानि बन्ने भेल। नै तँ चल हमरे लग सुतिहेँ। कनियाँकेँ पुछि लहुन जे घरमे सुतब आकि अहूँकेँ डर होइए। जँ डर होइए तँ सजने माए लग सुति रहतै।"

दुनियाँलालक विचार सुनि रूपलाल बाजल- "भैया, सगरे देह झोल-झाल आ थाल-कादो लगि गेल अछि। ओकरा पहिने धुअए पड़त।"

ओना सभकेँ थाल-कोदो लगल रहए। सभ कियो कलपर जा सगरे देह धोलक। कलपरसँ आबि मुनेसरी घर बन्न केलक। दुनू माए-पूत तेतरीक संग आ रूपलाल दुनियाँलालक संग धेलक। पूवरिया घरमे दुनियाँलाल भुँइयेमे ओछाइन ओछौने रहए। चौकी नै रहए। ओछाइनपर बैस सिरमा तरसँ चुनौटी निकालि रूपलालकेँ दैत कहलक- "पहिने तमाकुल चुना।"

सकरीकट तमाकुलक डाँट बिछैत रूपलाल बाजल- "भैया, आइ तँ मरि गेल रहितौं। जना हड़हड़ा कऽ घर खसल तना जँ ओछाइन छोड़ि सतरकी नै करितौं तँ चाहे मरि जैतौं नै तँ अंग-भंग भऽ गेल रहितए। मुदा माए-बापक धर्में कुशल कलेप नै लागल। नै तँ दुनियाँ अन्हार भऽ जाइत।"

रूपलालक विचारकेँ अंकैत दुनियाँलाल उत्तर देलक- "ई देहे तँ कुम्हारक बनाओल काँच बरतन जकाँ अछि। जहिना कँचका बरतन एक रत्ती धक्का लगने फुइट जाइत तहिना ने देहो छी। मुदा से लोक बिसरि दँतिया कऽ पकड़ने रहैए। जँ ई बात सभ बुझि जाए जे जिनगीक कोनो ठेकान नै अछि तखन अनेरे कियए झूठो-फूसि बजै छी आ अधलासँ अधला काजो करै छी। तँए जतबे दिन जीबै छी ओतबे दिन इमानदारीसँ कमा कऽ पेटो भरी आ जहाँ धरि भऽ सकै तहाँ धरि अनको उपकार करिऐ। यएह उपकार ने धर्मो छी आ मुइला बादोक जिनगी छी।"

मुँह बाँबि रूपलाल पुछलक- "भैया, फेनोसँ एकबेर आरो कहक?"

रूपलालक प्रश्न सुनि दुनियाँलाल मने-मन सोचए लगल जे भरिसक एकरा ज्ञानक उदए भेल जा रहल छै। फेर भेलै जे कोनो बेर पड़लापर एहिना लोकक मनमे नीक विचार जगै छै मुदा लगले रूकि जाइ छै। बुझबैत बाजल- "बौआ, अगर जँ लोक ई बुझि जाए जे ऐ देहक कोनो ठेकान नै अछि। कखन छी कखन नै छी तइले ककरो बेजाए कियए करबै। जँ ई विचार लोकक मनमे आिब जाए आ ओइ हिसाबसे अपन चालि सुधारि लिअए ते ककरो अधला हेतै। एक ते ओहिना लोक समस्या सभसे रेजानिस-रेजानिस रहैत अछि तइपर से सदिकाल लोको किछु नै किछु गड़बड़ करिते रहै छै।

केना कियो कखनो चैनसे रहत। तोंही कह जे केहेन बढ़ियाँ दुनू भाँइ जखन जरमे छेलौं तखैन तोरा कोनो भार छेलौ। खाली संग मिल कमाइ छेलँ। आिक नै? तखन भीने कियए भेलँ। जखन भीन भेलँ तखन जँ किछु कहितियौ ते कनियाँ कहितथुन जे भैया घर फुटबै छथि। तहूले झगड़ा होइतौ। तइमे नीक ने जे भरमे-सरम मुँह बन्न केने रहलौं। तहूँ बात थोड़े सुनितँ। जे कनियाँ कहितथुन सएह मानितँ। ई की कोनो हमरे-तोरेमे होइए से ते नै। सभकेँ यएह गति छै।''

पछबरिया घरमे तेतरी सुतैत। पूवरिया झटक भेने सौंसे ओसारो आ मुँह सोझे घरोमे पच-पच करैत। मुदा तैयो तेतरी चुल्हिक छौर छीट घरकेँ रूख बनौलक। जेठ रहितो बेचारी मुँहसच्च मुदा छोट रहितो मुनेसरी मुँहजोर। सदिखन अपन बात दोसरपर चढ़ाइये कऽ रखैत। जइसँ जखन कखनो दुनू दियादिनीमे कोनो गप होय तँ मुनेसरी चोहटि लै। मुदा आइ बिलमे जाइत साँप जकाँ मुनेसरीक मन सोझ भऽ गेल। जना सभ ताव मरि गेल होय, तहिना। हत्याराक खूनमे ताधरि गरमी रहै छै जाधरि फाँसीपर नै लटकैत अछि। मुदा फाँसीपर लटैकते सवितासँ सूर्यक उदए जकाँ ज्ञानक उदए होइत अछि तहिना आइ मुनेसरियोकेँ भेल। तेतरियेक विछानपर दुनू माय-पूत मुनेसरियो सुतल।

दुनियाँलालक बात सुनि रूपलाल गुम्म भऽ गेल। एक तँ दुनियाँलालक विचार मनकेँ झकझोड़ि देलकै तइपर सँ गिरल घरक सोग सेहो दबने रहए। कने काल गुम्म रहि रूपलाल मूड़ी डोलबैत बाजल- ''हँ, ई तँ सत्ते कहलह भैया।''

अपन किरदानीपर पचताइत देख दुनियाँलाल बाजल- ''आब तोंही कह जे जखैन दुनू भाँइ एकठाम छलौं तखन तोरा घरक कोनो भार छेलौ। जानियेकऽ तँ गरीब घरमे जनम भेल अछि। केहेन बढ़ियाँ दुनू भाँइ संगे बोनि-बुत्ता करै छलौं आ मिलानसँ रहै छलौं। अपना कत्ते खेते अछि। लऽ दऽ कऽ सात-सात कट्ठा बाधमे आ घरारी छौ। जेकरा बीघा-बीघे छै ओकरो हजार टा

भूर सदिकाल फुटले रहै छै, जइसँ मन घोर-घोर भेल रहै छै। जेकरा नै छै ओ तँ सहजे भूरेमे घोसियाएल रहैत अछि।''

दुनियाँलालक विचार सुनि रूपलालक मन केरा भालरि जकाँ डोलए लगल। ढेरो प्रश्न मनमे उठए लगलै। बेबसीक स्वरमे बाजल- ''की नीक की अधलाह से बुझबे ने करै छी। लोकक मुँहे जे सुनै छी से मानि करै छी।''

रूपलालक हारल मन देख दुनियाँलालक मन विचारक रास्तापर अंटकि गेल। मन हुअए लगलै जे की कहिऐ। एक दिस भाएक ममता दबैत तँ दोसर दिस स्त्रीगणक झगड़ासँ मन अकच्छ रहए। बिना किछु बजनहि दयासँ भरल आँखि रूपलालकेँ पढ़ए लगल।
पछबरिया घरमे दुनू दियादनी, एक वामा करे आ दोसर दहिना करे पड़लि। बीचमे चीत गरे मुनेसरीक बेटा सुतल। दुनूक मनकेँ पानि-बिहाड़िक घटना दबने रहए। जइसँ निन निपत्ता रहए। अनायास मुनेसरीकेँ नैहरक एकटा घटना मन पड़लै। घटना मनमे अबिते बाजलि- ''तेसराँ, हमरा नैहरमे एक गोरेक घर एहिना बिहाड़िमे खसि पड़लै। घरवारी घरेमे रहए। बेचाराकेँ चोटो खूम लगलै। डेनो टुटि गेलै आ कपारो फुटि गेलै। मुदा रहए कपारक जोरगर जे मरल नै। कपारक घा तँ छुटि गेलै मुदा डेन नै जुटलै। ओहिना लर-लर करै छै। बड़ कष्ट बेचाराकेँ होइ छै। अपना खेत-पथार नै रहने बोनि करै छलै। मुदा समांग खसने बोहुओ छोड़ि कऽ पड़ा गेलै। हारि-थाकि कऽ बेचारा भीख मंगैए।''

मुनेसरीक कथा सुनि तेतरीक मनमे दया उपकलै। मुदा दुनूक मन आरो डरा गेल। जहिना कठियारीसँ घुमैत काल सभ 'राम-राम सत है, सभको एही गति है'। बजैत आंगन अबैत तहिना तेतरियोकेँ नैहरक घटना मन पड़ल। बाजलि- ''एकबेर हमरो नैहरमे बड़का बाढ़ि आएल रहए। एहेन बाढ़ि कहियो ने देखने रहिऐ। जलखै बेरमे एक गोरे बजलै जे बाढ़ि अबै छै। रोटी पकबैत रही।

माए घास लऽ गेल रहए। रोटी पकाएलो ने भेल आिक घर लग पानि चलि आएल। चुल्हि तरसँ उठि बान्हपर गेलौं कि देखलिऐ जे चानी जकाँ बाढ़ि पीटने अबैए। धाँइ-धाँइ भीतघर सभ खसए लगलै। लुटना बाध गेल रहए। बाधेसँ दौड़ल आबि घर पैसल। चाउरक कोठीमे लत्तामे बान्हि कऽ रूपैया रखने रहए। कोठीसँ जहाँ रूपैया निकालए लगल कि देहेपर कोठी खसि पड़लै। माटिक गोरा भीज कऽ ढील भऽ गेल रहए। कोठिये तरमे लुटना पड़ि गेल। तरेसँ हल्ला करए लगल। जाबे लोक सभ अबै-अबै ताबे घरो खसि पड़लै। बेचारा तरेमे छटपटा कऽ मरि गेल।''

तेतरीक खिस्सा सुनि मुनेसरी आरो डरा गेलि। दुनू दियादिनीक देह थर-थर कपए लगलै। नीन आरो दूर चलि गेलै। डरे दुनू बिछानेपर एक करसँ दोसर कर लगले-लगले उनटए-पुनटए लगल। मुदा किछु बाजति नै। हारि कऽ मुनेसरी बाजलि- ''दीदी, हमरा डर होइए।''

मुनेसरीक बात सुनि तेतरियो समर्थन करैत बाजलि- ''हँ, हइ कनियाँ, हमरो डर होइए। चलह पूवरिये घर। जँ मरबो करब तँ सबतुर संगे मरब।''

कहि उठि कऽ बैस गेल। मुनेसरियो बेटाकेँ उठबए लगल। बेटो जगले। फुड़फुड़ा कऽ उठल। बिछान समेट तेतरी पाँजमे लेलक आ मुनेसरी बेटाकेँ कन्हा लगा पूबरिया ओसारपर पहुँचल। ओसारपर पहुँचते तेतरीक जोरसँ बाजलि- ''कनी घर खोलू?''

घरेसँ दुनियाँलाल पुछलक- ''कियए? की भेल?''

''ओइ घरमे डर होइए। अही घरमे सभ सुतब।''

''ऐ घरमे हम दुनू भाँइ छी तखन अहाँ दुनू गोरे केना सुतब?''

''बेर बिपैत्तिमे ई सभ लोक नै बुझै छै। पहिने घर खोलू।''

फटक खोलि रूपलाल अपन बिछान घुसकौलक। मोख लग डिबिया रखि मुनेसरी बिछान बिछौलक। तखने सिताहल नढ़िया जकाँ सजनाक स्त्री सेहो आंगन पहुँचलि।

एकटा बिछानपर दुनू भाँइ दुनियाँलाल आ दोसर बिछानपर दुनू दियादनी तेतरी बच्चा संग सुतैक ओिरयान केलक। दुनियाँलाल सिरमापर माथ रखि पड़ि रहल। आरो गोटे बैसले रहल। बच्चा सेहो सुति रहल। दुनू परानी रूपलालक मनसँ डर हटबे ने करै। होइ जे फेर ने देहेपर घर खसि पड़ए। एकबेर बड़का भूमकम भेल। भूमकम तँ अढ़ाइये-तीन मिनट रहल मुदा तइमे घर-द्वार गाछ-बिरीछकेँ तँ खसेबे केलक जे कते लोको दबा-दबा मरल। भूमकम तँ लगले समाप्त भऽ गेल मुदा तीन दिन धरि रहि-रहि कते बेर धरती डोलल। तहिना होइ जे बड़का झाँट-बिहाड़ि ने चलि गेल। मुदा कहीं छोटका सभ ने फेर घुरि-घुरि अबै। तहूमे कोन ठेकान जँ छोटकेसँ बड़को चलि आबए। तँए दुनू गोटेक मन सशंकित भेल रहए। तेतरीक मन सुतैक होय मुदा सोचए जे पुरूख बैसल रहत आ हम केना सुति रहब। तहूमे डिबिया जरिते अछि डिबियो केना मिझाएब? बेर-बिपत्तिमे इजोते मदतिगार होइत अछि। दुनियाँलालकेँ तमाकुल दैत रूपलाल कहलक- ‘‘भैया, आइ बुझि पड़ल जे अपन सहोदर केहेन होइ छै?’’

ओछाइनपर सँ उठि दुनियाँलाल आंगनमे थूक फेक मुस्की दैत उत्तर देलक- ‘‘तखन भीन कियए भेलँह? तोंही कह जे अपना दुनू गोरे सहोदर भाए छी किने। जखैन सहोदरमे मिलान नै रहत तखन आन तँ आने छी। मनुक्खमे एते बुद्धि होइ छै तखन ई गति छै जे भाए-भाएमे दुसमनी भऽ जाइ छै। अगर जँ एहिना सभ मनुक्खमे होय तखन ओहन मनुक्खसँ उपकारक कोन आश। ऐ सँ नीक तँ गाइये-बड़द। जे दूधो दैए आ हरो बहैए।’’

दुनियाँलालक विचार सुनि रूपलाल उठि कऽ आंगनमे थूक फेक कऽ आबि बाजल- ‘‘भैया, धरमागती बात कहै छियह। दुरागमनक पछाति जे विदागरी करबैले पठौने रहह, ओइ दिनक बात कहै छियह। अपनो सौस आ टोलोक मौगी सभ आबि कऽ लगमे बैसलि। अपना बुझि पड़ए जे जहिना बिरदावनमे कृष्ण गोपी सबहक संग बैस कऽ गप-सप्प करैत छलाह तहिना हमहूँ छी। एक मुहरी सभ स्त्रीगण कहए लागलि जे अहाँक भाए बड़ छनकट अछि। कतबो कमाएब तँ भाभन्स हुअए देत। अहाँ दुनू परानी कमाएब आ ओ कोशल

करत। जखैन हाथ-मुट्ठी गरमा जेतै तखन भीन कऽ देत। अखैन दुनू परानी जुआन छी कमाइ-खटाइ छी। अखैन नै किछु बना लेब तँ जखैन धिया-पूता हएत खरचा बढ़त तखैन कएल हएत। तँए नीक कहै छी जे अखने भीन भऽ जाउ। नै तँ पाछु पचताएब।''

रूपलालक बात सुनि दुनियाँलाल ठहाका मारि हँसल। हँसैत ओछाइनपर सँ उठि मुँहक तमाकुल आंगनमे फेक कऽ आबि बुझबैत बाजल- ''कोइ जे तोरा किछु कहलकौ आ तूँ मानि गेलैँ से अपन बुद्धि कतऽ गेल छलौ। तूँ नै देखै छेलही जे दुनू भाँइ संगे बोनि करैले जाइ छलौं आ आंगनमे भौजाइ भरि दिन अंगना-घरक काज सम्हारि जरना-काठीक ओरियान करै छेलखुन। तइपर एकटा नांगरिक घास-भूसा आ भानस-भात, खुऔनाइ-पियौनाइसँ लऽ कऽ बरतन-बासन धरि मँजैत छेलखुन, से सभ अपना आँखिये नै देखै छेलही। तोंही कह जे सत बात कि छलै आ मौगी सबहक कान भरने तूँ की बुझलीही।''
अपसोच कऽ मूड़ी डोलबैत रूपलाल मिरमिरा कऽ बाजल- ''हँ भैया, ई तँ ठीके कहै छह।''
''अपने आँखिसँ जे देखै छेलही से झूठ बुझि पड़लौ आ जे झूठ बात सुनलैँ ओकरा सत मानि लेलही। एकरे कहै छै मौगियाही भाँज। तोरे जकाँ आनो-आन मौगियाही भाँजमे पड़ि कुल-खानदानक नाक-कान कटबैए। नैहरसँ सासुर जाइ काल जे मौगी सभ कानि-कानि बजैए से कि कहै छै से बुझै छीही। ओ कहै छै जे जहिना बाप-माइक घरारीपर हम कनै छी तहिना बाप-दादाक घरारीपर घरबलाकेँ कनाएब। अरे एतबो ने बुझै छीही जे दुनियाँमे सभ कुछ मिल सकैए मुदा सहोदर भाए नै मिलै छै। भाइयक खातिर लक्ष्मण स्त्री परिवार, समाज सभ छोड़ि देलखिन मुदा भाइयक संग अंतिम समए धरि रहलखिन। आइ तोरा के काज दइले एलौ। कनियो जँ हमरा मनमे पाप रहैत तँ तोरा घरेमे मरैले नै छोड़ि दैतियौ। नै तँ झीक-झाकि कऽ ठाठ देहेपर खसा दैतियौ। नै मरिते तँ हाथो-पाएर तँ टुटबे कैरतौ।''

नमहर साँस छोड़ैत रूपलाल आँखि मिड़ैत बाजल- ‘‘भैया, आइ बुझि पड़ैए जे सभ ठकि लेलक।’’
‘‘कान पाथि कऽ सुनिले। जहिना मनुख सभसँ पैघ जीव ऐ धरतीपर अछि, जे बड़का-बड़का चमत्कारी काजो करैत अछि तहिना छुतहरो अछि। देखबीही जे जेकरा कनी बुद्धि-अकील छै ओ सतिकाल बुड़िबक सबहक कमाइ ठकि-ठकि मौजसँ खाति अछि। खेबे टा नै करैत अछि ओकर बोहू-बेटीक संग कुत्ता-बिलाइ जकाँ इज्जतो लुटैत अछि।’’
‘‘भैया, आइ बुझि पड़ैए जे हमर बाप मरल नै जीविते अछि।’’
पिताक रूपमे अपनाकेँ पाबि दुनियाँलालक हृदए पसीज गेल। बाजल- ‘‘बौआ, जे समए बीत गेल ओ तँ बीत गेल। ओ आब थोड़े घुमि कऽ आओत। मुदा जाबे जीवैत रहब, तै बीच जे समए अछि ओ तँ बँचल अछि। हमरा तूँ मोजर देँ आकि नै देँ मुदा अपन सीमा तँ हमहूँ बुझै छी किने। अपन कमाइ खाइ छी अपने औरूदे जीबै छी। तइले दोसराक कोन आश। अपन काज दुसैबला नै करब। जँ ककरो नीक कएल नै हएत तँ अधले कियए करबै। तोरा प्रति जे काज अछि सएह ने करब।’’
‘‘भैया, आब ओंघी पीपनीपर आबि गेल। रातियो बेसी भऽ गेल। तोहूँ सुतह आ हमहूँ सुतै छी।’’

मुनेसरीक मन सेहो उनटैत-पुनटैत मुदा थीर भइये ने पबैत। एक दिस अपन पैछला जिनगीक बाट टूटैत तँ दोसर दिस नव बाटक बोध नै रहने बोनाह बुझि पड़ैत रहए। मुदा दुनियाँलालक विचारसँ झलफलाएल बाट जरूर देख पड़ैत रहए। जइसँ मनमे किछु बदलाव रहए। मनमे उठलै जे जँ नैहरक स्त्रीगणक नीक सिखाओल रहैत तँ नीक होइत रहिते। से तँ नै भेल। मोम जकाँ मन पघिलए लगलै। मुदा किछु बजैक साहसे ने होय। जहिना मालती फुलक सुगंधसँ विषधर साँप लत्तीमे लटपटा चेतना शून्य बनि जाइत तहिना मुनेसरियोक मन भऽ गेल। मने-मन गलती कबूल करैत तेतरीकेँ कहलक- ‘‘दीदी, ई सुतथु जाँति दै छियनि।’’

मुनेसरीक बातसँ तेतरीकेँ खौंझ उठल, बाजलि- ''तोरा एक्को पाइ लाज-सरम नै छह जे जै घरमे पुरूख-पात्र छथि तैठाम तूँ जँतबह। एक तँ भगवान विपत्ति देलनि जे सभ कियो एक घरमे सुतैले एलौं। डिबिया मिक्षा दहक जइसँ कने परदा भऽ जाएत आ तोहूँ सुति रह-अ।''
डिबिया मिझाएब सुनि मुनेसरीक मन तत्-मत् करए लगल जे इजोतमे तँ देखबो करै छी अन्हारमे की हएत की नै से देखबो ने करब। मुदा तैयो उठि कऽ डिबिया मिझा कले-बल पड़ि रहल।

काल्हिये (दिवालीसँ एक दिन पूर्व) ओठर होइत देख अनुप काली पूजाक हकार दिअ गेल। वहिनोक सासुर, अपनो सासुर आ मात्रिको एक्के डोरिमे। कने घुमौन रहितो सोचलक जे पहिने वहिन ऐठाम पहुँच हकारो दऽ देबै आ अबैयोले कहि देबै। मुदा ओइठीन अँटकब नै। झलफल होइत-होइत सासुर चलि जाएब। ओइठीन रातिमे अटकि जाएब। किएक तँ अखनो बुढ़िकेँ छन्हि जे कतबो धड़फड़ाएल रहब तैयो नहिये आबए देतीह। काल्हि भोर मात्रिक होइत चलि आएब। छोड़ैबला एक्कोटा नै अछि एक तँ ओहुना वहिनक मनमे होइत हएत जे जाधरि माए-बाप जीबै छलाह ताधरि ने नैहर छल मुदा भाए-भौजाइ ककर होइ छै जे हम्मर हएत। मुदा हमर बात थोड़े बुझैत हएत जे दू थान महींस अछि ओकरे पाछु भरि दिन तबाह रहै छी। ओहुना तँ सालमे एक दू-बेर अनबे करै छिऐ आ जेबो करते छिऐ। मुदा तैयो मनमे होइते हेतै जे बिसरि गेल। तँए पहिने ओकरे ऐठाँ जाएब।

दोसर दिन दस-एगारह बजे घुमि कऽ अबिते अनुप देखलक जे महींस पाल खाइले बो-बाँ करैए। एक तँ रस्ताक थाकल तइपर सँ महींसकेँ डिरियाइत देख मन तमसा गेलै मुदा लछमी पावनि दिन लगले मनमे खुशी एलै। हाँइ-हाँइ कऽ खेलक आ महींस लऽ कऽ पारा लग विदा भेल। गाममे पारा नै रहने बगलक गाम पहुँचल। गाम पहुँचते पता लगलै अखने एकटा महींसक संग दछिन मुँहे गेल। फेर ओइ गामसँ दोसर गाम विदा भेल। दोसरो

गाममे पता लगलै जे दछिन मुँहे गेल। जाति-जाति चारि बजेमे एकटा गाछीमे महींसमे पारा लगल देखलक। जेहने देखैमे पारा भारी तेहने नमहर-नमहर सिंघो रहए। मरखाहक दुआरे महींसबला महींसकेँ गाछमे बान्हि हटि कऽ बैसल रहए। फरिक्केमे अनुपक महींसकेँ देख पारा दौड़ल। पाराकेँ अबैत देख अनुप हाँइ-हाँइ कऽ एकटा गाछमे महींसकेँ बान्हि दोसर गाछपर चढ़ि गेल। तै बीच पहिलुका महींसबला अपन महींसक डोरी खोलि ससरि गेल। अनुपक महींस लग आबि पारा गछाड़ि लेलक। लगले-लगले तीन-चारि मूठ पारा देलक। मूठ सुतरैत देख अनुपक मन खुशीसँ नाचि उठल। मुदा पारा डरे गाछपर सँ उतड़बे ने करए। महींस लग पारा बैस रहल। मुदा महींस ठाढ़े रहल। अनुपक मनमे होय जे जँ महींसो बैस जाएत तँ ढरकि जाएत। जइसँ पाल सुतरबे ने करत।

साँझ पड़ि गेल। अमवसिया दिन रहने दोसरि साँझ होइत-होइत अन्हार भऽ गेल। अनुपो गाछपर सँ उतड़ि हटि कऽ बैस गेल। अन्हार देख अनुपक मनमे होय जे असकरे छी केना गाम जाएब? तहूमे तेहेन पारा शेतान अछि जे छोड़बो ने करैए। रातिक दस बजि गेल। हवो उठल आ बून्दा-बुन्दी पानियो शुरू भेल। पानि पड़िते पारा महींसकेँ छोड़ि गाम दिस विदा भेल। हवो आ पानियो तेज हुअए लगल। एक तँ अन्हरिया राति तइपर सँ पानि-हवा जोर पकड़ने जाइत। महींसक संग अनुप गाम दिस विदा भेल। कनिये आगू बढ़ल आकि झाँट-पानि आरो जोर पकड़ैत गेल। अधा रास्ता अबैत-अबैत मुसलाधार बरखो आ बिहाड़ियो जोर पकड़ि लेलक। अवग्रहमे अनुप पड़ि गेल। अवग्रहमे पड़ल अनुप सोचए लगल जे आइ नै बँचब। अपटी खेतमे महींसो आ अपनो मरि जाएब। हाथ-हाथ नै सुझैत अछि। ने कतौ एकोटा लोक देखै छी आ ने अपना कोनो इजोत अछि। बीच पाँतरमे केना जाएब? तहूमे अंगो ने पहिरने छी। देहमे जेहो कपड़ा अछि सेहो भीजिये गेल अछि। जाड़ो होइए। जिनगीक आश अनुपकेँ टुटि गेल। मन मानि गेलै जे आइ नै बँचब। जखन अपने नै बँचब तखन महींसे कोन

काज देत। बुकौर लगि गेलै। मुदा कान'बो के सुनत? बिजलोका देख होइ जे देहेपर ने खसि पड़ए।

हवा बन्न भेल। हवा बन्न होइते मनमे आशा जगलै मुदा घनघनौआ बरखा होइते रहए। गाम पहुँचैत-पहुँचैत बरखो बन्न भेल। घरपर आबि थरथराइत अवाजमे अनुप घरवालीकेँ कहलक- ''हाथ-पाएर कठुआ गेल अछि। कनी घूर करू।''

बेटा, नसीवलाल महींस बन्हलक। भुलिया अनुकेँ कहलक- ''जाबे अहाँ धोती फेड़ब ताबे घूरक ओरियान कऽ दै छी।''
घरवालीक बात तँ अनुप सुनलक मुदा जाड़े-कठुआ कऽ खसि पड़ल। जाड़सँ देह सर्द-सर्द भेल रहए। बोली बन्न भऽ गेलै। तइपर सँ भीजल कपड़ा सेहो रहए। हाँइ-हाँइ कऽ भुलिया फुटलाहा लोहियामे गोरहा-गोइठा तोड़ि-तोड़ि दऽ मटिया तेल ढारि सलाइ खरड़ि कऽ लगौलक। घूर धधकल। बेटी सुनरीकेँ भूलिया कहलक- ''बुच्ची, झब दऽ करौछमे चारि ढेकरी थकुच कऽ लसुन आ करूतेल ला। अही घूरपर गरमा कऽ सौंसे देह मालिस कऽ देबनि।''
माइक बात सुनि सुनरी चारमे टाँगल लसुनक मुट्ठीमे सँ एकटा ढेंसर निकालि, दाना छोड़ा सिलौटपर थकुचलक। शीशीसँ तेल निकालि करौछ घूरपर गरमबए लगल। तीनू गोटे (पत्नी, बेटा, बेटी) केँ मनमे होय जे भरिसक कठुआ कऽ मरि गेल। मुदा साँस चलैत देख आशा बनल रहए। लसुन-तेलासँ तीनू गोटे दुनू तरबो आ दुनू तरहत्थियोकेँ हाथसँ रगड़ए लगल। पान-सात मिनट रगड़लापर अनुप आँखि खोलि बाजल- ''जाड़ कनी कम भेल।''
अनुपक बात सुनि आरो हाँइ-हाँइ तीनू गोटे रगड़ए लगल। तरहत्थी रगड़ब छोड़ि नसीवलाल चानि रगड़ए लगल। मन हल्लुक होइते अनुप बाजल-

''जाड़े छाती दलकैए। कनी चाह बनाउ। जाबे भीतर नै गरमाएत ताबे जाड़ नै छुटत।''

पतिक बात सुनि भुलिया चाह बनबैक ओरियान करए लागलि। चाह-पत्ती तँ घरमे रहए मुदा चिन्नी घरमे रहबे ने करै। एत्ते राति आ एहेन समैमे दोकानसँ चीनी केना अनैत। पतिकेँ भुलिया कहलक- ''चाह पत्ती तँ घरमे अछि मुदा चिन्नी अछिये नै।''

पत्नीक बात सुनि अनुप कहलक- ''चीनी नै अछि तँ नूने दऽ कऽ बना लिअ। एहेन समैमे कत्तए सँ आनब।''

भुलिया चाह बनबए लगलीह। बेटाकेँ अनुप कहलक- ''बौआ, कनी थमि जा, धोती फेड़ लै छी।''

कहि उठि कऽ धोती बदलि गंजी पहीरिलक। चाहो बनल। स्टीलिया गिलासमे भरि गिलास चाह करीब २५०एम.एल; छानि भुलिया अनुपकेँ देलक। जेहने जड़ाएल देह तेहने मुँह रहने चाह गर्म बुझिये ने पड़ै। पानिये जकाँ घोंटे-घोंट पीबए लगल। अधा गिलास पीबैत-पीबैत देह गरमेलै। देह गरमाइते हुहुआ कऽ बोखार अबए लगलै। चाह पीबैत-पीबैत बोखार आबि गेलै। जाड़ हुअए लगलै। ओछाइनेपर पड़ि बेटाकेँ कहलक- ''बौआ, बड़ जाड़ होइए कनी कम्मल निकालि कऽ लाबह।''

कम्मर ओढ़ि पड़ि रहल। मुदा जाड़ कमैक बदला बढ़ले जाय। पुन: अनुप बाजल- ''एकटा कम्मलसँ जाड़ नै कमत। आरो ओढ़ाबह।''

घरक तीनू कम्मर ओढ़िते देह गरमेलै। देह गरमाइते बाजल- ''बौआ, देहसँ खौंत फेकैए।''

खौंत सुनि भुलिया बाजलि- ''सरद-गरम भऽ गेल। एती रातिमे डाकडरो ऐठीन केना पठेबे। तइमे तेहेन दुरकाल समए अछि जे ओहो आओत आिक नै।''

निराश होइत अनुप बाजल- ''जँ औरूदा हएत तँ जीबे करब नै जे रसीद कटि गेल हएत तँ डाक्टरो बुते थोड़बे बाँचब।''

भुलिया- ''महींसक पाछु जे जान गमबै छी तइमे नीक जे महींसे बेच लेब।''

आशा भरल स्वरमे अनुप पत्नीकेँ उत्तर देलक- ''अही महींसक बले तँ दूटा पाइयो देखै छी आ गुजरो करै छी। जँ एकरे बेच लेब तँ जीब केना। जिनगीमे एहिना नीक-अधला समए अबै-जाइ छै, तइले कि काजे छोड़ि देब। मरै कए कोनो ठेकान छै। चलितो काल लोक खसि पड़ैए आ मरि जाइए। तइले महींस कियए उपटाएब।''

अही अजकल पोरू-साल गाममे किसान गोष्ठी भेल रहए। ओइ गोष्ठीमे जिलोक कृषि-पदाधिकारी आ ब्लौकक पदाधिकारी सभ सेहो आएल रहथि। ओना गामक लेल पहिल गोष्ठी छलए। जइमे किसानक दुख-दर्दकेँ लगसँ देखल गेल रहए। ओइ दिन गामोक किसानकेँ सरकारमे अपन भागीदारी बुझि पड़ल रहए। किएक तँ अखन धरि गामक लोक सरकारक माने कोटाक चीनी आ मटियातेल धरि बुझैत छलै। गोटे-गोटे साल खैरातक गहूमो आबि जाइ छलै। मुदा तइमे बदलल रूप गोष्ठीमे रहए। किएक तँ किसानकेँ चारि श्रेणी- लघु, सीमान्त, मध्यम और पैघ किसानक रूपमे विभाजित कऽ सबहक लेल सरकारी सुविधाक चर्चा भेलै। सीमान्त किसानकेँ एक-तिहाइ माने ३३ प्रतिशत सरकारी सहायताक घोषणा भेलै। एक-तिहाइ मदतिसँ लोकमे भरपुर उत्साह जगलै। खेतीक सभ विधा पशुपालन, माछपालन तरकारीक खेती, फल-फलहरीक खेतीक संग-संग उन्नतिशील धान, गहूम इत्यादि अन्नक खेतीमे सेहो मदतिक चर्चा भेलै। ३३ प्रतिशत माने एक तिहाइ सुविधा पाबि पैघ किसान आ मध्यम किसानक लेल छोट-छोट कारोवार आ गाइयो-महींस पोसैक बाट खुजलै। गोष्ठीक किछुए दिनक बाद पंजाब-हरियाणासँ ट्रकक माध्यमसँ बारह टा जर्सी गाए गाममे आएल। ओइमे सँ एकटा कारी रंगक गाए राजेसर सेहो दस हजारमे कीनलक।

चारि मास धरि गाए नीक-जकाँ आठ किलो दूध दैत रहल। बादमे चारि मासक पछाति एक संझू भऽ गेलै। जाधरि आठ किलो दूध गाएकेँ होइत रहल ताधरि दुनू परानी राजेसर सेहो हिया खोलि मेहनतो करै। ओना दूधारू घासक खेती नै केने रहए। ने सुधादाना आ ने कोनो तरहक पौष्टिक आहारक दोकान इलाकामे रहए। मुदा तैयो राजेसर पुरने ढंगसँ मसुरी आ मकैक दर्रा थोड़-थाड़ गाएकेँ खुअबैत रहए। छह मास बीतैत-बीतैत गाए बिसकि गेलै। बच्छा तरे गाए रहै तँए गाइयक संख्या तँ नै बढ़लै मुदा जतबे दिन दूध भेलै ओइसँ गाइयक प्रति आकर्षण जरूर बढ़ि गेल रहए। किएक तँ अखन धरि गाममे एक्कोटा ओहन गाए नै भेल रहए जेकरा सेर भरिसँ बेसी दूध होइ। ओना गामक गाइयक वंश दिनानुदिन बिगड़ैत गेल। तेकर अनेको कारणमे एकटा कारण इहो रहए जे श्राद्ध-कर्ममे तेहेन दब बच्छाकेँ दागि साँढ़ बनाओल जाइत रहए जे गाइयक खाढ़े नष्ट होइत गेलै। बिसकला पछाति गाए उठबे ने कएल। आठ मास बीतैत-बीतैत राजेसर निराश भऽ गेल। लोककेँ पुछै तँ कियो-करूतेल पियबैले कहै तँ कियो मेनक पात खुअबैले कहै। मुदा गाए उठलै नै। हारि-थाकि कऽ मधेपुर मबेशी डाक्टरसँ सम्पर्क कऽ पुछलक। गर्भाशय साफ करबैक विचार डॉक्टर सहाएब देलखिन।

दिवाली दिन राजेसर गाए नेने मधेपुर मबेशी अस्पताल पहुँचल। एकटा बीमार महींस देखैले डॉक्टर सहाएब भगवान गेल रहथि। गाएकेँ ढाठमे बान्हि राजेसर अस्पतालक ओसारपर तौनी बिछा सुति रहल।

सूर्यास्त भेलापर डॉक्टर भगवानपुरसँ एलाह। डेरा अबिते पत्नी कहलकनि- ‘‘एक गोटे दुपहरेसँ भुखे-पियासे गाइयक संग बैसल छथि पहिने ओ देख लियौ।’’

दुपहरक नाओं सुनिते डॉक्टर चौंकि गेलाह। साइकिल रखि पत्नीकेँ कहलखिन- ‘‘तेहेन बीमारीक भाँजमे पड़ि गेलौं जे छोड़ियो नै सकैत छलौं। मुदा जखन महींस पाउज धऽ खढ़ उठौलक तखन अपनो संतोष भेल आ महिसोबला कहलनि जे आब महींस बँचि गेल। तँए एते अबेर भऽ गेल। मन गरमा गेल अछि पहिने एक लोटा पानि पीयाउ आ चाह बनाउ। ताबे कपड़ा खोलि लै छी।’’

चाह पीब डॉक्टर राजेसर लग पहुँच गाएकेँ देख कहलखिन- ‘‘जँए एते काल बैसलौं तँए आध घंटा आरो समए लागत।’’
आशा भरल स्वरमे राजेसर कहलकनि- ‘‘तइले नै कोनो मुदा गाममे तमाशा सेहो छी आ अन्हरिया राति छी तँए थोड़े.....।’’

ढाठीमे गाएकेँ बन्हबा डॉक्टर साफ केलनि। साबुनसँ हाथ धोय एकटा इन्जेक्शन देलखिन। चारि खोराक गोटी दऽ कहलखिन- ‘‘काज तँ भऽ गेल मुदा आब गाम नै जाउ। एतै रहि जाउ, भोरे दिन-देखार चलि जाएब।’’
फीस दैत राजेसर कहलकनि- ‘‘डॉक्टर सहाएब, अबेरो भेने तँ काज भइये गेल। गाममे मेलो-तमाशा छी तँए चलिये जाएब।’’
एक तँ करिया कम्मर जकाँ अन्हार, दोसर कारी खुट-खुट गाए, मने-मन राजेसर सोचलक जे हो न हो कहीं हाथसँ डोरी छुटि जाएत तँ गाए हराइये जाएत। छोड़मे ससरफानी दऽ अपन गट्टामे बान्हि आगू-आगू गाए आ पाछु-पाछु अपने विदा भेल। थोड़े दूर आगू बढ़ल कि बुन्दा-बुन्दी पानियो आ हवो रसे-रसे जोड़ पकड़ए लगल। हवाक संग-संग घनघनौआ बरखो हुअए लगल। घरपर अबैत-अबैत जहिना अपने तहिना गाइयो जाड़े कठुआ गेल। राति ढहल। गाए टाँग पटकए लगलै। लगले-लागल उठबो करै आ बैसबो करए। बो-बाँ सेहो करए। समए तेहन भऽ गेलै जे पुन: डॉक्टर ऐठाम जाइक साहसे ने भेलै। ने गाममे मबेशी डॉक्टर आ ने लग-पासक कोनो

गाममे। हारि कऽ करूतेल-मटिया तेल मिला, सौंसे देह औंसि बोराक नूरी बना दुनू परानी गाएकेँ ससारए लगल। थोड़े काल ससारि मरीच पीस करूतेलमे मिला काँड़िसँ पियौलक। मुदा गाइयक रोग हटलै नै। धीरे-धीरे बढ़ िते गेलै। भोरहरबामे खूब जोरसँ डिरिया गाए मरि गेलै।

गाएकेँ मरिते दुनू परानी राजेसर कानए लगल। भोरहरबाक कानब सुनि दुनू परानी डोमन दौड़ कऽ आएल। अबिते राजेसरकेँ डोमन पुछलक- “भैया, की भेलह?”

डोमनक प्रश्नक उत्तर नै दऽ राजेसर कनिते रहल। लगमे अबिते डोमन देखलक जे चारू पाएर छिड़ियेने गाए मरल अछि। मुँहपर तरहत्थी दऽ डोमन बाजल- “भैया, चुप हुअअ। कमाइबला बेटा मरलापर लोक सवुर करिते अछि, ई तँ सहजे नाङरि छी।”

डोमनक बात सुनि राजेसर बाजल- “गाए मरि गेल तेकर दुख ओते ने अछि जते बैंकक करजाक अछि। एक तँ सरकार लोककेँ मदति करैए कि गरदनिमे फाँस लगबैए। जखन गाए नै नेने रही तखन कहलक जे तेकरी सरकार देत आ बाकी दू हिस्सा बैंकसँ करजा भेटत। काज सुगम देख लेलौं। बुझबे ने केलिऐ जे गरदनिमे फँसरी लगबैए। छुट लेल बैंकबला कहलक जे मधमन्त्रीसँ कागज आनि कऽ दिअ तखन ओइ रूपैयाक मिनहा लोनमे भऽ जाएत। जाबे तक ओ कागज नै देब ताबे तक सोलहो आना रूपैयाक सुदि चलैत रहत। अपने देखल-सुनल नै। कोटक मंसीकेँ जा कऽ जा सभ बात कहलिऐ तँ ओ तैयार भऽ कऽ ओइ ओफिस गेल। ओइ ठीमन गेलौं तँ कहलक जे पान सए रूपैया लागत तखन कागज देब। एहिना दौड़-बरहा करैमे हजारसँ उपरे खर्च भऽ गेल। रूपैयाक किस्त नै देने छेलिऐ बैंकमे जखन हिसाब करबै लगलौं तँ कहलक जे छह मासक सुदि मूड़मे जमा भऽ गेल आ ओकरो सुदि लागत। तै बीच गाइये मरि गेल। आब की करब?”

दिवालीकँ शुभ दिन बुझि सुरतिया भोरेसँ दुनू परानी खपड़ाक भट्ठा लगबए लगल। बीस हजार खपड़ाक भट्ठाक मनमे खुशी रहए। बीचमे थोपुआ आ चारू कात नड़िया खपड़ाक भट्ठा लगौलक। थापुआ मोटो होइ छै तँए कातमे लगौलासँ नीक जकाँ नै पाकत। आमदनीक खुशी मनकँ तेना खुड़-खुड़ा देने रहए जे दुनू परानीकँ काजक भीड़ बुझिये ने पड़ए। दुनियाँक सभ किछु बिसरि मन आमदनी देख तरे-तर हँसए। जहिना कोनो कनैत बच्चाकँ गुदगुदी लगौलासँ हँसीक लाबा फुटैत तहिना दुनू परानी सुरतियोकँ होय। भट्ठा लगि गेल।

एक तँ सुखार माने रौदियाह समए दोसर कातिक मास। कातिक मासमे चैत-बैशाख जकाँ ने हवा-विहाड़िक शंका आ ने झाँट-पानिक। तँए ने भट्ठाक उपर छाँही देलक आ ने कातमे टाट लगौलक। पहिल साँझ उक-बाती फेर सुरतिया भट्ठा लग बैस निङहारि-निङहारि देखए लगल जे कतौ किछु छुटि तँ ने गेल। फुलेसरी भानस करए गेलि। चुल्हि पजाड़ि अदहन दैते मनमे उठलै जे अधिक लटारम करैमे बेसी देरी लागत तइमे नीक खिचड़ी आ अल्लू चोखा बना लेब। बैसारी लोक ने छनुआ-बगहरूआ बना जी माने जीभकँ चसकी पुड़बैए। पावनिये दिन छी तँ की छी। कोनो कि पावनियेकँ सीमा-नाङड़ि छै, जेकरा रहए छै ओ सभ दिन खाइए। खाइये पाछु जे समए बीता लेब तँ खाइक ओरियान केना हएत। फेर मनमे भेलै जे अपने फुरने नै करब हुनको पुछि लै छियनि। चुल्हि तरसँ उठि फुलेसरी पति लग जाए पुछलक- “ओना आइ तँ लछमी दिन छी सभ तरूआ-बगहरूआ बनाओत, से की विचार।”

सुरतिया मने-मन बीस हजार खपड़ाक दाम जोड़ैत रहए। बारह हजार थोपुआ अछि जेकर दाम बारह हजार भेल। सौ-पचास फुटियो जाएत तैयो नै बारह हजार तँ पौने बारहे हजार रहह। आठ हजार नड़िया अछि जे आठ सए रूपैये बीकत। ओहूमे पच्चीस-पचास अधपक्कू आ फुटि-भांगि जाए तैयो नै चौसैंठ साए तँ छह हजार हेबे करत। कहुना-कहुना तँ सत्तरह-

अट्ठारह हजार हेबे करत। पत्निक बात सुनि उत्तर देलक- ‘‘बूढ़ि भऽ गेलौं आ नाक लगले अछि। एतबो नै बुझै छिऐ जे भट्ठा लगौने छी आगि देबै तँ भरि राति ओगरि कऽ रहए पड़त। जगरनामे अधपेटे खेनाइ नीक होइ छै आिक चढ़ा कऽ। जाउ खिचड़ी आ अल्लू चोखा बना लेब।’’

अपन विचारसँ पतिक विचार मिलिते फुलेसरीक मन खुशीसँ नाचि उठल। मुस्की दैत दोहरौलक- ‘‘पावनिक दिन छी, तखन.....।’’
‘‘जाउ-जाउ। जेकरा रहै छै ओकरा लिये सभ दिन होलिये आ दिवालिये रहै छै आ जकरा नै रहै छै ओकरा लिये सभ दिन एकादसिये रहै छै।’’

खा-पी कऽ फुलेसरी बच्चा सभकेँ सुता देलक। रातिक साढ़े नअ बजैत सुरतिया भट्ठामे मसुरीक दालि छिटैत- ‘‘जेहन मसुरीक दालि लाल, तेहन भट्ठा लाले-लाल’’ कहि आिग देलक। सुखाड़ समए धुधुआ कऽ आगि पजड़ि गेल। आगिक पजड़ब देख सुरतिया पत्नीकेँ कहलक- ‘‘ऐ बेरक खपड़ासँ पूँजी बढ़ा लेब। दू आदमीकेँ आरो रखि लेब। कहुना-कहुना जँ दसो भट्ठा हाथ लागल तँ लाखक कमाइ भइये जाएत। पूँजी ने पूँजी बढ़बै अछि। गाममे देखते छिऐ जे जेकरा दस बीघा जमीन छै ओ अपनो साल भरि खाएत से नै होइ छै। हम तँ सहजहि नंगा-फरोस छी। तहन तँ लुड़िये-बुद्धि तेहन अछि जे जनो कमबाएब।’’
फुलेसरीक बुद्धिमे पतिक बात नै अँटल। छोट बुद्धिमे पैघ बात केना अँटैत। मुदा पति-पत्निक बीच कि शास्त्रार्थ होइत अिछ। सुयोग कविक कविता जकाँ तुक मिलौबलि होइत अछि विषय-वस्तु किछु रहौ वा नै रहौ मुदा तुकबन्दी जँ नीक रहल तँ ओ श्रेष्ठ कविताक श्रेणीमे अिबये जाइत अछि। पतिक प्रश्नक उत्तर दैत फुलेसरी बाजलि- ‘‘ऐ बेर अपनो घरपर खपड़ा दइये देबै।’’
अपन घर सुनि सुरतियाक मनमे उठल जहिना घर बनौनिहारकेँ अपना रहैले घर नै रहै छै तहिना तँ हमरो अछि। जाबे विराटनगरमे नोकरी करै छलौं

ताबे पेटो चलैमे कोताहिये होइ छलए। मुदा आब जँ बेसी कमाइ हुअए लगल तँ घरो बनाइये लेब।

बुन्दा-बुन्दी पानियो आ संग-संग हवो उठल। मेघ दिस देख सुरतिया बुदबुदाएल- ''मेघो कहाँ देखै छिऐ। एकटा छोटका टुकड़ी बुझि पड़ैए। नै आओत बरखा। मुदा हवा ने एकभग्गू कऽ दिअए। जँ हवा जोर भेल तँ एक भाग काँचे रहत आ दोसर भाग झाम बना देत।''

हवा तेज होइत गेल आ मेघो पसरैत गेल। पूबसँ बादल आिब-आबि सघन हुअए लगल। जहिना-जहिना बरखा बढ़ए लगल तहिना-तहिना हवो बढ़ए लगल। तड़तड़ा कऽ जोरगर बरखो आ विहाड़ियो आबि गेल। झाँट-पानि देख सुरतियाक आशा राइ-छित्ती भऽ गेल। मास दिनक मेहनतक संग-संग पूँजीयो (माटि उघैक गाड़ी भाड़ा, जनक बोइन, जरनाक दाम) नष्ट भऽ गेल। टूटल मने पत्नीकँ कहलक- ''सभ किछु दुइर भऽ गेल।''
पतिक बात सुनि फुलेसरी गौआँकँ दोख लगबैत बाजलि- ''ई सभ किरदानी गौआँ सबहक छिऐ। जखन गाममे काली-पूजाक अड़धेना (आराधना) केलक तँ पहिने भगता बजा पूजा कऽ काली-महरानीसँ वाक् लऽ लैत से करबे ने केलक आ अपने फुड़ने पूजा शुरू कऽ देलक। ओकरा सभकँ की बिगड़लै। देत कियो हरजाना।''

फुलेसरीक जोर-जोरसँ बाजब सुनि सुरतिया डपटैत बाजल- ''यएह सभटा बुझै छै। राजा-दैवक कोनो ठेकान छै। ककरो हाथमे छै जे ककरो दोख लगबै छिऐ। कोनो कि अपने टा नोकसान भेल। कते लोकक घर खसल हेतै, चीज-बौस दुइर भेल हेतै कि अपने टा भेल?''
पतिक बात सुनि फुलेसरीक तामस गौआँपर सँ हटि पड़ोसनीपर पहुँचल। पड़ोसनीकँ गरियबए लागलि- ''तेहेन मरमी मौगी सभ अछि जे अनकर नीक सोहाइ छै। बेटा दऽ दऽ डानि सीखने अछि आ अनकर गरदनि कटैए।

जहिना हमर भट्ठा नोकसान भेल तहिना ओकरो सातो पुरखाकेँ उड़ाहि देबै।''

सुरतियाक घरक बगलेमे एकटा मसोमातक घर। जेकरा सभ स्त्रीगण डाइन बुझैत छै। ओकरे ठेकाना-ठेकना फुलेसरी गरियबैत। गारि तँ ओहो मसोमात सुनैत मुदा नाओं नै सुनि कान ठाढ़ केने रहए जे जखने नाओं लेत तखने देखा देबै। केहेन घनिकपन्ना होइ छै से सभ निकालि देबै। पत्नीक क्रोध देख सुरतिया सोचलक जे एक तँ जे नोकसान भेल से भेबे कएल तइपर सँ अनेरे झगड़ा सेहो ठाढ़ हएत। हमरासँ कि कमजोर ओ मसोमात अछि। दियादियो बेसी छै आ अपनो दुनू बेटा बुफगर छै। हो न हो कहीं आबि कऽ मारि ठानि दिअए। तखन तँ पूँजीयो गेल आ उपरसँ मारियो खाएब। पत्नीकेँ पोल्हबैत कहलक- ''की हेतै, कियो कपार लऽ लेत। भगवान जे भोग-पारसमे देने हेता ओ हेबे करत। जे नै देने हेता से अपनो केने थोड़े हएत। तइले एते आगि-अङोरा होइक कोन काज छै। नोकसाने की भेल खपड़ा गलि कऽ माटि हएत ओकरा फेर खपड़ा पाथि सुखा कऽ भट्ठा लगा लेब। जरनो भीजबे ने कएल ओकरो सुखा लेब। गिरहत सभकेँ देखै छिऐ हर-जन लगा खेती करैए आ बाढ़िमे दहा जाइ छै तँए कि ओ मरि जाइए कि खेती छोड़ि दइए। तहिना हमरो भेल। भगवान समांग देने रहथु। सभ किछु फेर भऽ जाएत।''
पतिक बात सुनि फुलेसरीक मन थीर भेल। मुदा तैयो मनमे खौंझ उठिते रहए। बाजलि- ''भगवानो दुष्टे छथि। जानि-जानि कऽ गरीबे लोककेँ सतबै छथिन। जहिना ओ करै छथिन तहिना ने हमहूँ सभ करै छियनि। ने एकोटा उपास करै छी आ ने एको दिन पूजा करै छियनि।''
पत्नीक बात सुनि मुस्की दैत सुरतिया बाजल- ''अच्छा आब भऽ गेल। जहिना ओ (भगवान) केलनि तहिना अहूँ करिते छियनि। सधम-बधम भऽ गेल।''

मछुआ सोसाइटी बनने किछु गोटे उठि-बैसल आ किछु गोटे गोपाल-खत्तामे चलि गेल। ओना सोलहो आना पोखरि सोसाइटीमे अखनो धरि नै गेल अछि। मुदा जे गेल ओकर मुआबजा तँ पोखरिबलाकेँ नै भेटल। सोसाइटी बनने नव पानिदार मालिकक जन्म जरूर भऽ गेल। किएक तँ एक गोटेक हाथमे अंचल भरिक पोखरि आबि गेल। जइसँ पर्याप्त उत्पादित पूँजी हाथ लगि गेलै। संग-संग सरकारी खजानाक लूट सेहो शुरू भेल। मनमाना ढंगसँ सोसाइटीक सचिव आ सरकारी तंत्र मिल कऽ गामक अमूल्य पूँजी लुटब शुरू केलक।

ओइ सोसाइटीसँ एकटा पोखरि आ एकटा खानगी पोखरि डेढ़ हजार सलियाना किस्तपर फुदना माछ पोसैले लेलक। सोसाइटीबला पोखरिक महार, बिनु देखरेख भेने, ढहि-ढुहि कऽ सहीट भऽ गेल छलै। मुदा रामधनबला पोखरिक महार नीक मुँह कान बना जीबत छै।
शुरूहे अखाढ़मे फुदना एकटा बेपारीसँ गंगाक जीरा कीन सैरातबला पोखरिमे देलक। आ दोसर पोखरिमे तमुरियाक हेचरीसँ कीन कऽ आनि देने रहए। गंगाक जीरा रोहू, नैन, भाकुर रहै आ तमुरियाक जीरा सिल्वर काफ रहए। सिल्बर काफ साले भरिमे दू-दू, तीन-तीन किलोक भऽ जाइत छै जखनकि रोहू, नैन तँ कम बढ़ै छै मुदा भाकुरक बाढ़ि अधिक होइ छै। तीनू जीरा मिला कऽ दै छै। पानिक सतह हिसाबसँ तीनू माछ रहै छै तँए तीनू मिला कऽ देल जाइ छै।
शुरू अखाढ़ेमे जे आद्रामे बरखा भेल रहै ओइमे दुनू पोखरि भरि गेल रहए। पोखरिक पानि आ जीराक सुतरब देख दुनू परानी फुदनाक मन चपचप करैत रहए जे भगवान दुख हेरलनि। कहुना-कहुना तँ बीस हजारसँ उपरेक आमदनी हएत। जहिना खूब फड़ल आमक गाछी, खूब उपजल खेत आ खूब दुधगर गाए बियेलासँ खुशी किसानकेँ होइत तहिना फुदनो दुनू परानीकेँ मनमे होय। जइसँ दुनू परानी बेरा-बेरी तीन-तीन बेर पोखरिक घाटपर

घंटा-घंटा भरि बैस माछक बच्चाकेँ एम्हरसँ ओम्हर हेलैत देखए। घरपर अबैक मने ने होय।

माछक कारोवारसँ फुदनाक परिवार पहिलेसँ जुड़ल। मखान खड़ड़ब, माछ मारि बेचब परिवारक जीबिका रहए। तीन सलिया रौदी भेने फुदना कंठी लऽ लेलक। माछक रोजगार कोन जे माछ खाएबो छोड़ि देलक। जे माछक गंध पहिने नीक लगै, आब जी ओकिऐ लगै छै। गामक कीर्तन मंडलीमे शामिल भऽ अष्टयाम, नवाहमे कीर्तन करैले सेहो जाए लगल आ भनडारा सेहो पुरए लगल। लाट लगने एक हाथ हारमोनियम, ढोलक बजौनाइ सेहो सीख लेलक। पाछु-पाछु कीर्तन गबैत-गबैत गेनाइयो सीख लेलक। दाढ़ीयो-केश बढ़ा लेलक आ पतलखरीक चानन सेहो करए लगल। समेओ संग देलकै। नव रोजगार ठाढ़ भेल। कीर्तन मंडलीक सट्टा सेहो हुअए लगलै। काजो हल्लुक आ प्रतिष्ठाक संग-संग खेनाइयो नीक भेटै आ पाइयोक आमदनी नीक भऽ गेलै। मुदा घरवाली सीतिया साकठे रहलि। जहिना माछक विन्यास बनबैमे सितिया लूरिगर तहिना खाइयोमे जीबिलाहि। गामक छौड़ा सभ आ जनीजातियो सभ ओकरा बगुला भगत कहै। घरमे एक्केटा थारी-लोटा रहए। जहीमे फुदनो खाए आ सितियो। एते बात जरूर रहै जे कहियो फुदना घरवालीकेँ माछ खाइसँ मनाही नै केलक। फुदना देखबो करै जे नैहरसँ सनेसमे माछे अबै छै। नहियो-नहियो तँ तीन-चारि खेप मासमे अबिये जाइ छै। सितियाक पिता माछक कारवारी रहए। पोखरियोबला सभसँ आ मधेपुरोक बेपारीसँ माछ कीन-कीन आनए आ नफ्फा लगा कऽ गामे-गामे घुमि कऽ बेच लिअए। जइसँ नीक कमाइ होय। खेत-पथार तँ नै कीनलक मुदा नीक जकाँ गुजरो करैए आ घरो बनौने रहए।

एक दिन फुदनाक सार टुनटुनमा दू किलोक अंडाएल रोहू नेने एलै। नमहर-नमहर कुट्टिया काटि सितिया माछ तरए लगल। माछक सुगंधसँ

फुदनाक मन मचकी जकाँ डोलए लगल। जहिना शरीरमे पुरना रोग समए पाबि पुन: जगि जाइत तहिना फुदनोकेँ भेल। गरदनिसँ कंठी निकालि लाचारीक मुस्की दैत पत्नीकेँ कहलक- ''दूटा कुट्टिया आ चूड़ा भूजि कऽ नेने आउ?''

पतिक बात सुनि व्यंग करैत सितिया बाजलि- ''तीन सालमे कते घाटा भेल से बुझै छिऐ। रोहू माछ खेनिहारकेँ कहियो आँखिक ज्योति कमै छै। बुढ़ाढ़ियो तक ओहिना चक-चक देखैत रहैए। अखन चुल्हि तरसँ केना उठब। घरमे चूड़ा नै अछि। दोकानसँ अधा किलो नेने आउ। ताबे हम अंडाकेँ तरै छी।''

जहिना चोरकेँ गरपर रूपैया देखने देहमे तेजी आबि जाइ छै तहिना फुदनोकेँ आबि गेल। जेबीसँ दसटकही निकालि दोकान गेल। सात रूपैयामे अधा किलो चूड़ा कीन कऽ आबि चुल्हिये लग बैस पत्नीकेँ कहलक- ''ताबे एकटा लाउ।''

सितियाक इच्छा रहबे करै। अनेरे दुनू परानी दू दिशाह भेल छी। जइसँ अनेरे सदिकाल रक्का-टोकी होइत रहैए। तरल अंडा आ चूड़ाक भूजा सितिया पतिकेँ देलक। जहिना कोनो वस्तु अधिक दिनक बाद भेटलासँ आनन्द अबैत तहिना फुदनाकेँ माछ-चूड़ा खाइमे आनन्द आबए लगल।

फुदना सासुर गेल। ससुरक घरमे धड़ैनपर एकटा छोटका घुमौआ जाल सैंत कऽ राखल देखलक। जाल देख मनमे एलै जे अनेरे ई जाल रखले-रखले दुरि भऽ जाएत तइसँ नीक जे नेने जाय। छोटका सारकेँ जाल उताड़ि देखबैले कहलक। जाल देख फुदना मांगि गाम नेने आएल। गाममे ककरो बुझले नै रहै आ ने ककरो लग बजबे कएल। ओजार देख फुदना तरे-तर खुशी रहए। तेसरे-चारिमे दिनसँ ओ पोखरि सभमे साँझू पहरकेँ चोरा-चोरा माछ मारए लगल। अपनो खाए आ उगरै तँ बेचियो लिअए। पोखरिबला सभ धपबए लगल। होइत-होइत एक दिन पकड़ा गेल। तत्काल तँ पोखरिबला किछु नै कहलकै मुदा जाल छीन लेलकै। दोसर दिन भोरे

पोखरिबला पनचैती बैसौलक। पूर्वासायक जरूरते ने रहै किएक तँ जाले गबाह रहए। पंच सभ पच्चीस बेर कान पकड़ि कऽ उठै-बैठैले आ एक सए रूपैया दंड केलक। मुदा जाल घुमा देलकै। आंगन अबिते पत्नी मुँहे काने खुब दुतकारलक। पत्नीक बातसँ फुदनाकेँ जानसँ उपर ग्लानि भेल। कान पकड़ि बाजल- ''आइ दिनसँ कहियो एहेन काज नै करब।''
पतिक बात सुनि सितिया अपन हँसुलि दैत कहलक- ''लिअ, एकरा बन्हकी लगा एक-दूटा पोखिर माछ पोसैले बनोबस कऽ लिअ। अपन कारोवार रहत जते मन हएत खेबो करब आ गुजरो करब।''

दिवाली दिनक घनघोर बर्खासँ सैरातबला पोखरिक माछ दहा गेल। बाधक पानिक सलाढ़ पोखरिमे लगि गेलै। बरखा छुटला बाद दुनू परानी फुदना टार्चक हाथे माछ देखए गेल। पोखरिक सलाढ़ देख फुदनाकेँ बघजर लगि गेलै। बकार बन्न भऽ गेलै। दुनू हाथ माथपर लऽ महारपर बैस रहल। टार्च नेने सितिया घाटपर जाए बारलक तँ एक्कोटा माछ नजरिपर पड़बे ने केलै। माछ नै देख सकदम भऽ गेल। मने मन सोचए लगल जे सभ केलहा डूबि गेल। मुदा गलती अपनो भेल जे महारकेँ बन्हलौं नै। जँ मोटगर आड़ियो जकाँ मुँहकेँ बान्हि देने रहितिऐ तँ एहेन दिन नै देखतौं। मुदा सके कोन। जे चलि गेल ओ फेर घुरि कऽ थोड़े आओत। घुरि कऽ पति लग आबि चुपचाप ठाढ़ भऽ गेलि। फुदना सोचै जे लोक कमा कऽ स्त्रीकेँ गहना-जेबर कीन-कीन दैत अछि आ हम एहेन करमघट्ट छी जे जेहो गहना छलै सेहो पानिमे बोहा देलिऐ। एक तँ माछ भासल तइपर सँ हँसुलियो चलि गेल। किछु बजबे ने करैत। पतिकेँ देख सितिया बाजलि- ''मत्थाहाथ देलासँ थोड़े माछ घुरि आओत। तखन तँ आगू की करब से सोचू। चलू ओहू पोखरिकेँ देखिऐ जे ओहो भसि गेल आकि बचल अछि।'' मने-मन फुदना सोचए जे हमर बाजब उचित नै हएत। किएक तँ जनी-जाति बेटोसँ पैघ गहनाकेँ बुझैत अछि। तँए वएह कि बजैए सएह सुनी। आगू-आगू टार्च नेने सितिया आ पाछु-पाछु चुपचाप फुदना दोसर पोखरि

देखए विदा भेल।

पोखरिक चारू महार घूमि कऽ देख मुस्की दैत सितिया बाजलि- “जीरा सँ जे किछु आमदनी होइत से नै भेल। एक्को पोखरि जँ बाँचि गेल तँ अहीसँ दुनू पोखरि अबाद भऽ जाएत।”
पत्नीक बात सुनि फुदना बाजल- “पहिने तँ भेल जे जहिना ओ पोखरि दहा गेल तहिना इहो दहा गेल हएत। मुदा भगवान रछ रखलनि जे एकटा बँचल अछि। तते ने जीरा सुतरल अछि जे एकटाकेँ के कहए जे एकटा आरो पोखरि भऽ जाएत तेकरो अबादि लेब। जते छेहर बच्चा रहै छै ओते बेसी बाढ़ि होइ छै।”
फुदनाक बात सुनि सितियाक मनमे एकटा नव विचार जगलै। मने-मन सोचए लगल जे भने दहार भऽ गेलै। कोनो कि हमरेटा पोखरि दहाएल एहेन-एहेन कते गोटेक दहाएल हेतै। आब की कोनो सोसाइटियेबला आकि पोखरियेबला थोड़े अगधाएत। तेहन पूँजी (जीरा) अछि जे चीजबला सभ माने पोखरिबला सभ खुशामद करए आओत। सस्तेमे दोसरो पोखरि हाथ लगि जाएत। भगवान जहन दइपर होइ छथिन तँ एहिना ने छप्पर फाँड़ि कऽ दै छथिन। बाजलि- “गलती अपनो सबहक भेल जे पोखरिक मुँह मजगूतसँ नै बान्हि देलिऐ। जँ से बान्हल रहैत तँ एहेन दिन थोड़े देखितौं। काल्हि भोरे पाँचटा टल्लाबला जन कऽ कऽ मजगूतसँ मुँह बान्हि देबै। अखन कातिके छी बहुत समए अछि। बैशाख जेठमे मछहरि हएत। भने पोखरि उपो-उप कऽ भरि गेल।”
पत्नीक बात सुनि फुदना बाजल- “जँए एते पूँजी लगेलौं तँए थोड़े आरो लगा देबै। दू मन खैर आनि कऽ सेहो दइये देबै। ओना देखै छिऐ जे कते गोरे खादो दइए। मुदा अपना तँ ओते ओकाइत नइए। ऐ साल कहुना-कहुना कऽ लिअ। अगिला सालसँ नीक जकाँ करब। कोनो की अग्गह-बिग्गह पोखरिए जोतलासँ थोड़े होइ छै जतबे करब नीक जकाँ करब।”

कालीपूजा समितिक सदस्य होइक नाते भोला भोरेसँ स्थानक काजमे जुटल रहए। केना नै जुटैत? जे परिवारसँ उठि समाजक काजकेँ अपन काज बुझैत अछि ओ केना ओकरा छोड़ि सकैत अछि। जहिना ब्रह्मक अंश जीव होइत तहिना ने व्यक्ति समाजक अंग छी। स्थानक काजक दुआरे जलखैयो करए भोला घरपर नै आएल। नहेबो नै केलक। हाथ-पाएर धोय खेलक आ पुन: विदा होइत पत्नीकेँ कहलक- ''हमर कोनो ठेकान नै अछि तँए मालो-जाल आ पावनियोक सभ ओरियान कऽ लेब।''

पानि-बिहाड़ि जखन आएल तखन भोला आ मंगल बृन्दावनक रासक आगूमे ठाढ़ भऽ हियासि-हियासि देखै जे कतौ कोनो गड़बड़ी तँ नै भऽ रहल अछि। मुदा तेहेन भयंकर रूपमे पानि-बिहाड़ि आएल जे मनक सभ विचार सभकेँ मनेमे सड़ि गेल। मंचक घटना सम्हारि भोला घरपर आबि बीयाक बिरार जा देखलक तँ निराश भऽ गेल। आमदनीक आशा टुटि गेलै।

जहिना भोला छोट किसान तहिना छोट कारोवारियो। पनरहे कट्ठा आँट-पेटक किसान भोला। मुदा दुनू परानी एहेन मेहनती जे सात गोटेक परिवार हँसी-खुशीसँ चलबैत रहए। ओना चारिटा बच्चा लिधुरिया रहै मुदा जेठका बारह बर्खक बेटा बलदेब मिड़ल स्कूलमे पढ़बो करै आ घर-गिरहस्तीक काजमे संगो-साथ दैत रहए। स्कूलोक दशा तेनाहे सन। पाँच सए विद्यार्थीक स्कूलमे तीनिटा शिक्षक। तहूमे एक गोटे नेतागिरिये करैत। पढ़बै-लिखबैसँ ओते मतलब नै जते ऑफिसक दौड़-बरहा रहए। सिर्फ लोकेक काजे ऑफिस नै जाए, बलकि स्टाफो (सरकारी पदाधिकारी) सबहक काज करै। जइसँ आमदनियो नीक आ पैघ लोकक बीच बैस समयो गुदस होय। स्कूलसँ ओतबे मतलब जे मासो दिनक हाजरी बना दरमाहा उठबै। समाजमे ककरो किछु कहैक साहसे ने होय। थाना-बहानासँ लऽ कऽ कोट-कचहरी धरिक धुड़फन्दा लोक, तँए कियो आँखि केना उठा सकैत अछि तहूमे सरकारी पाट्रीक नेतागिरी करैत रहए।

स्कूलक ढील-ढालसँ भोला खुशिये रहए। किएक तँ बलदेब माल-जालक पूरा भार उठा नेने रहए। कुट्टी काटब, खाइले देब, पानि पियाएब, घर-बहार करब, थैर खर्ड़ब, गोबर उठाएब बलदेवक बान्हल डयूटि रहए। ऐ लेल ने पिताकेँ अढ़बैक जरूरत आ ने कोनो चिन्ता रहनि। मुदा तँए की बलदेव पढ़ै नै। जरूर पढ़ै। भरि दिन ने माल-जालक नेकरम करै मुदा बारह घंटाक राति तँ बचै। दोसरि साँझ होइते भोला मुस्तैज भऽ धिया-पूता लग बैस नजरि रखै। पढ़ैमे बलदेव ओते चन्सगर नै, रहबो केना करितै? जखन स्कूलेकेँ केन्सर धेने तहन हाथ-पाएर कते क्रियाशील रहत। मुदा तँए कि बलदेव सोलहन्नी भुसकौले रहै, सेहो नै रहए। इमानदारीक छह घंटाक मेहनतसँ कियो इंजीनियर तँ कियो डॉक्टर, कियो वकील, तँ कियो प्रोफेसर बनि जाइत अछि तँ तीन घंटाक मेहनतसँ बलदेव कियए ने पास करत। साले-साल क्लास टपिते रहए। भोलो खुशी, किएक तँ बच्चेमे बाबाक मुँहे सुनने रहै जे- 'उत्तम खेती'। नोकरी आ गुलामीमे कि अन्तर छै। कमा कऽ जिनगी जीबैक लूरि जँ भऽ जाए तँ ऐसँ बेसीक जरूरते की। जहिना राजतंत्रमे रजेक बेटा राजा होइत तहिना ने प्रजातंत्रोमे मंत्रियेक बेटा मंत्री, हाकिमेक बेटा ने हाकिम बनत। तइले आनक सेहन्ता सेहन्ता नै तँ आरो की भऽ सकै छै।

पनरहे कट्ठा खेत रहितो भोला गामक किसानक गिनतीमे अबैत। खेती करैक अपन ढंग रहए। खाली बरसातेक मौसममे धानक खेती करै बाकी समैमे तरकारीक खेती करै। ओना बरसातोक मौसममे पाँचो कट्ठा चौमासमे तरकारिये उपजबै। बाकी दसो कट्ठामे कतिका धान करै। पिताक अमलदारीमे ओइ दसो कट्ठामे रोहनिया मरूआ बीया पाड़ि मरूआ रोपे आ मरूआ काटि अगहनी धान रोपे। मुदा विसवासू खेती नै रहए। गोटे साल पचता पानि भेने मरूआ बीया बुढ़हा जाय तँ लगतोमे डॉड़ लगि जाय। गोटे साल बेसी बरखा होय तँ दहाइये जाय। किएक तँ मरूआ पनिसहू नै

होइत अछि मुदा जै साल समगम समए होइ तै साल दसो कट्ठामे दस मन मरूआ भऽ जाय। मरूआकेँ किसान पवित्र अन्न मानैत अछि किएक तँ ओहिमे सूरा-फाड़ा नै लगैत अछि। ओनो आन-आन पावनिमे मरूआ अशुद्ध अन्न मानल जाइत अछि मुदा जितिया पावनिमे शुद्ध भऽ जाइत अछि। जहिना कुमारि कन्या वियाहमे पवित्र मानल जाइत अछि मुदा चुमौनमे बालो-बच्चावाली पवित्र बनि जाइत अछि तहिना अन्नमे मरूओ अछि। पावनिक जोड़ो मनुक्खे जकाँ अछि जहिना कुमार वर-कन्याक वियाहक संग-संग दोती- वर-कन्याक वियाह सेहो होइते अछि, तहिना मरूआक रोटी आ साग चाहे माछक मिलानसँ जितिया पावनि होइत अछि। ओना आन-आन पावनिमे तीनू- मरूआ, साग आ माछ बर्जित अछि। धानोक वएह हालत होय। जै साल रौदी होय तै साल मरहन्ना भऽ जाइ आ जै साल बेसी बर्खा होय तै साल दहा जाय। समगम समए भेने दसो कट्ठामे दस मन धानो भऽ जाय। अन्नक खेतीकेँ भोलाक पिता जुआ बुझि खेतियो बदललक आ बीयाक कारोबार बढ़ौलक। ओना रामझिमनी, झिमनी, भट्टा, मेरिचाइ, सजमनि, धेरा, कदीमा, सागक बीया तँ अपने बना लिअए मुदा कोबीक बीया बनाओल नै होय। हाटो-बजारमे कोबीक गोट्टा बीया नै बिकाइत रहए। एकबेर हरिहर क्षेत्रक मेला गेल तँ हाँजीपुरमे कोवीक गोट्टा बीया बिकाइत देखलक। दोकानदार लग बैस कोबी बीयाक भाँज बुझए लगल। गिरहस्त दोकानदार रघुनीकेँ माने भोलाक पिताकेँ कोवी बीया बनबैक लूरि बता देलक। नीक किस्म बुझि रघुनी सभ कथूक बीया कीन लेलक। बीया कीनलाक बाद दोकानदार ‘‘लक्ष्मी सीड’’ कम्पनीक नाओंसँ पाँचटा पोस्ट-कार्ड दैत कहलक जे जै चीजक बीया कीनैक हुअए ओकर नाओं आ वजन लिख कऽ पठा देब। ऐठामसँ हम पार्सल पठा देब। रघुनीक जिनगीमे नव मोड़ आएल। ओइ सालसँ बीयाक कारोवार करए लगल। पिताक संग-संग भोलो सीख लेलक। अपनो तरकारी खेती आ बीयोक कारोवार, करए लगल। कृषि मंत्री आ प्रधानमंत्री शास्त्री जीक नेतृत्वमे खेतीमे हरित क्रान्तिक कार्यक्रम बनल।

कार्यक्रम बनैक कारण रहै देशक भुख मेटेबाक लेल अमेरिकासँ गहूम कर्ज लेब। औझका जकाँ ओइ समए लोको माने जनसंख्यो नै रहै मुदा तैयो पेट भरैक उपाए नै रहए। जै देखक माटिक जोड़ा दुनियाँक कोनो कोनमे नै छै, श्रमशक्ति भरपुर छै, मौसम अनुकूल छै, कते लाजिमी बात थिक जे ओइ देशक लोक अन्न बिना मरै। जे बात शास्त्रीयो जी आ जगजीवनो बाबू बुझि "जय-जवान, जय किसानक" नारा देलनि। खाली नरे टा नै देलनि खेतीक लेल योजना बना क्रियान्वित केलनि।

अदौसँ अबैत खेतीमे नव जागरण भेल। हरक जगह ट्रेक्टर, करीनक जगह दमकल-बोरिंगक संग-संग नव-नव औजार किसान तक पहुँचल। नव-नव बीयाक अनुसंधान भेल। कृषिक महत्व बढ़ने शिक्षाक विकास भेल। उपजाक लेल रासायनिक खाद, कीट-नाशक इत्यादिक उपयोग शुरू भेल। जइसँ खेतीक उत्पादनमे आश्चर्यजनक वृद्धि भेल। देशक किसानमे नव चेतनाक सृजन भेल।

भारत सनक देशमे जते आ जै गतिये विकास हेबाक चाहियेक से नै भेल। ओना जै राज्यक सरकारोक नजरि आ किसानोक नजरि खेती दिस बढ़ल ओ जरूर विकास प्रक्रियाकेँ पकड़ने रहल। मुदा जै राज्यमे से नै भेल ओइ राज्यक कृषि पुन: ठमकि गेल। ओना मिथिलांचलक संग आरो-आरो संकट छै। जइसँ विकासक प्रक्रिया आगू बढ़ैक कोन बात, ठमकैक कोन बात जे पाछुए मुँहे ससरए लगल। जेकर कारण छलैक बाढ़िक विभीषिका। एहेन-एहेन पहाड़ी धार सभ अछि जे खाली पानियेसँ नाश नै करैत बलकि खेतक माटि काटि-काटि नव-नव धारो बनबैत अछि आ उपजाउ माटिकेँ सेहो भसा-भसा बालुसँ भरैत अछि। जइसँ खेतक उर्वराशक्तिये चौपट कऽ दैत अछि। नव धार बनने गामो घर उजड़ि जाइत अछि। खेत-पथार सेहो नष्ट भऽ जाइत अछि तँए जरूरी अछि धारक ऐ उपद्रबकेँ नियंत्रित करब।

जाधरि से नै हएत ताधरि विसवासू खेती मात्र कल्पना बनि रहत। पचास-साठि वर्ष पूर्व कोसीक पुलमे फाटक लगा दुनू दिस माने पूवो आ पछिमो नहरक योजना बनल। मुदा अखनो धरि जै रूपे ओकर उपयोग हेबाक चाहियेक से नै बनि सकल अछि तेकर अतिरिक्तो सरकारीक उदासीनताक चलैत एहेन बेबस्था बनि गेल अछि जे कोसिये इलाका दहाइत अिछ।

ओना कोसीक पुवरियो आ पछबरियो मुख्य नहर बनि गेल। ओइसँ सखो नहरि सभ सोलहन्नी तँ नै मुदा थोड़-थाड़ सेहो बनि गेल। मुख्य नहरक भीतर सीमेंट ईंटाक सेहो जोड़ाइ भेल। मुदा बनौनिहारक माने ठीकेदारक बदनियतीसँ तेहन काज भेल जे जहाँ-तहाँ ढहि-ढहि नहरिकेँ भरि देने अछि। नहरक मुख्य बहाव बन्न भेने आ बाढ़िक प्रकोपसँ मुख्य नहर जहाँ-तहाँ टूटितो अछि। साले-साल मरम्मतो होइत अछि आ टूटितो अछि। मुदा तैयो थोड़-थाड़ लाभ किसानकेँ होइते अछि जतऽ जतऽ पानिक सुविधा उपलब्ध अछि ओइ-ओइ इलाकाक किसानक जिनगीमे क्रान्तिकारी बदलावक संभावना बनि गेल अछि। मुदा सरकारी-तंत्रक चलैत जत्ते लाभ हेबाक चाहिये से नै भऽ पबैत अछि। ओना साखा नहरि पूर्णरूपेण तैयारो नै भेल अछि। तहूसँ दुर्भाग्य ई भेल जे पैछला साल कुसहामे पूबरिया बान्ह टूटने पूबरिया इलाका तँ नाश भइये गेल जे नहरक रूपे-रेखा चौपट भऽ गेल। जइसँ पूर्वते स्थिति बनि गेल अछि।
कोसिये नहरि जकाँ बोरिंग-दमकलक योजनाक दशा सेहो अछि छोट किसानक लेल नब्बे प्रतिशत सवसिडीमे बोरिंग आ तिहाइ सवसिडीमे दमकल देब शुरू भेल। मुदा सीमित दायरामे योजना समटा गेल। जइसँ गामक पाँचसँ दस प्रतिशत खेत धरि पानि पहुँचैक सुविधा भेल। मुदा व्यापारीक चालिसँ घटिया बोरिंगक पाइप आ घटिया दमकल किसानक हाथ आएल। जे तीन-साल बीतैत-बीतैत सभ बिगड़ि गेल। ने एक्कोटा बोरिंग काजक रहल आ ने दमकल। मुदा बैंकक कर्जक बोझ किसानपर लदले रहल। जे चक्रवृद्धिक दरसँ सहित मूलधनक असुलीमे किसानक सिर्फ गाइये-महींस नै

खेतो-पथार बिकैत अछि। खेतीक उपजाक कोन बात जे लोकक खेतो हाथसँ नकलि रहल अछि।

जहिना किसान पानि ले पहिने लल छलै तहिना फेर भऽ गेल। पानिक चलैक खेतियो पाछुए मुँहे ससरि गेल। जे किसान अपन पूँजी लगा बोरिंग-दमकल कीन खेती करै छथि ओ खादक बेपारी आ बीया बेपारीक हाथक खेलौना बनि गेल छथि। घटिया खाद आ घटिया बीयाक चलैत खेतीक हालत आरो चौपट भऽ गेल। गोटे साल नीक खाद भेटल तँ बीया लऽ कऽ डूबि गेल नै जँ बीया नीक भेटल तँ खाद लऽ कऽ डूबि गेल। खेती चौपट भेने गामक लोक पड़ा कऽ पंजाब, दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता चलि गेल जइसँ गामक-गाम सून भऽ गेल अछि। ओना पाछु घुमि कऽ देखलापर नै बुझि पड़ैत जे मिथिलांचलमे पहिनेसँ कम जनसंख्या अखन अछि मुदा श्रमशक्तिक अभाव जरूर भऽ गेल अछि। तहिना उपजाउ माटिक सेहो ह्रास भऽ गेल अछि। नीक माटि बालुमे बदलि गेल अछि। सोलहन्नी तँ नै मुदा आधा नै तँ तिहाइक दशा जरूर बिगड़ि गेल अछि जे गाम कहियो अन्नक बखारी छल ओ आइ राजस्थान सदृश्य मरूभूमि बनि गेल अछि। गाछ-वृक्षसँ सजल गाम वस्त्र-विहिन नारी सदृश्य बेनग्न भऽ गेल अछि। ओना जेहो बचल अछि तहूमे पानिक अभाव, खाद बीयाक गड़बड़ीसँ नरकंकाल जकाँ गामक सक्ल बनि गेल अछि।

सभ किछु होइतो भोला चैनसँ गृहस्ती करैत अछि। आ गृहस्तक गौरवसँ मंडित अछि। किएक तँ जते खेतबला पड़ाइन केलक ओ अपन खेत-पथार तँ नै लऽ कऽ गेलाह। खेत तँ गामेमे रहल। भोला सन-सन खेतिहरकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। अखन धरि जे बटाइ प्रथा छल ओइमे सुधार भेल। पहिने बटेदारकेँ उपजाक आधा वँटबारा होइत छलै। जइसँ बटेदार सदितकाल काल घाटामे रहैत छलाह। घाटाक खेती देख बटेदार बटेदारी छोड़ि बोइने-बुत्ताकेँ नीक बुझए लगल। मुदा बटाइमे सुधार भेने मनखपक

चलनि भेल। धानक वँटबारा पनरह किलो प्रति कट्ठा जमीन बलाक हिस्सा आ बाकी बटेदारक। तहिना गहूमोक उपजाक वँटबारा हुअए लगल अछि। तरकारीक खेती सेहो तहिना हुअए लगल अछि।

दुइये बेकती भोला, तँए कते खेती करत। मुदा तैयो एक बीघा बटाइ खेती करैत अछि। ओना अपनो पनरह कट्ठा खेत छैहे। ओइ एक बीघा खेतमे गरमा धान काटि अगते गहूमक खेती कऽ लैत अछि। गहूमो अगते भऽ जाइ छै। गहूम काटि खेत पटा ''पूसा बैशाखी'' खेरही कऽ लैत अछि। यएह ओकर फसल चक्र छै। सालो भरि मारि-धुसि खेबो करैत अछि आ खेतबलाकेँ सेहो दै अछि।

तरकारीक खेतीमे सेहो सुधार केलक। आब ओ हाँजीपुरक बीया मंगाएब छोड़ि हाइब्रीड बीया नामी-गामी कम्पनी सभसँ मंगा अपनो खेती करैत अछि आ बीहनि सेहो बेचैत अछि। जइसँ सभ दिना काज सेहो रहै छै आ आमदनियो बढ़िया होइ छै।

गाममे काली पूजाक (मेलाक) अंदाजसँ पनरह घुरमे बीया पाड़लक। किएक तँ इलाकाक लोक भोलाक बीयाकेँ जनैत अछि। सभ जनैत अछि जे भोलाक बीया सन कोनो बेपारीक बीया नै होइ छै। नीक बीया रहितो आन बेपारीसँ सस्तेमे बेचबो करैत अछि। मुदा ऐबेर बेचाराकेँ गरदनि कट्टी भऽ गेल। तेहन बर्खा भेल जे चौमासमे दनार फोड़ि देलकै जइसँ सौंसे बीरार माटिसँ भरि गेलै। बीयाक दशा देख भोलाकेँ ठकमूड़ी लगि गेलै। मुदा निराश नै भेल। एते आशा रहबे करै जे एक-बेरक ने नष्ट भेल। पुन: पाड़ि लेब।

दोकानक छिजानैत देख दुनू परानी ललितक मन विचलित भऽ गेल। साल भरिक मेहनतकेँ नष्ट होइत देख सुरजी तुरूछि कऽ पतिकेँ कहलक- ''जेकर बनरी सएह नचाबे। कोन दुरमतिया अहाँकेँ कपारपर चढ़ि गेल जे

मिठाइक दोकान केलौं। हलुआइक काज जे आन जाति करत तँ एहिना हेतै किने।''

एक तँ पूँजी नष्ट होइत ललित देखए दोसर पत्नीक गनजन सुनि मन थरथर कँपए लगलै। कडुआएल मने उत्तर देलक- ''कोनो काज कोनो जातिक बान्हल नै छै। जेकरा जे लुरि रहतै से कियए ने ओ काज करत कोनो की अपनेटा बेरबाद भेल आिक सबहक भेलै।''

''सबहक कियए ने हेतै। गौआँ सभ ने अकड़रह केलक। बिना काली महरानीकेँ बाक् नेने गाममे पूजाक कियए ठानि देलक। पहिने भगताकेँ बजा पूजा ढाड़ि बाक् लऽ लैत। से तँ केलक नै। देवीयो-दुर्गाकेँ हँसिये-ठट्ठा बुझलक। तँए ने एना भेलै।''

पत्नीक बात सुनि ललित मुँह बन्न कऽ चुप्पे रहल।

चारि साल पहिने ललित नोकरी करैले बिराटनगर गेल। हलुआइक दोकानमे नोकरी भेलै। पहिने तँ कोनो मिठाइ बनबैक लूरि नै रहै मुदा रहैत-रहैत सभ मिठाइयो आ आनो-आनो चीज बनबैक लूरि भऽ गेलै। दू सालक बाद मनमे एलै जे जखन सभ लूरि भऽ गेल तखन अनेरे कियए नोकरी करै छी। से नै तँ गामेमे जलखैयो आ मिठाइयोक दोकान खोलब। गाम आबि सोचलक तँ मनमे एलै जे ऐठाम मिठाइ दोकान चलैबला नै अछि। कहियो-काल कियो-कियो मिठाइ कीनैए। तइमे दोकान थोड़े चलत। एकटा चाहक दोकान छै ओकरो देखै छिऐ जे सभ दिन उधारीक दुआरे गहिकी सभसँ झगड़े होइत रहै छै। फेर घुरि कऽ विराटेनगर जाइक मन भेलै। मुदा नोकरी करैबला परिवार सबहक दशा देख मन नै मानलकै। मासे-मास रूपैया पठबैत रहू मुदा घरक कोनो ठर-ठेकान नै। ने धिया-पूता स्कूल जाइए आ ने घरेवाली कोनो काज करैए। अपने गाममे रहब तँ सभ कुछ सुढ़िया जाएत। गामोमे की काजक कमी छै। फेर मनमे उठलै जे आब तँ गामोमे तते भोज-काज होइए जे उठो काज करब तैयो परदेशसँ बेसिये कमा लेब। पहिने जकाँ कि आब लोक थोड़े भतभोज करैए। आब तँ

हढ़ियो-सुढ़ियो बरयातीकेँ पूड़ी-मिठाइ खुआबैए आ श्राद्धोक भोज मिठाइऐेक होइ छै। हजार-हजार, डेढ़-डेढ़ हजार रूपैया मिठाइ बनौनिहार लै छै। वियाह ने सिजीनल होइए। मुदा सराधक तँ कोनो सिजीन नै होइ छै। दोसरो काज ठाढ़ कऽ लेब आ जै दिन काज भेटत तै दिन काजो कऽ लेब। पच्चीसो-पचास काज सालमे पकड़ाएत तैयो पच्चीस-पचास हजारक कमाइ भइये जाएत। पावनियो आ भारो-दौरमे लोक मिठाइक चलैन केने जा रहल अछि। अखन शुरूआती समए अछि। तँए अबूह बुझि पड़ैत अछि। मुदा जखन काज शुरू करब तखन अनेरे काज बढ़ए लगत। पहिलुका जकाँ तँ आब लोकक हालतो गड़बड़ नहिये छै। पहिने लोककेँ भरि पेट खेनाइयो ने होइ छलै मुदा आब तँ से बात नै रहलै। जेना-जेना हालत सुधरतै तेना-तेना खेनाइयो-पीनाइ आ आनो-आन काज सुधरतै। तहूमे की सभ गाममे थोड़े हलुवाइ अछि। जखने लोक बुझत आकि आनो-आनो गामबला सभ आबि-आबि काज करैले कहत। सोचैत-विचारैत ललित, गामेमे रहि, अपन कारोवार करैक निर्णए कऽ लेलक।

निर्णए करिते मिठाइ बनबैक साँचो आ बरतनो-जात कीन लेलक। पाँचे दिनक उपरान्त फागुनक लगन पकड़ा गेलै। बाप रे एहेन लगन कोनो साल नै भेल छलैक। पनरह-सोलहटा वियाहक दिन। बूढ़-ठेंर सभ उठि जाएत तहूमे की कोनो सरकारी नोकरी छी जे जते दरमाहा तइँ भेल ओतबे रहत। जखने काजक धुमसाही हेतै तखने कारीगरक कमाइ बढ़तै। जहिना कम वस्तु रहने दाम बढ़ैत अिछ आ बेसी वस्तु भेने दाम घटैत अछि तहिना ने कम काज रहने रेट कमत आ बेसी काज भेने रेट बढ़त। टोटल-नफा मिला कऽ ने मासक हिसाब हएत।

सोलहो लगनमे ललित चौबीस हजार कमाएल। तइपर सँ अपूछ खेनाइ-पीनाइ संग किछु-किछु उगरहला समानो भेलै। मासो दिन व्यस्त रहल। मुदा कमाइक संग एकटा रस्तो भेटलै। ओ ई जे अंतिम लगनक काज

करए गेल तँ घरवारी घरपर नै। बरियातीक भोजन बनबै आ खुअबै-पियबैक बरतन भाड़ापर आनए गेल रहए। गप-सप्प करैक समए ललितकेँ भेटल। गप-सप्पक क्रममे बुझलक जे दू हजार रूपैया बरतन-बासनक भाड़ा लगत। बाजल तँ किछु नै ललित मुदा मने-मन हिसाब बैसौलक जे जते दू दिनक मेहनतमे कमाएब ओते तँ वरतने-वासन कमाइत अछि। मनमे जँचि गेलै। सभ बरतनक हिसाब जोड़लक तँ बुझि पड़लै जे जते पूँजी लगाएब ओते नमहर काजो माने कारोवार हएत। तत्काल तँ ओते पूँजियो ने अछि आ समान रखैक जगहो नै अछि। से नै तँ पहिने एकटा घर बनाएब जरूरी अछि। जखन घर भऽ जाएत तखन बहुत नमहर नै एक बरियाती जोकर समान माने बरतन-बासन कीन लेब। फेर बुझल जेतैक, जेना-जेना पूँजी होइत जाएत तेना-तेना कारोवार बढ़बैत जाएब। नव कारोवार देख मनमे खुशी एलै। खुशी अबिते नजरि दौड़लै। तेसर इजोतक लेल जेनरेटर। मुदा टेन्ट आ जेनरेटरक लेल समांग सेहो लागत। असकरूआ बुते केना हएत। अपने कारीगरी करब कि ओइमे बरदाएब। सेचैत-सोचैत मन घुरियाए लगलै। फेर मनमे एलै जे टेन्ट-जेनरेटरमे ने अपन रहब जरूरी अछि मुदा बरतनमे तँ से नै हएत। गिनती कऽ कऽ देबै आ लेबै।

साल भरिक उत्तर ललित दोसरो काज ठाढ़ कऽ लेलक। दोहरी कमाइ हुअए लगलै। ललितक आमदनी आ काज देख गामक लोक कहए लगलै जे ललितक कपार जगि गेलै। केना नै जगैत? सुतल कपार माने बुद्धिकेँ जगौलासँ ने जगैत अछि। जँ से नै जगाएब तँ ओहिना ने सुतल रहैत अछि।

दोहरी कारोवार भेलाक उपरान्तो ललितकेँ किछु समए बैसारी बुझि पड़लै। बैसारीक लेल सोचए लगल जे एकरा केना काजमे आनब। अपना खेत-पथार नै। मुदा संयोग नीक रहल। एक गोटेक माए दुखित पड़ल। बेचाराकेँ लहेरियासराय इलाज करबए जाइक रहैक। ललितक आमदनी

गामक सभ बुझए लगल। अपन लाचारी देखबैत मकशूदन ललितकेँ कहलक- "भाय, बिपत्तिमे पड़ि गेल छी। माएकेँ तेहेन बीमारी भऽ गेल अछि जे लहेरियासराय लऽ जाए पड़त। तमोरियाक डॉक्टर सहाएबकेँ बीमारी जँचैक मशीने ने छन्हि। तँए कहलनि जे बिना लहेरियासराय गेने इलाज नै भऽ सकत।"

मकशूदनक बात सुनि ललित पुछलक- "हमरा की कहै छी। जँ देहक काज हुअए तँ अखने संगे चलब।"

"नै, समांगक काज नै अछि। ललित भाय, रूपैयाक जरूरत अछि।"

फेर ओंगरीसँ देखबैत मकशूदन बाजल- "अहाँक घरे लगहक दसो कट्ठा खेत भरना दऽ देब। पनरह हजार रूपैया सम्हारि दिअ।"

मकशूदनक मजवूरी देख ललितक मनमे एलै जे बीमारी, आ बच्चा सभकेँ पढ़ैक लेल रिनो-पैइच कऽ कऽ मदति करक चाही। एहेन समैक मदति सिर्फ लेने-देन नै, घरमक काज सेहो छी। घरसँ पनरहो हजार रूपैया निकालि दऽ देलक। रूपैया लैत मकशूदन बाजल- "भाय, कागज बना लाए?"

कागजक नाओं सुनि ललित अवाक् भऽ गेल। मने-मन सोचए लगल जे कोनो की केबाला लेलहुँहेँ जे लिखा-पढ़ी कराएब। भरनाक लेल लिखा-पढ़ीक कोन जरूरत छै। समाजमे कतबो छल-प्रपंच किएक ने आबि गेल होइ मुदा समाज तँ समाजे छी। अखनो एहेन-एहेन लोक छथि जे दोसराक बच्चाकेँ पढ़ैमे, इलाजमे, माए-बापक क्रिया-कर्ममे ओहुना मदति कऽ दै छथि तहन कागज-पत्तर बनबैक कोन जरूरत अछि। जँ मनमे बेइमानी औतनि तँ नै देताह। मुदा जमीन तँ हमरो कब्जामे रहत। समाज कि ऐ बातकेँ नै बुझताह। मुदा अविश्वासो केना कएल जाए? जँ समाजमे बेइमानी-शैतानी बढ़ि गेल अछि तँ इहो बात तँ छिपल नै अछि जे कतेको गोटे माइयो-बापकेँ खाइ-पीबैमे तकलीफ करैत अछि। भीन कऽ दैत अछि ई बेइमानी-इमानदारी तँ आदमी-आदमीक बीचक विचार अछि। ऐ नजरिसँ देखलापर मकशूदनकेँ बेइमान कहबनि। अपन मुँहक अहार काटि कऽ माइक इलाज

करबए जा रहल छथि। जै आदमीमे एते इमानदारी छन्हि हुनकासँ कागज बनाएब जरूरी नै अछि। अखनो गाममे ढेरो भरना एहेन अछि जेकर लिखा-पढ़ी नै भेल अछि। जँ बेइमानिये करताह तँ अपन माए-पितियाइन बुझि बुझब जे समाज सेवा केलौं। जँ रजिष्ट्री कराएब तँ अधा खर्च हमरो हएत आ अधा हुनको हेतनि। बेर-बेगरतामे एक पाइक महत्व एक लाखक बराबरि भऽ जाइत अछि। सोचि-बिचारि ललित बाजल- ''भाय, अखन अहाँ माएकेँ इलाज करबियनु। लिखा-पढ़ीक जरूरत नै अछि।''

हाथमे रूपैया अबिते मकशूदनक मनमे विसवास अिाब गेल जे माइक इलाज हेबे करत। काजोक एहेन संयोग होइत अछि जे नीक हेबाक रहत तँ कोनो काजमे बाधा नै हएत। मुदा अधला हेबाक रहत तँ अनेरो काज सभमे ओझरी लगैत रहत।

दस कट्ठा जमीन हाथमे एने ललितक मन खुशीसँ गद्-गद् भऽ गेल। तै बीच सुरजी आबि बाजलि- ''जँ फेनो रूपैया मांगथि तँ फेन देबनि।''
पत्नीक बात सुनि ललितक मन आरो खुशी भऽ गेल। पुछलक- ''कियए?''
''अहाँ खेत-पथारक बात नै ने बुझै छिऐ। कनिये-कनिये देने जखैन बेसी भऽ जाएत तखैन कबल्ले लिखा लेब।''
पत्नीक बात सुनि एकाएक ललितक मनमे अस्सी मन पानि पड़ि गेल। बुदबुदाएल- ''देखू ऐ दुनियाँक रीति। एक घर कानै एक घर गीत।''
तुरूछि कऽ बाजल- ''जखैन किछु बुझैक हएत तखैन पुछि लेब। जाउ, अंगना-घरक काज देखू गऽ।''

सुरजी चलि गेलि। ललित सोचए लगल जे पहिने अनका खेतमे काज करै छलौं। जे अढ़ा दैत छल से कऽ दैत छेलिऐ। काजक ने लुरि अछि मुदा काजेक लुरि भेने तँ लोक गिरहस्त नै ने बनि जाइत अछि। गिरहस्तीक लेल काजक लुरिक संग कोन समए कोन चीजक खेती हएत। ततबे नै,

केहेन समए भेने केहेन खेती कएल जाएत। कतेको प्रश्न अछि। फेर मनमे एलै जे खेत तँ बड़ सुन्दर अछि। घर लग अछि आ बगलमे बोरिंगो छै। तँए एहेन खेती करब जे अधिकसँ अधिक उपजा हएत। बारह मासक साल होइ छै। साल भरिपर मौसम बदलैत अछि। जहिना-जहिना मौसम बदलत तहिना-तहिना खेतियो माने फसलो बदलब। नीक हएत जे पहिने गरमा धानक खेती कऽ लेब। जे चारि मासमे भऽ जाएत। धान काटि अल्लुक खेती कऽ लेब। जे तीन मासमे भऽ जाएत। अल्लु उखाड़ि पियौज कऽ लेब। जे बैशाख अबैत-अबैत भऽ जाएत। कमो खेत रहने बेसी उपजा हएत। संगे अपनो तँ कारोवारिये छी तँए बेसी समयो नै बँचैत अिछ।

गाममे मेला भेने ललित मिठाइक बढ़ियाँ दोकान केलक। मुदा झाँट-पानिक दुआरे बनाओल मिठाइयो आ सामानो सभ दुइर भऽ गेलै। मुदा सबहक क्षति देख मन घबड़ाएल नै। कोनो की कर्जा लऽ कऽ दोकान केने छी जे एक दिस सभ नोकसान भेल आ दोसर दिस महाजन कपारपर चढ़त। भरि राति दोकानेक चीज-बौस सम्हारैमे दुनू परानीकँ लगि गेल।

पाँच दिन पहिने ललित दसो कट्ठामे कुफरी अलंकार अल्लु रोपने रहए। समस्तीपुरसँ अल्लूक बीया अनने रहए। भोरमे जखैन खेत देखलक तँ ठहुन भरि पानि खेतमे देख निराश भऽ गेल। एक तँ दोकानक पूँजी नष्ट भऽ गेल दोसर खेतीयो डूबि गेल। सभ अल्लू माटिये तरमे सड़ि जाएत। तते पानि लगल अछि जे मास दिन जोतैइयो जोकर नै हएत जे दोहराइयो कऽ रोपि लेब। खेतसँ आिब पेटकान लाधि देलक। मनमे एलै, छह मासक कमाइ डूबि गेल। मुदा फेर हूबा केलक जे अही सभ संग कि अपनो परान गमा लेब। जहिना सभकँ भेल तहिना हमरो भेल। जहिना सभ दिन काटत तहिना हमहूँ काटब। तइले अनेरे सोगा कऽ कि हएत।

५

भरि राति जहिना गामक लोक जगले रहि गेल तहिना मेलो देखिनिहार आ दोकानो-दौरी केनिहार। मुदा अपनापर सभकेँ अचरज लगै जे राति सुतैबला छी ओइमे केना दिनोसँ बेसी काज केलौं। अन्हार गुप-गुप राति ने इजोत ने चान, अमावसियो ओहन जइमे धनधोर करिया बादल आिब आरो अन्हार कऽ देने रहए। आध पहर रातियेसँ दोकानोदार आ नाचो-तमाशाबला भगए लगल। ओना गाड़ी-सवारीक अभाव गाममे मुदा मोबाइल जे ने करए। राति-राती कतएसँ ओते गाड़ी आबि भोर होइत-होइत कदबा कएल खेत जकाँ बना देलक। सभ (गौओं-अनगौओं) अपन-अपन जान बँचल देख खुशी रहए। अपन-अपन समांगक गिनती करैकाल कियो-कियो खुशियो रहै आ कियो-कियो, समांगसँ आनो-आनचीज नोकसान देख, कनियेसँ बेसी धरि दुखियो रहए। मुदा दैवक डांगक देबाक शक्ति नै बुझि अपन-अपन भाग्यकेँ कोसि कने-मने व्यथितो रहए। चारू पार्टी (बृन्दावनक रास, मुजफ्फरपुरक नाट्क, मेल-फीमेल कौव्वाली आ महिसोथाक मलिनिया नाच) अधा-अधा रूपैया पहिने सट्टे करबैकाल लऽ लेने रहए, तँए कमिटिक भेँट करब जरूरी नै बुझि अनरोखे डेरा तोड़ी लेलक। तेकर कारणो रहै, कारण रहै जे स्टेजबला घटना सभ देख नै रहै, जइसँ सभकेँ थर-थरी पैसल। जखने घटना भेल तखने थाना-बाहानक दौड़ शुरू हएत। जखने दौड़ शुरू हएत तखने जे फाँटिपर पड़त, जहलक हवा खाएत। तइमे नीक जे कने थाले-खिचार ने छै मुदा जान बँचत तँ देहेक साबुनसँ कपड़ो खीचि लेब। मुदा ऐठामसँ पड़ाएबे नीक हएत। तहिना बनियो-बेकाल सेचै जे एक तँ पूँजी गेल तइपर सँ अनेरे कोट-कचहरीमे जे बरदाएब तइमे नीक जे बँचल रहब तँ कमा लेब।

अनगौआँक तँ अनगौआँ बुझए मुदा गामक गिनतीमे देवनाथ आ जोगिनदर कमेत रहए। रातिये दुनू मरि गेल आकि पड़ा गेल, ई बात मंगलक मनकेँ झकझोड़ैत रहए। गाममे जते पाहुन-परक आएल रहथि सबहक मनमे यएह होइत रहनि जे कतऽ एलौं तँ कतौ नै। तइपर सँ जहिना झाँट-पानिमे गाछपर रहैबला चिड़ै-चुनमुनीक होइत तहिना पहुनाइ करैबला पाहुन सबहक होइत रहनि। मुदा-कहथिन ककरा। लोक अंगना-घरक टाट-फड़क सोझराओत कि......।

ओना जेठक रौदमे तपल धरतीपर बिहड़िया हाल भेने जेहन सुगंध माटिसँ नकलैत तेहन नै। कोन दोग देने जाड़ो चलि आएल सेहो ने कियो देखलक।

जहिना जवानीक आगमनसँ शरीर सभ अंगक सौन्दर्य छिटका अपना दिस आकर्षित करैत तहिना धरतीयोक पियाससँ जरल मन छाँक भरि पानि पीबते शक्ति पाबि आलिंगनक लेल दुनू बाँहि पसारि अपन प्रियतमक (किसान) बारहमासा सुनए लगल। पियाससँ सुखाइत किसानोक कंठ पानि पीबते तृप्त भऽ प्रियतम दिस आँखि उठा-उठा देखए लगल। देखए लगल जे अखन धरि पियाससँ मरनासन्न भऽ गेल छलीह एकाएक कते शक्तिवान भऽ गेलीह। नव सृजनक शक्तिसँ लऽ कऽ सुखाएल-जरल जजात तकमे जान फूकि देलनि।

अखन धरि गामक किसान धानक खेतीमे बँटाएल छथि। बटेबाक अनेको कारणमे दू कारण प्रमुख अछि। पहिल, खेतक बनाबटि आ मनक सोच। साबिकसँ अबैत खेती (उपजबैक ढंग) आ आधुनिक वैज्ञानिक ढंग।

जइठाम अदौसँ अबैत खेती रासायनिक खाद, समुचित पानि (सिंचाई), उन्नत बीयाक संग नव तकनीकक (लूरिक) अभावमे पाछुए मुँहे लुढ़कैत गेल अछि ओकरा आगू मुँहे केना बढ़ौल जाए, मूल प्रश्न सबहक सोझमे ठाढ़ अछि। देशक बढ़ैत जनसंख्या की खाएत? ई विचार तँ खेतक मालिक

किसानेकेँ करए पड़तनि। मुदा किसानो तँ खेतकेँ मात्र खतियाने, दस्ताबेज धरि बुझै छथि। ऐहना परिस्थितिमे हमरा की करए पड़त, ई ने बुझए पड़तनि। नै बुझैक अनेको कारणमे एकटा इहो कारण अछि जे चाहे जे कोनो प्रचार माध्यम् हुअए वा प्रवचन देनिहार होथि, ओ अखन धरि किसानक स्वरूपकेँ झाँपि कऽ रखने छथि। जेकरा इमानदारीसँ किसानक बीच रखए पड़त। जँ से नै तँ छह सए बर्ख पूर्व (जे लगभग पच्चीसो पीढ़ी होएत) तुलसीदास "विनय पत्रिका" मे समाजक दशा देखलनि- *"खेती न किसान को।"* जँ किसानक खेती मरि जाए, व्यापारीक व्यापर तँ भिखमंगोकेँ के भीख दऽ सकत। जँ भिखारीकेँ भीख नै भेटनि तँ पार्वती महादेव सन भिखमंगाक संग काए दिन रहती?

प्रश्न मात्र खेतीयेक नै जीवनक छी। आजुक जेहन समए भऽ गेल अछि ओइ अनुकूल जाधरि अपनाकेँ नै बना समैक संग नै चलि सकब ताधरि बच्चा जकाँ लुढ़कि-लुढ़कि खसिते रहब। मुदा समैक संगो हएब धीया-पूताक खेल नै। धरतीपर सभसँ श्रेष्ठ जीव मनुष्य होइतो एक-दोसरसँ करोड़ो कोस हटल अछि। जहिना विशाल बोनमे लाखो-करोड़ो प्रकारक गाछ-विरीछसँ लऽ कऽ झाड़-झूड़ होइत माटिमे सटल घास धरि रहैत अछि तहिना मनुक्खोक बोनमे अछि। एक दिस अज्ञानक अंतिम छोड़पर रहनिहार तँ दोसर दिस चानपर बास करैबला। मुदा जहिना बनमे छोटसँ छोट जन्तुसँ लऽ कऽ बाघ, सिंह, हाथी धरिक भोजनो आ रहैयोक बेबस्था अछि तहिना ने मनुक्खोक बोनमे अछि। अनेको तरहक बाट आ विचार अदौसँ अबैत रहल अछि। एक पुरूष-नारीक संबंधकेँ धरमक श्रेणीमे रखनिहार अपनहि नियम तोड़ि नियामक छथि। जिनकर देखा-देखी बढ़िते गेल अछि। जइसँ सदतिकाल नव-नव विचारक संग नव-नव बाट बनि रहल अछि। मुदा जहिना समुद्रमे अमूल्य रत्नसँ लऽ कऽ घोंघा-सितुवा-धरि आनन्दसँ रहैत अछि तहिना ने समाजोमे अछि। मुदा तँए सघन खरहोरिमे चलनिहार नै छथि? जरूर छथि। भले जै खरहोरिमे एक इंच खाली जगह नै रहनौ

खढ़क गाछकेँ दुनू हाथे बिहिया-बिहिया एक भागसँ दोसर भाग पाड़ करिते छथि। आजुक सघन जिनगी एहने भऽ गेल अछि। मुदा प्रश्न उठैत जे सीना तानि आगू मुँहे बढ़ल जाय वा पीठ देखा पाछु मुँहे ससरल जाय?

जाधरि सीना तानि आगू मुँहे नै बढ़ब ताधरि असीम शान्तक गाछ लग केना पहुँचब? जँ से नै पहुँचब तँ अनेरे कियए अन्न-पानिकेँ दुरि करै छिऐ। जिनगीक सफलताक सर्टिफिकेट सिर्फ कठिन साधनासँ भेटै छै नै कि कट-पीस रास्तासँ। जाधरि असीम शान्ति नै पाएब ताधरि जिनगीक सफलताक सर्टिफिकेट केना पाबि सकब?

मेघौन मेघ रहने सूर्य अबेर कऽ ओछानि छोड़लनि। मुदा तँए की अकासमे उड़ब चिड़ै बिसरि गेल। गोसाँइकेँ जगबैत ढोलिया गोवर्धन पूजा करबए गाम दिस बिदा भेल। मनमे खुशी। किएक नै खुशी रहतै खेत जोतिनिहार किसानसँ लऽ कऽ गाए पोसिनिहार किसान धरि ऐठाम जेबाक छै। आमदनियो नमहर तँ मेहनतो कम नै। गोवर्धन पूजाक लेले कियो करमी लत्तिक भाँजमे तँ कियो ठेका-गरदामीक ओरियानमे जुटल। कियो दोकानसँ रंग आनि गरदामी रंगैत तँ कियो रंग-विरंगक गाछ-पात-बुट्टीक ओिरयान सोनहाउनले करैत। स्त्रीगण सभ भिने बताहि भऽ गोधन महराजक संग-संग धान-मड़ूआक बखारी बनबैत। मुदा मनमे एकटा शंका रहबे करनि जे ढोलिया ने पहिने आबि जाय। बेचाराकेँ सौंसे गाम घूमए पड़तै आकि कोनो हमरे ऐठाम भरि दिन रहने पेट भरतै। कियो खरिहान बनबै पाछु बेहाल तँ कियो जन-बोनिहार मिल चाह-पान करैत।

ओना समैक फेरमे पड़ि कियो भोरमे सुप नै बजौलनि। हो न हो दरिदरा कहीं निर्विरोध सालो भरिक लेल फेर ने रहि जाय। मुदा साले साल भगौनौ (सुप बजा) तँ रहिये जाइत अछि तखन भगै की अछि। जहिना परशुराम क्षत्रियकेँ मेटबैक लेल दर्जनो बेर सामुहिक हत्या केलनि मुदा तैयो

क्षत्रिय रहिये गेलाह। हो न हो कहीं एहने जिबठगर दरिदरोहो ने तँ अछि।

झाँट-पानिक चलैत काली-पूजाक जे दशा भेल ओ तँ भेबे कएल जे, कतेको समस्या समाजक बीच आनि कऽ रखि देलक। जहिना घर बन्हैकाल एक-एक वस्तुक ओरियान करए पड़ैत अछि तहिना खसलो करै पड़ैत अछि।

साइकिल उठा मंगल काली-पूजा समिति बैसार करैले समितिक सदस्य ऐठाम विदा भेल। सभसँ पहिने देवनाथ ऐठाम पहुँचल। देवनाथकेँ दरबज्जापर नै देख जोरसँ बाजल- "देवनाथ जी, यौ देवनाथ जी......।"
मुदा कारकौआ धरिक कुचरब नै सुनि पुन: दोहरौलक- "देवनाथ जी, यौ देवनाथ जी.....।"
देवनाथक नाओं सुनि पत्नी आंगनसँ निकलि, बजलीह- "काल्हि बेरू पहर जे घरपर सँ निकललाह ओ अखन धरि कहाँ एलाहेँ। कालिये स्थानमे छथि।"

काली स्थानक नाओं सुनि मंगल चौंकि गेल। बाजल- "कालिये स्थानमे बैसार छी, यएह कहैले आएल रहौं। जँ ओतै हेता तँ भेँटे भऽ जेता नै जँ घरपर आिब जाथि तँ कहि देबनि।"
कहि जोगिनदर ऐठाम विदा भेल। ओकरो पता नै बीसो सदस्य ऐठाम पहुँच मंगल घरपर आबि साइकिल रखि काली स्थान विदा भेल।

एका-एकी एगारह गोटे (सदस्य) काली स्थान पहुँचल। गप-सप्प शुरू भेल। जीबछ मंगलकेँ पुछलक- "सिंहेसर भाय किएए ने आएल?"
जीबछक बात सुनि मंगल बाजल- "ओ तँ घरोपर नै रहए। घुरऽ लगलौं तँ माए भेटली। पुछलियनि तँ वएह कहलनि जे आध पहर रातिये खाटपर टाँगि दुखाकेँ डाक्टर ऐठीन लऽ गेलै।"

“की भेलै दुखा कक्काकेँ?”

“वएह कहलनि जे ओहो मेले देखए गेल रहए। जखैन पानि-बिहाड़ि आएल तँ घरपर पड़ाएल। रास्तामे एकटा घुच्चीमे पाएर पड़ि गेलै आकि खसि पड़ल। ठेहुने टुटि गेलै।”

ठेहुन टूटब सुनि अपसोच करैत जीबछ बाजल- “बाप रे जुलुम भऽ गेलै। बेचाराकेँ ने अपना बेटा छै, बेटियो सासुरेमे रहै छै। घरोवाली हफ्सीयेक रोगी छन्हि। हे भगवान तहूँ बड़ अन्यायी छह। जेकरा दुख दै छहक ओकरा मुरदा जकाँ एक-एकटा चेरा चढ़बिते रहै छह। हम तँ बुझबे ने केलिऐ नै तँ इलाजक खर्च मदैत कऽ दैतिऐ। नीक केलक सिंहेसर। एहेन-एहेन बेरपर जे बेटा समाजमे ठाढ़ हएत वएह ने भारत माताक सपूतक प्रथम श्रेणीमे आओत।”

मंगल- “जीबछ भाय, हमहूँ तँ बहुत नहिये पढ़ने छी, किएक तँ स्कूल-कओलेजमे लोक परीक्षा पास करैले पढ़ैए। ज्ञानक पाठ तँ जिनगीमे उतड़ला बाद पढ़ैए। जे काज सिंहेश्वर भाय करए गेल ओ आइक समाजक मांग छी। मुदा एहेन-एहेन काज करैबला बेटा अदौसँ जन्म लैत आएल अछि। समाजक मुख्य सेवा (समाज सेवाक मुख्य कर्तव्य)मे एहेन-एहेन काजकेँ राखल गेल अछि। जे सेवा अदौसँ चन्दनक गाछ जकाँ जन्म लऽ बढ़ैत-बढ़ैत फुलाइत-फड़ैत रहल ओ ठमकि कऽ मौला रहल अछि, सुखि रहल अछि। सुखिये नै रहल अछि ऐ गतिए सुखि रहल अछि जे किछु दिनक उत्तर कोकणि कऽ उकैन जाएत।”

मंगलक बात जीबछ दुनू कान ठाढ़ कऽ, आँखि चियारि, मुँह बाबि सुनैत। जहिना मुँहसँ नीक वस्तु खेलापर मन खुशी होइत, कानसँ सुनलापर मुँहकेँ हँसेबो करैत आ हृदेकेँ गुदगुदेबो करैत तहिना आँखि विवेकक आँखिकेँ सेवा करए पहुँच जाइत। तहिना जीबछोकेँ मंगल बातसँ भेल। बाजल- “भाँइमे कियो दादा हुअए। बच्चा भलहिं उमेरमे बेसी छियह मुदा भऽ गेलियह बगुरक गाछ जकाँ जे जहियेसँ जनमलियह तहियेसँ काँट-कुशमे गना

गेलियह। गिनतियेक हिसाबसँ काजो भेल। मुदा आब समाजक एक खूटाक रूपमे जिनगी बिताएब। जै स्थानकेँ भगवान (झाँट-पानि) मारि देलखिन ओइ स्थानपर बैसल छी। (श्मशान महादेवक साधना स्थल।) अपना सबहक पुरना (पौराणिक राजा जनक) राजा केहेन छेलखिन।''
मंगल बाजल- ''ओ ओहन राजा छेलखिन जे एक-एक आदमीक जिनगीमे पेसल छेलखिन। एते सिपाही रखने छलाह जे समैक हिसाबसँ कियो आगू-पाछू नै हुअए तइपर सदिकाल आँखि गड़ौने रहैत छलाह।''
''हुनकर फुलवारी केहेन छलनि?''
''हुनकर फुलवारीक जोड़ा दुनियाँक कोनो राजा नै लगा सकलाह। किछु राजा जरूर अपन धन, बल, जन लगौने छथि।''
''फुलवारीक गाछ सभ केहेन छै?''
''फुलवारीक बीचमे विवेकक गाछ छै। विवेकक बगलेमे मन, बुद्धिक गाछ छै। तेकर काते-कात सेवाक गाछ छै जे सदतिकाल हरीक हरियरीपर नजरि रखैत अछि।''

मंगलक बात सुनि भुवन बाजल- ''मंगल, काल्हि धरि समाजक जै काजमे लागल छेलौं, नीक आकि बेजाए, सम्पन्न भऽ गेल। अखन जे गाम तहस-नहस भऽ गेल अछि, पहिने ओकरा देखैक अछि। जखने झाँट आएल तखने किछु नै किछु सभकेँ झटनहि हएत। सतनाकेँ सेहो नहिये देखै छिऐ?''
''रस्ते कातमे ओकर जामुनक गाछ छलै सएह रस्तेपर खसि पड़लै। रस्ते बन्न भऽ गेल छै, तेकरे काटै-खोंटैले गेल।''
''निरधन कियए ने आएल?''
''ओकरा तँ आरो बड़का फेरा लागि गेलै। चारिये कट्ठा अपना खेत छै। जइमे कतिका धान केने अछि। गहींरगर खेत छै धान सुतैर गेलै। कालिये पूजा दुआरे पाकल धान खेतिमे लगौने रहल। एक तँ बौना धान दोसर उपरका खेत सबहक पानि ओलरि कऽ चलि गेल। निपुआंग धान डूबि

गेलै। पानियो बहैबला नहिये छै। तहूमे अगहनी धान तँ कनी डँटगरो होइ छै गरमा तँ गरमे छी।''

''झोलिया कियए ने आएल?''

''एक्केटा घर छै सेहो खसि पड़लै। घरक सभ किछु भीज गेल छै। ओकरे सम्हारैमे लागल अछि।''

एक्के बेर सभ बाजल- ''जतबे गोरे आएल ओतबे गोरे बिचारि लिअ। जे सभ नै आएल छथि हुनका सभकेँ कहि विचार बुझि लेब।''

साठिक दशक। किसानक बीच भारी भूमकम भेल। जहिना अनुकूल वातावरण बनने भारी बर्खा, भूमकम आ अन्हर-तुफान अबैत तहिना खेतपर ठाढ़ रहैबलाक बीच भेल। एक दिस आजादीक दिवाना गाम-गाम जन्म लऽ अंगेज भगौलक तँ दोसर दिस समाज सेवा करए आगू सेहो आएल। देश भक्त सिपाही पर्याप्त देशक भीतर तैनात भऽ गेलाह। अंग्रेज भगौलहा फलक गाछ सोझमे छलनि। केना नै दोसरो-तेसरो गाछ रोपैले तैयार होइतथि? दुनियाँक जते जीव-जन्तु अछि। सभ सुखसँ जिनगी बितबए चाहैत अछि। मनुष्य तँ सहजहि मनुष्य छथि, सभ जीवसँ उपर। ओ कि नै बुझै छथि जे प्रशान्त सुख पाबि लोक आध्यात्मिक पुरूष बनि सकै छथि। के नै चाहताह जे मातृभूमि स्वर्गोसँ सुन्दर बनै।

एक दिस जमीन प्रतिष्ठाक मूल आधार बनि चुकल अछि तँ दोसर दिस राजा-रजबारक अंत भेने मालगुजारीक शासन समाप्त होइतिक फल सोझमे आबि गेल। राजशाही अन्त भेने रसीदक माध्यमसँ औना-पौना दाममे जमीन बिकाए लगल। बकास्त जमीनक लड़ाइ गाम-गाम शुरू भेल। एक जबर्दस्त भूखण्डमे बटाइदारी आन्दोलन- 'जे जमीनकेँ जोते-कोड़े, ओ जमीनक मालिक छी'क नारा आकाशमे उठल। धरती अपन जीवनक लेल बलि मंगैत छथि, से भेल। सिकमी बटाइक कानून बनि लागू भेल। जतऽ बटेदार तैयार भेल ओतऽ बटाइदारी हक भेटल। जतऽ तैयार नै भेल ओतऽ

अखनो लटकले अछि। आम जमीन सभपर दसनामा संस्था सभ ठाढ़ हुअए लगल। स्कूल, अस्पताल बनए लगल। मनुष्यक मूल समस्या दिस जनमानसक नजरि दौड़ल। जइसँ तियाग भावनाक जन्म भेल। लोअर प्राइमरी स्कूलसँ लऽ कऽ मिड़ल, हाइ स्कूल धरि बनए लगल। गोटि-पङरा कओलेजो बनल। सरकारोक धियान शिक्षा दिस बढ़ल जइसँ पढ़ै-लिखैक वातावरण बनए लगल। तै बीच भूदान आन्दोलन सेहो शुरू भेल। दानकेँ धर्म बुझि जमीन दान हुअए लगल। गाम-गाम भूदान कमिटीक गठन भेल। जै गाममे कमिटी सक्रिय भऽ काज केलक ओइ गामक जमीन भूमिहीनक बीच आएल मुदा जै गाममे सक्रिय रूपमे काज नै भेल ओइठाम लड़ाइक अखड़ाहा बनल अछि। जै भूदान आन्दोलक उद्देश्य देशक छठम हिस्सा जमीन भूमिहीनक बीच आबै ओखनो सरकार चारि डिसमिल बासभूमि दैक शक्ति नै रखने अछि।

गामक लोक (किसान वर्ग)केँ पड़ाइन भेने गाममे रहि खेती केनिहारकेँ स्वर्ण-अवसर भेटल। जमीनोक रूप बदलल। प्रतिष्ठाक वस्तु बुझल जाइबला जमीन रूपैयामे बदलि गेल। बैंकक सूदिक हिसाबसँ जमीनक उपजा बुझल जाए लगल। उपजाक आधा बटाइदारी प्रथा ढील भेल। मनखप, पट्टा, मनहुन्डा इत्यादिक जन्म भेल। पनरह किलो कट्ठा धानक उपजा आ दससँ पनरह किलो कट्ठा गहूमक उपजा बटाए लगल।

कोसी नहरि आ नव-नव सड़क बनने चौक-चौराहाक संग-संग बोनिहारकेँ काजो बढ़ल। मुआबजाक रूपैया सेहो सहायक भेल। शिक्षा मित्रक बहाली संग एन.एच.डब्लू. सेहो किछु मदति केलक। सड़क बनने गाड़ी-सवारीक धंधा सेहो जन्म लेलक अछि।

मिथिलांचलमे एक नव वर्गक जन्म भेल किसान वर्ग। मुदा ऐ वर्गक क्षेत्र छिड़ियाएल अछि। हरित-क्रान्ति एने जमीनक माने खेतक भाग्य चमकल। मुदा जै रूपमे चमकबाक चाहिये तै रूपमे नै। जँ एक रूपमे चमकैत तँ

जहिना कहियो मिथिला दुनियाँक गुरू मानल जाइत छल तहिना पुन: प्रतिष्ठित भऽ जाइत। तइमे कमी अछि।

देशमे अखनौ कम क्षेत्र अछि जइमे मिथिलांचल एते इंजीनियर, डॉक्टर, वैज्ञानिक, साहित्यकार इत्यादि अछि। दुर्भाग्य ई जे ओ लोकनि मिथिला छोड़ि दुनियाँ भरिमे छिड़ियाएल छथि। बाध्यतो छन्हि, ने कल-कारखाना अछि जे इंजीनियर ओइमे काज करताह, ने स्वास्थ लेल समुचित जगह अछि जमिमे डॉक्टर अपन अँटाबेश करताह। ने विज्ञानक शोध संस्था अछि जइमे वैज्ञानिक अपन चमत्कार देखौताह आ ने पढ़ै-लिखैक समुचित बेबस्था अछि जइमे साहित्यकार अपन प्रतिभाकेँ निखारताह।

गंगा ब्रह्मपुत्र मैदानी इलाका रहैत मिथिलांचल अनेको नदीसँ सकबेधल अछि। नदियो ओहन-ओहन उपद्रबी अछि जे इलाकाक इलाकाकेँ सदतिकाल रूप बिगाड़िते रहैत अछि। लोकक जिनगी एहेन दुब्बर बनि गेल अछि जे जएह लोकनि मिथिलांचलमे ठाढ़ छथि ओ धन्यवादक पात्र छथि।

किसानवर्ग बनने जाति-वादक बंधन ढील भेल। कतेक एहेन धंधा (खेतीसँ लऽ कऽ लघु उद्योग धरि।) अछि जे खास जातिक सीमामे बान्हल छल ओ टूटि कोनो धंधा (पेशा) कोनो जाइतियेक बीच नै रहल। मुदा जहिना कोसीमे डूबल इलाका पुन: कहियो जागि चहटी रूपमे जन्म लैत आ पुन: ओइपर बसि मनुष्य पुन: पूर्वत गाम बना लैत, तहिना करैक जरूरत अछि। जाति पेशा बदलि जाति-बेबस्थाकेँ ढील जरूर केलक मुदा राजनीतिक कुचक्र समाजमे नव समस्याक रूपमे ठाढ़ भऽ विकासकेँ बाधित कऽ रहल अछि। अनेको तरहक नव-नव बाधा उपस्थित भऽ रहल अछि। मुदा तँए की मिथिला मरूभूमि भऽ गेल जे कर्मयोगी पैदा करब छोड़ि देलक। कथमपि नै।

सम्मिलित रूपमे तँ नै मुदा छिटफुट रूपमे एहनो-एहनो किसान छथि जे लाख आफत-आसमानीसँ मुकाबला करैत सोनाक स्तम्भ बनि चमकि रहला अछि। निश्चित क्षेत्र तँ निर्धारित नै कएल जा सकैत अछि, किएक तँ सीमा-विहिन अछि मुदा ऐ बातसँ नकारलो नै जा सकैत अछि जे खेतमे ओते धान उपजा रहला अछि जे जापानसँ मुकाबला करैक लेल ठाढ़ छथि। तहिना गहूमो, दालियोक अछि। अखनो हजारो ट्रक आम बाहर जाइत अछि। एक इलाकाक तरकारी दोसर इलाका जाइत अछि। हजारो ट्रक मसाला आन-आन राज्य जाइत अछि। एक इलाकाक दूध दोसर-तेसर इलाका धरि बिकाइत अछि।

अखन धरिक अनौपचारिक बैसक जे समाजमे होइत रहल अछि ओ प्रो. दयाबाबू आ पूर्व प्रो. कमलबाबूकँ एलासँ औपचारिक रूपमे बदलए लगल। काली स्थान पहुँचते कमलबाबू बजलाह- ‘‘अखन धरिक समाजक (गाम-गामक) इतिहास हराएल अछि ओकरा पहिने पकड़ू। तँए जरूरी अछि जे एकटा रजिष्टर कीन लिखित रूपमे काज करू।’’

कमलबाबू बात सुनि मंगल सोचलक जे लगले रजिष्टर कत’सँ आनब तँ आजुक बैठक कागजक पन्नेपर कऽ निचेनसँ रजिष्टर आनि ओइपर लिख देबै। तेकर कारण मनमे नचैत रहै जे दुनू गोटे (दयोबाबू आ कमलोबाबू) बेसीखान अँटकताह नै, जोरो केना करबनि। जँ जोरो करबनि तँ पट दे कहि देताह जे गाम-समाज अहाँक छी अपना ढंगसँ चलाउ। मुदा गामक लोक तेहन गड़ि-मुराह अछि जे धरमेक काज स्कूलो आ माइयो-बापक सेवाकँ कहताह आ अपने भरि दिन बैस झूठ-फूसमे समए बर्बाद कऽ समाजकँ तनो-भगन करैत रहताह। अन्यायक अखाड़ा समाज बनि गेल अछि। एहेन परिस्थितमे खाली ‘‘सामाजिक न्यायिक’’ नारा देलासँ समाज सुधरि जाएत। मुस्की दैत मंगल प्रो. दयाबाबूकँ कहलकनि- ‘‘श्री मान्, अपने तँ चारि साल पढ़ौने छी तँए अपनेपर अधिकार अछि जे जे नै बुझै

छी ओ अखनो पुछि सकै छी। मुदा बाबा (प्रो.कमलनाथ) कें किछु पुछैक अधिकार तँ नै अछि। भलहिं ओ अपने हमरा मनक सभ सवालक जबाब दऽ दथि।''

मंगलक पेटक बात जना कमलबाबू बुझिते रहथि तहिना बड़बड़ाए लगलाह- ''रौतुका घटना सुनि हृदए पाथरपर खसल एना जकाँ चूर-चूर भऽ गेल अछि....।

आँखिक नोर पोछैत पुन: बड़बड़ाए लगलाह- ''मुदा दोख ककर लगाओल जाएत। किछु दोखी अहूँ सभ छी जे वादमे कहब। अखन एतबे कहब जे कालचक्रकें रोकब असान नै। ई कालचक्र छल। तँए प्राश्चित कऽ लेब जरूरी अछि। दू मिनट सभ उठि हुनका लोकनिक क्षतिक स्मरण कऽ लिअ। रजिष्टर पहिल पाँतीमे शोक प्रस्ताव लिख काजकें आगू बढ़ाउ।''

शोक व्यक्त कऽ बैसते कमलबाबू पुछलखिन- ''समिति कते गोटेक बनौने छलौं?''

''एक्कैस गोटेक?''

''एक तरहक अछि। अखन कते गोटे छी?''

''एगारह गोटे।''

''आरो गोटे?''

''दू गोटे हराएले छथि, एगारह गोटे हाजिरे छी, आठ गोटे दोसर-दोसर जरूरी काजमे लागल छथि।''

''हूँ, रौतुका झाँट तँ सभकें झँटनहि हेतनि।'' कहि एकाएक किछु सोचैत पुन: बजलाह- ''बाउ मंगल आ अनुज दयाबाबू जहिना हम खुशीसँ जीवन-यापन कऽ रहल छी तहिना चाहब जे अहूँ सभ जीब ओहूसँ नीक जिनगीक बाट बना आगूक पीढ़िक लेल दिऐ।''

कमलबाबू बजिते रहथि आकि नेंगरा आ बौनो एक्केबेर बाजल- ''जहिना दया कक्का पढ़ल छथि तहिना मंगलो कओलेजक सीढ़ि होइत कोठरी तक

पहुँचल छथि मुदा हम सभ तँ जिनगी भरि कोदारिये किलासमे पढ़ैत रहलौं तँए..... ।''

ठहाका मारि उठि कऽ ठाढ़ होइत प्रोफेसर कमलनाथ समितिकेँ संबोधित करैत बजलाह- ''नेंगरा आ बौकूकेँ हमर बधाइ जे अपन सीमा देखलक। बाउ नेंगर आ बौकू, बधाइ ऐ दुआरे दुनू गोरेकेँ देलौं जे समाजक जबर्दस्त समस्याक जड़ि पकलौं। अपना समाजमे ई भारी समस्या अछि जे कियो अपने सीमा-सरहद नै बुझए चाहैत छथि, ओ धारक रेत जकाँ चलैत समैसँ केना जुटि सकताह। जहिना पानिक रेतमे ठाढ़ भेने अपनो जान अबग्रहमे रहै छै जे रेतमे खसि, भसिया कऽ मरि ने जाइ। तइठाम जँ कियो दस-बीस सेरक मोटरी माथपर रखने हुअए ओकर गति की ओइ रेतपर हेतै। तँए जहिना अट्टालिका बनबैकाल सभसँ पहिने ईंटाकेँ देख लेल जाइ छै, जँ से नै देखल जाएत तँ नकटेरहीपर जहिना सभ लड्डू होइत तहिना ने हएत।''

कमलबाबू बजिते रहथि कि दुनू गोटे नेंगरा आ बौका आँखिमे आँखि मिला हँसए लगल। आँखि उठा सभापर नजरि दौड़ौलनि। कियो गंभीर तँ कियो मुँह बाँबि बुझैक प्रयास करैत मुदा दुनूक हँसी हँसा देलकनि। मन पड़लनि हुगली नदी। अपना इलाकाक जते धार अछि ओ उत्तरसँ दछिन मुँहे बहैत अछि भलहिं गंगाक ओइ कातक दछिनेसँ उत्तर मुँहे बहैत हुअए। मुदा हुगली, जे समुद्रसँ जुड़ल अछि, सोलह घंटा एक दिशासँ दोसर दिशामे बहैत अछि आ आठ घंटा विपरीत दिशामे। तहिना बाबाक आत्मा आ कोदारि किलासमे पढ़निहारक आत्मा मिल नव परमात्माक मंदिर बना रहला अछि। शिवलिंग सदृश्य।

नेंगरा आ बौकू मुस्कियाइत मूड़ी निच्चाँ कऽ लेलक। दयाबाबू आ मंगलोकेँ गंभीर देख प्रो. कमलनाथ कहए लगलखिन- ''रौतुका घटना दुखद भेल। मुदा ओ तँ काल्हुक भेल। कालक तीन गति छै, बीतल (भूत) चलैत (वर्तमान) अबैबला (भविष्य) जे समए बीत गेल वएह समए वर्तमान आ

भविष्यक रास्ता देखबैत अछि। एक हिसाबे रौतुका घटना अहाँ सभकेँ एक सीमापर आनि कऽ छोड़ि देलक। ढंगसँ एकरा बुझैक जरूरत अछि।''
आँखि उठा मंगल पुछलखिन- ''कने सोझरा कऽ कहियौक?''
''देखू अपन समाजमे कतेको पावनि-तिहार अछि। नीको आ अधलो अछि। नीककेँ पकड़ि चलैक अछि। कोनो रातियेटा धर्मक काजमे समए बाधा उपस्थित केलक। एहेन बात नै अछि। परिवारो सभमे देखै छी जे पावनिक सभ ओरियान भेलाक उत्तर कोनो अप्रिय घटना घटलासँ पूजो-पाठ आ खाइयो-पीबैमे बाधा उपस्थित भऽ जाइत अछि। मुदा की देखै छिऐ? यएह ने देखै छिऐ जे पावनिक काजकेँ उसारि आगूमे उपस्थिति घटनामे लोक लगि जाइए। तहिना पारिवारिक पावनि नै बुझि सामाजिक बुझि सोग कम करू। एहेन-एहेन सामाजिक काज- कालीपूजा, दुर्गापूजा इत्यादि सभ गाममे होइते अछि सेहो बात नै अछि। कोनो-कोनो गाममे होइतो अछि कोनो-कोनोमे नहियो होइ छै। समाजक (गामक) लेल अनिवार्य नै अछि। मनक शान्तिक लेल होइत अछि। अखन अहाँ सभ ओइ सीमापर ठाढ़ छी जइठामसँ दूटा रास्ता फुटैत अछि। पहिल, अगिलो साल करब की नै? समाजक विचार देखए पड़त। ऐ प्रश्नपर समाज बँटा गेल छथि। अधिकांश लोकक मनमे ई हेतनि जे गाममे पूजा नै धारलक। तँए आगूओ नै हेबाक चाही। किछु गोटे एहनो हेताह जे चाहितो हेताह। प्रश्न उठैत अछि, जँ एहिना अगिलो साल हुअए, तहन? फेर प्रश्न उठैत अछि पूजा ओरियाने भरि रहल संकल्पित नै भेल। ओना ऐठाम दूटा विचार अबैत अछि, पहिल समाजक संकल्प आ दोसर पूजा प्रक्रिया शुरू होइत समैक संकल्प। जे नै भेल। तँए आगूक लेल विचारक मुद्दा बनि गेल अछि। फेर प्रश्न उठैत जे व्यक्तिगत रूपमे सभ घरे-घर वा मने-मन करिते छथि मुदा सामाजिको स्तरपर हएब जरूरी अछि। मुदा कोन रूपे हुअए ई विचारणीय प्रश्न अछि। अखन धरि जै तरहक सार्वजनिक मेलाक रूप रहल ओ आजुक माने वर्तमानक लेल कते नीक अछि, ऐपर विचार करए पड़त। पहिने कहि देलौं जे गामक इतिहास लिखल जाएत। जे अखन धरि रजे-रजबारक

सुरा-सुन्दरीसँ लऽ कऽ कहियो कहियो खेत-पथारले तँ कहियो मनोरंजनक लेल होइत रहल। एक राजा-रानी राजगद्दीक सुख भोगथि आ बाकि सभ सभ सीढ़ीपर ठाढ़ भऽ-भऽ एक-दोसरकेँ रोकबो करैत आ पाछु मुँहे धकेलबो करैत। यएह इतिहास अपना सबहक रहल अछि। तँए अपन समाजकेँ जते नीक रास्तासँ आगू लऽ जाय चाहब ओ अहाँ सबहक काज छी। मुदा समाज जकरा बुझै छिऐ ओ मनुष्यक समाज नै साबेक बोझ सदृश्य अछि। जहिना साबेक जौरसँ घर तँ बान्हल जाइत मुदा अपन नमहर बोझ बन्हैमे कते बदमासी करैत ओ तँ बन्हनिहारे सभ बुझैत हेताह। तहिना लोकोक अछि। एक दिस समटब दोसर दिस छिड़ियाएत आ दोसर दिस समटब तेसर दिस छिड़ियाएत। ऐमे ओहू बेचाराक दोख नै छै? कियो पेटक पाछु बौआ रहल अछि तँ कियो मलिकाना पाछू। मलिकाना केहेन तँ हम विधाता बनि बजै छी। अहाँकेँ आदेश मानै पड़त? वाह-वाह भाय, विधाता बनैसँ पहिने अपन रजिष्टर सार्वजनिक करू जे हमहूँ अपना समाजक इतिहास रजिष्टरमे लिख देखब जे कते गोटेक सवारी हवाइ जहाज छी, कते गोटेक ए.सी. कार आ कते गोटेकेँ चरणबाबूक टेक्सी। तँए जहिना अदौमे कोनो गाम जे बसल ओइमे पहिले पहिल- एक-दू-तीन चारि परिवार आएल। जे अखन देखते छी केहेन झमटगर भऽ गेल अछि तहिना असकरोक चिन्ता नै कऽ आगूक....।''

बिचहिमे बौकू बाजल- ''बाबा, छौड़ा सभ भोरे माछ पकड़ैले बाध दिस गेल से कनी ओकरा सभकेँ देखैक अछि जे माछे पाछु अपनो डूबल आकि बँचल आएल?''

बौकाक बात सुनि ठहाका मारि बाबा बजए लगलाह- ''बौकू, जिनगीमे सभसँ पैघ, सुख प्राप्त करब होइत अछि। जेकरा सुख भेट गेलै ओकरा भगवान भेट गेलखिन। मुदा सुख ककरा कहबै से अखैन नै कहबह। तोहूँ अगुताइल छह। एहेन समैमे तोरा रोकब उचित नै बुझै छी। मुदा एतबे बुझि लाए जे दुख भागब सुखक आएब बुझक।''

आँखि उठा मुस्की दैत दयानन्द पुछलखिन- ‘‘भाय सहाएब, इतिहास लिखैक विचार तँ देलखिन मुदा पैछला इतिहास बुझल छन्हि की नै, से कहाँ कहलियनि?’’

‘‘दयाबाबू, हरि अनंत हरि कथा अनंता। अखन जै समैमे सभ बैसल छी ओ बैसैक नै करैक समए छी। कते लोकक घर खसल हेतै, कतेकक माल-जाल नष्ट भेल हेतै, कतेकेँ हाथ-पाएर टूटल हेतै, एहेन समैमे हाथपर हाथ दऽ विचार करैक नै अछि। जतए जे नीक गर लगे ओतए ओइ गरे दलमलित भेल गामकेँ असथिर करू। सभ पड़ोसिये छी समयो बदलत। समुद्रसँ उठल केहनो बादल रहैत अछि मुदा ओहो रसे-रसे बदलिये जाइत अछि। तँए अंतिम बात यएह कहब जे आशाक संग जिनगीकेँ आगू मुँहे ठेलैत पहाड़पर चढ़ा अकासमे फेक दियौ।’’